PDF Compressor Free Version

इग्नू
जन जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
शिक्षा विद्यापीठ

BES-126
ज्ञान एवं पाठ्यचर्या

खण्ड

1

शिक्षा में ज्ञान

इकाई 1
ज्ञान की समझ 5

इकाई 2
जानने की प्रक्रिया 27

इकाई 3
ज्ञान पर शैक्षिक विचारक 44

इकाई 4
ज्ञान, समाज और शक्ति 59

PDF Compressor Free Version

विशेषज्ञ समिति

प्रोफेसर आई.के. बंसल (अध्यक्ष)
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद,
नई दिल्ली

प्रोफेसर श्रीधर वशिष्ठ
पूर्व कुलपति
लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ,
नई दिल्ली

प्रोफेसर परवीन सिंक्लेयर
पूर्व निदेशक,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
एवं प्रोफेसर, विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रोफेसर एजाज़ मसीह
शिक्षा संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

प्रोफेसर प्रत्यूश कुमार मंडल
डी.ई.एस.एस.एच.
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद,
नई दिल्ली

प्रोफेसर अंजु सहगल गुप्ता
मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

प्रोफेसर एन.के. दाश
निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

प्रोफेसर एम. सी. शर्मा
(कार्यक्रम समन्वयक–बी.एड.)
31 मार्च 2017 तक
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. गौरव सिंह
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

विशेष आमंत्रित सदस्य (शिक्षा विद्यापीठ के संकाय सदस्य)

प्रोफेसर डी. वेंकटेश्वरलू
प्रोफेसर अमिताव मिश्रा
सुश्री. पूनम भूषण
डॉ. आयशा कन्नाडी
डॉ. एम.वी. लक्ष्मी रेड्डी
डॉ. भारती डोगरा
डॉ. वंदना सिंह
डॉ. एलिज़ाबेथ कुरुविला
डॉ. निराधर डे

कार्यक्रम समन्वयक: प्रोफेसर सरोज पाण्डे एवं डॉ. गौरव सिंह, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम समन्वयक: डॉ. वंदना सिंह, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

खंड निर्माण दल

अनुवादक

इकाई 1 डॉ. वंदना सिंह
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली
(पाठ्यक्रम एम.ई.एस. 012 के खंड दो की इकाई 4 से रूपांतरित)

इकाई 2 डॉ. वंदना सिंह
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

इकाई 3 डॉ. शायनी दुग्गल
ए.आर.डी., इग्नू, नई दिल्ली

इकाई 4 सुश्री पूनम भूषण
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

विषयवस्तु संपादन

प्रोफेसर एजाज़ मसीह
शिक्षा संकाय,
जामिया मिलिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

डॉ. वंदना सिंह
शिक्षा विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

अनुवाद

डॉ. विशाल सूद
आई.सी.डी.ई.ओ.एल.,
हिमाचल प्रदेश
विश्वविद्यालय, शिमला

हिंदी भाषा पुनरीक्षण
डॉ. वंदना सिंह
शिक्षा विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. गौरव सिंह
शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू,
नई दिल्ली

सामग्री उत्पादन

प्रो. सरोज पाण्डेय
निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

श्री.एस.एस. वेंकटाचलम
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
इग्नू, नई दिल्ली

मार्च, 2018

© इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2018

ISBN-

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कृति का कोई भी अंश, मिमियोग्राफ या किसी भी अन्य रूप में, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी अन्य व्यक्ति द्वारा पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए इसके मैदानगढ़ी, नई दिल्ली 110068 स्थित कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है।

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक शिक्षा विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। लेजर टाइप सेटिंग : राजश्री कम्प्यूटर्स, वी–166ए, भगवती विहार, उत्तम नगर, (नजदीक सेक्टर 2 द्वारका), नई दिल्ली–110059

PDF Compressor Free Version

बी.ई.एस.–126 ज्ञान एवं पाठ्यचर्या

खंड 1	**शिक्षा में ज्ञान**
इकाई 1	ज्ञान की समझ
इकाई 2	जानने की प्रक्रिया
इकाई 3	ज्ञान पर शैक्षिक विचारक
इकाई 4	ज्ञान, समाज और शक्ति
खंड 2	**पाठ्यक्रम को समझना**
इकाई 5	पाठ्यचर्या: अर्थ एवं इसके आयाम
इकाई 6	पाठ्यचर्या के निर्धारक तत्व
इकाई 7	पाठ्यक्रम डिजाइनिंग
इकाई 8	पाठ्यक्रम नवीकरण
खंड 3	**विद्यालयों में पाठ्यक्रम सहभागिता**
इकाई 9	विद्यालय: पाठ्यक्रम सहभागिता का स्थान
इकाई 10	विद्यालय में पाठ्यक्रम क्रियान्वयन
इकाई 11	पाठ्यक्रम नेतृत्व

PDF Compressor Free Version

पाठ्यक्रम परिचय : ज्ञान एवं पाठ्यचर्या

मानव की मूलभूत आवश्यकताओं की भांति शिक्षा भी अब एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गई है। परन्तु, शिक्षा को एक संप्रत्यय के रूप में विभिन्न लोग विभिन्न तरीकों से समझते हैं। एक जन इसे औपचारिक शिक्षा व्यवस्था से आवश्यक योग्यता अर्जन के रूप में इसे समझता है। शिक्षार्थियों में जिस ज्ञान का विकास करना है, उसे संगठित होना चाहिए, जिसका निर्धारण पाठ्यचर्या रूपरेखा द्वारा किया जाता है। यह पाठ्यक्रम आपको पाठ्यचर्या के अर्थ एवं संप्रत्यय, पाठ्यचर्या नियोजन की प्रक्रिया, इसका संगठन और अनुपालन के तरीके पर एक समझ विकसित करने का प्रयास करता है। इस पाठ्यक्रम में तीन खंड और कुल ग्यारह इकाइयां हैं।

खंड एक का संबंध शिक्षा में ज्ञान से है। प्रारंभ में ज्ञान का संप्रत्यय और सिद्धांतों की चर्चा की गई है यह समझाने की कोशिश की गई है कि कैसे ज्ञान का कोई भी स्वरूप कुछ स्रोतों से आता है। अच्छे ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया की समझ विकसित करने के उद्देश्य से ज्ञान में सात स्रोतों की चर्चा की गई है। ज्ञान का विस्तृत वर्गीकरण और ज्ञान के इन स्वरूपों के पुष्टीकरण की प्रक्रिया आपकी शिक्षा में ज्ञान में समझने में मदद करेगी। ज्ञान के संप्रत्यय और प्रकृति को समझने के रूप में ज्ञान के संप्रत्ययन, प्रकृति और जानने की की प्रक्रिया पर विस्तृत चर्चा की गई है। यह खंड महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर और श्री अरविन्द जैसे दार्शनिक चिन्तकों ने पाठ्यक्रमों को समझने और विकास में उनके योगदान की भी चर्चा करता है, अंत में पाठ्यचर्या में पाश्चात्य विचारधाराओं भी भूमिका की चर्चा की गई है।

खंड दो पाठ्यचर्या और इसके आधारों को समर्पित है। यह पाठ्यचर्या के अर्थ एवं संप्रत्यय से प्रारंभ होता है, और पाठ्यचर्या के विविध उपागमों की चर्चा करता है। पाठ्यचर्या के विभिन्न प्रकारों मानकों एवं प्रक्रियाओं को रेखांकित किया गया है। पाठ्यचर्या के विकास एवं क्रियान्वयन में विभिन्न दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक आधारों के प्रभावों का वर्णन करता है। पाठ्यचर्या नियोजन की प्रक्रिया, जिसमें लक्ष्यों का निर्धारण से लेकर वास्तविक अंतरण तक, सम्मिलित है, इसे भी प्रस्तुत किया गया है। पाठ्यचर्या संरचना एवं विकास के चार मुख्य घटकों की पाठ्यचर्या विकास के कुछ प्रतिमानों के साथ चर्चा की गई है। अंत में, पाठ्यचर्या मूल्यांकन, इसके उपागमों और प्रतिमानों पर विस्तृत चर्चा की गई है।

खंड तीन चर्चा करता है कि विद्यालय किस प्रकार पाठ्यचर्या क्रियान्वयन का स्थान है। अध्यापक की एक पाठ्यचर्या क्रियान्वयन, विकास करने वाले और प्रधानाचार्य की एक पाठ्यचर्या नेतृत्वकर्ता के रूप में उसकी भूमिकाओं की तथा शिक्षण-अधिगम और पाठ्यचर्या के बीच संबंध की चर्चा भी की गई है। क्या पढ़ाना है? अधिगम के लिए ज्ञान को संगठन कैसे करें और इस ज्ञान का अंतरण विद्यार्थियों में कैसे हो? इनके बारे में वैकल्पिक निर्णयों की समझ विकसित करने में भी यह मदद करता है।

PDF Compressor Free Version

खंड परिचय

पाठ्यचर्या और ज्ञान, यह इस पाठ्यक्रम का यह प्रथम खंड है। यह खंड ज्ञान के प्रति आपकी समझ विकसित करने, इसके प्रकार और जानने की प्रक्रिया को समझने की दिशा में आपको आगे ले जाएगा। इस खंड में चार इकाईयां हैं और प्रत्येक इकाई इस क्षेत्र में आपकी समझ को और विस्तार प्रदान करेगी।

इकाई एक : मानव ज्ञान–इसकी प्रकृति, स्रोत एवं इसके विविध प्रकारों का परीक्षण करती है। यह दर्शन की शाखा 'ज्ञानशास्त्र' का प्रमुख कार्य है। आप जानने में संस्कृति की भूमिका का भी विश्लेषण करेंगे। आप विश्लेषित करेंगे कि ज्ञान को किस प्रकार प्रमाणित, स्थापित और नियमन के द्वारा वैध बनाया जाता है। अंततः यह ज्ञान को वैध बनाने की समझ विकसित करेगा।

इकाई दो : ज्ञान के निर्माण और जानने की प्रक्रिया के महत्व पर प्रकाश डालेगी। एक शिक्षक से अपेक्षित है कि वह शिक्षार्थियों को ज्ञान के विवेचनात्मक मूल्यांकन में मदद करें। जिससे वे जान सकें कि विभिन्न प्रकार के मूल्यांकन को विभिन्न तरीकों से कैसे जाना परखा जा सकता है। इस इकाई में आप, विशिष्ट ज्ञान क्षेत्र से जुड़े नवीन ज्ञान की आलोचनात्मक मूल्यांकन करेंगे। शिक्षार्थी जिन विभिन्न तरीकों से जानने की प्रक्रिया का प्रारंभ कर सकता है। उनकी चर्चा भी इकाई में की गई है।

इकाई तीन में हम ज्ञान और शिक्षा के विषय में विविध शैक्षिक चिन्तकों की चर्चा करेंगे। रवीन्द्र नाथ टैगोर, महात्मा गांधी जैसे भारतीय शैक्षिक चिन्तकों और जॉन डिवी और पहले फ्रेयरे जैसे पश्चिमी चिन्तकों के शिक्षा में प्रति दृष्टिकोण का चर्चा लेगी। अंत में शिक्षा में संप्रत्यात्मक–तर्कधार और सामाजिक परिप्रेक्ष्य की चर्चा भी की जायेगी।

इकाई चार समाज की उस परिवर्तनशील प्रकृति के विषय में है जिसमें हम वस्तु से विचारों और अपेक्षाओं के साथ रहते हैं। यह उन विविध विचारधाराओं की चर्चा करेंगी जो एक जैसे आदर्शों, अपेक्षाओं और मान्यताओं वाले ज्ञान से समाज को प्रभावित करती है, और समाज के स्वरूप के अनुरूप के अपनी शिक्षा की दिशा तय करते हैं। यह इकाई विचारधाराओं और पाठ्यचर्या में संबंध की चर्चा करेगी। यह एक विकासशील शिक्षक के रूप में यथास्थितिवादी शिक्षाशास्त्र को आलोचनात्मक अधिगम कक्षा–कक्ष में समानता के अवसरों को सुनिश्चित करने में आपकी भूमिका के आवश्यकता और महत्त्व पर भी प्रकाश डालेगी।

PDF Compressor Free Version

PDF Compressor Free Version

इकाई 1 ज्ञान को समझना

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 ज्ञान की संकल्पना

1.3.1 ज्ञान के स्रोत

1.4 ज्ञान की प्रकृति

1.5 जानना और ज्ञान

1.6 ज्ञान के पहलू

1.7 जानने में संस्कृति की भूमिका

1.8 ज्ञान की पुष्टि

1.9 सारांश

1.10 इकाई के अंत में अभ्यास

1.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.12 संदर्भ पुस्तकें एवं सुझाई गई अध्ययन सामग्री

1.1 प्रस्तावना

ज्ञान और उसका प्रसारण शिक्षण का एक केन्द्रीय प्रसंग है। प्रसार के लिए मानव ज्ञान के विशाल संग्रह में से कौन–से पहलुओं का चयन किया जाना है और पाठ्यक्रम के नियोजन में महत्वपूर्ण मुद्दों के चयन के लिए क्या मानदंड उपयोग किए जाने हैं? इस संदर्भ में, ज्ञान के विचारक आधार और ज्ञान के विभिन्न स्रोतों के बारे में जानना और उनकी वैधता महत्वपूर्ण हो जाती है।

दर्शनशास्त्र की कल्पना एक आलोचनात्मक अन्वेषण के रूप में की जाती है और एक–दूसरे शास्त्र के रूप में, ज्ञान से जुड़ी बौद्धिक गतिविधियों के विभिन्नमूर्त रूपों के दावों से सम्बन्धित है। यह विश्लेषण, स्पष्टीकरण और अवधारणाओं की आलोचना की एक गतिविधि है। दर्शन का एक दृष्टिकोण, इस अहसास से प्रेरित है कि किसी प्रकार की जाँच के परिणाम जब स्वीकार्य बनते हैं तब की वे व्यक्ति के सार्वजनिक ज्ञान के साथ सार्वजनिक रूप से विश्वसनीय और सुसंगत हो जाए। ज्ञान को कभी भी केवल जांची हुई प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के विस्तृत रूप के बारे में नहीं सोचना चाहिए। ये केवल उन तरीकों के सार्वजनिक पहलू हैं जिनमें मानव अनुभव को आकार मिला है। ज्ञान प्राप्त करना, एक संरचित, संगठित अनुभव के बारे में जागरूक होना और विशिष्ट तरीके से उसे सार्थक बनाया जाना है।

इस इकाई में, हम मानव ज्ञान, इसकी प्रकृति, स्रोतों और इसके विभिन्न प्रकारों की जाँच करेंगे। यह दर्शनशास्त्र की एक प्रमुख शाखा जिसे ज्ञान–मीमांसा कहते हैं। हम ज्ञान को जानने में संस्कृति की भूमिका का भी विश्लेषण करेंगे। अंत में हम समझेंगे कि ज्ञान को कैसे वैधता प्रदान की जा सकती है।

PDF Compressor Free Version

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- ज्ञान की अवधारणा को समझ सकेंगे;
- जानने के साथ ज्ञान को सम्बन्धित कर सकेंगे;
- प्राक्अनुभव और अनुभवाश्रित ज्ञान में अंतर कर सकेंगे;
- ज्ञान के विभिन्न स्रोतों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- जानने में संस्कृति की भूमिका की चर्चा कर सकेंगे; और
- ज्ञान की वैधता के विभिन्न तरीकों के बारे में व्याख्या कर सकेंगे।

1.3 ज्ञान की संकल्पना

सबसे सामान्य समझ में, ज्ञान में तथ्यों (चीजें, वस्तुएँ, घटनाओं) के विषय, तथ्यों और नियमों, कानूनों, सिद्धान्तों से सम्बन्धित धारणाएँ सम्मिलित होती है जोकि प्रकृति और समाज में कार्य कर रहे हैं। यह सम्बन्धों के बारे में हमारी समझ का प्रतिनिधित्व करता हैः जानने वाले (ज्ञाता) का जानने (ज्ञान) के साथ सम्बन्ध। दूसरे शब्दों में, यह विषय (ज्ञाता) का वस्तु (उद्देश्य) के साथ सम्बन्ध है। व्यक्ति का उसके ज्ञान, ज्ञान के उद्देश्य के साथ सक्रिय भागीदारी का परिणाम है। ज्ञान और उसकी तीव्रता, ज्ञाता और ज्ञात के बीच सम्बन्धों पर निर्भर करती है।

ज्ञान में ऐसे तथ्य और परिस्थिति सम्मिलित हैं जिन्हें अनुभव या साहचर्य से पाया जा सकता है। यह किसी के बारे में जागरूक होने, किसी की जानकारी या समझ की सीमा, सत्य को समझने की एक अवस्था या एक तथ्य है। आप यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह जो भी व्यक्ति को ज्ञात है उसका योग है, अर्थात् व्यक्तियों द्वारा अर्जित सत्य, सूचना, और सिद्धान्तों का समूह है।

इस प्रकार हम ज्ञान को प्रबोधन के रूप में समझ सकते है। भारतीय दर्शन का मानना है कि वह अज्ञानता के आवरण को तोड़ता है। कोई भी ज्ञानी तब है जब वह किसी घटना के बारे में जागरूक हो और यह बता सके कि यह जागरूकता सत्य है। विद्यालय के संदर्भ में, ज्ञान घटना की सही प्रतिबिम्ब के रूप में, स्थापित और जाँच की गई धारणाओं, विचारों, कानूनों और प्रस्तावों का योग है। ऐसा भी माना जाता है कि ज्ञान को इस प्रकार परिभाषित नहीं किया जा सकता कि यह कई घटनाओं और परिभाषाओं का योग है। लेकिन इसके बावजूद विचारकों ने ज्ञान को परिभाषित करने का प्रयास किया है।

प्लेटो ने ज्ञान की तीन परिभाषाओं की जाँच की है, जो निम्न अनुसार हैंः

1) ज्ञान अनुभूति और संवेदना है।
2) ज्ञान सत्य विश्वास है।
3) ज्ञान एक तर्कसंगत आधार के साथ सत्य विश्वास है।

PDF Compressor Free Version

प्लेटो ने अंततः ज्ञान को "न्यायसंगत सत्य" के रूप में बताया। डिवी ने ज्ञान को "सच्चाई के निष्कर्ष" के रूप में दर्शाया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) 2005 ने, ज्ञाता के अनुभव को केन्द्र में रखते हुए ज्ञान को परिभाषित किया। इसके अनुसार, ज्ञान को भाषा के माध्यम से विचारों (या अवधारणाओं की संरचनाओं) के अनुक्रम में संगठित अनुभव के रूप में माना जा सकता है। इस प्रकार अर्थ निर्माण बदले में हमें उस दुनिया को समझने में सहायता मिलती है जिसमें हम रहते हैं। दुनिया में अभिनय और वस्तुओं के निर्माण में योगदान देने वाली गतिविधियों के अनुक्रम या भौतिक निपुणता के रूप में इसकी कल्पना की जा सकती है। मनुष्य ने बीते समय में ज्ञान के कई नियमों को विकसित किया है जिसमें सोच के तरीकों, सोच और काम करने और अधिक ज्ञान के निर्माण के तरीकों के प्रदर्शन सम्मिलित हैं।

एक सामाजिक रचनावादी दृष्टिकोण से अगर हम ज्ञान को समझे तो यह इस बात पर जोर देता है कि व्यक्ति और व्यक्तियों के समूह लगातार अपनी और उनके आसपास की दुनिया की समझ का लगातार निर्माण और पुनर्संरचना कर रहे हैं।

आपने कई शब्दों जैसे-सूचना, सच्चाई की धारणाओं और ज्ञान के बारे में ज्ञान को समझते हुए सामना किया होगा जो आपको भ्रमित कर सकते हैं। आपको इन शब्दों (terms) के बारे में स्पष्ट समझ होनी चाहिए जो निम्नानुसार प्रस्तुत किए गए हैं:

सूचना	धारणा	सत्य
यह एक अनुभव रहित आँकड़ा है, यह असतत है, ज्ञान की पूर्वावस्था ज्ञान के लिए आधार; ज्ञान का प्रारंभिक स्तर; यह ज्ञात तथ्यों के बारे में है; सार्वजनिक रूप से उपलब्ध।	व्यक्तिगत और एक व्यक्ति की शक्ति या अन्य सत्ता में मुख्य रूप से व्यक्तिपरक भावना और आशा है, हालाँकि दूसरों के द्वारा साझा की गई। सत्यापित या सत्यापन से परे हो सकती है, इसमें "सत्य" और बाकी सब कुछ जिसे हम संज्ञानात्मक दृष्टिकोण से स्वयं के लिए सत्य मानते हैं, सम्मिलित हैं।	सत्यापित ज्ञान; सत्य मान्यताओं/विश्वासों की संपत्ति है; और वाक्यों की व्युत्पत्तियाँ हैं जो विश्वासों को व्यक्त करते हैं।

ज्ञान को विभिन्न अवधारणाओं के आधार पर अलग–अलग रूपों में वर्गीकृत किया गया है। ज्ञान के प्राप्त करने के आधार पर, उसे तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

I) **प्राक्अनुभव ज्ञान**: यह एक ऐसा ज्ञान है जिसकी सत्यता या असत्यता के विषय में अनुभव का आश्रय लिए बिना निर्णय लिया जा सकता है (प्राक्अनुभव का अर्थ अनुभव से "पहले") है। ज्ञान जो प्राक्अनुभव है उसकी सार्वभौमिक वैधता होती है और एक बार अगर इसे सत्य के रूप में पहचान लिया जाए (शुद्धिकरण के उपयोग के द्वारा), तो आगे किसी भी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती है।

"सभी कुंवारे अविवाहित है" वह प्राक्अनुभव ज्ञान है। आपको इसका अनुभव करने की जरूरत नहीं, पर आपके पास यह ज्ञान है।

II) **अनुभवाश्रित ज्ञानः** यह ज्ञान अवलोकन और अनुभव पर आधारित है और यह सटीक अवलोकन और सटीक विवरण पर बल देता है। इस श्रेणी के तहत आने वाले

PDF Compressor Free Version

प्रस्तावों को इस प्रकार से भी देखा जा सकता है कि क्या उनकी सत्यता या असत्यता को तय करने के लिए नियुक्त मापदंड के दृष्टिकोण से उनमें कोई तथ्यात्मक सामग्री सम्मिलित हैं।

उदाहरण के लिए, हमारे पास कुछ कथन हैं, जैसे:

- बर्फ पिघलती है।
- बर्फ सफेद रंग की है।
- धातुएँ ऊष्मा और बिजली की संवाहक होती हैं।

ये कथन हमें तथ्यात्मक जानकारी देते हैं जिनकी सत्यता या असत्यता को केवल अवलोकन और सत्यापन के माध्यम से निश्चित किया जा सकता है।

iii) **अनुभव्यजन्य ज्ञान:** ज्ञान का यह रूप हमेशा अनिश्चित होता है और अनुभव से अस्तित्व में नहीं हो सकता है, और ना ही इसका अवलोकन से निष्कर्ष निकाला जा सकता है। इसका मूल्य समझने के लिए हमें इसे अनुभव करना होगा।

1.3.1 ज्ञान के स्रोत

ज्ञान की निर्माण की प्रक्रिया को समझने से पहले ज्ञान के स्रोतों का पता लगाना महत्वपूर्ण है, आइए, हम उन्हें समझें:

क) **इन्द्रियों के अनुभव से ज्ञान**

हम बाहरी दुनिया के बारे में, उनकी विशेषताओं के बारे में और भी बहुत, कुछ हमारी इन्द्रियों के माध्यम से जान सकते हैं।

जैसे – देखकर, गंध से, छूने, चखने, सुनने आदि से। लेकिन कभी–कभी हम हमारी इन्द्रियों के माध्यम से हमारे आसपास की चीजों को समझने में गलती करते हैं। उदाहरण के लिए, हम रस्सी को सांप समझने की गलती कर सकते हैं, जिसे अवधारणात्मक त्रुटि कहा जाता है। यहाँ हमारी इन्द्रियाँ गलत नहीं हैं, वरन् यह हमारे निर्णय में त्रुटि है। हम अधूरे या विखंडित इन्द्रियों के अनुभव के कारण, अव्यावहारिक त्रुटि करते हैं। और यह हमेशा इन्द्रियों के अनुभव ही हैं जो हमें हमारी त्रुटि खोजने के लिए प्रेरित करते हैं। उदाहरण के लिए, कोई भी करीब पहुँच कर पुष्टि कर सकता है कि यह रस्सी है या सांप, इसलिए इन्द्रियों के अनुभव के आधार पर त्रुटि का तथ्य यह नहीं दिखाता कि हमें इन्द्रियों के अनुभव से भी ऊपर के अनुभव के लिए विचार करना चाहिए। यह केवल दिखाता है कि हमें अधिक इन्द्रियों के अनुभव की आवश्यकता है।

ऐसी "आंतरिक इन्द्रियाँ भी हैं जो हमें अपनी आंतरिक स्थितियों (अहसास/भावनाएँ, दृष्टिकोण, मनोदशा और सुख) के साथ–साथ हमारे स्वयं के मानसिक कार्यों, जैसे– विचार, विश्वास, और सोच की जानकारी प्रदान करते हैं। इन मामलों में इन्द्रियाँ, जानने में सम्मिलित नहीं हैं फिर भी, कुछ अनुभवों के आधार पर, कुछ कथनों के बारे में बता सकते हैं, जैसे – "मेरे सिर में दर्द हो रहा है" "मुझे दुख होता है" और मुझे बीमार लग रहा है", इत्यादि। इन सभी मामलों में तथ्य यह है कि हमारे पास प्रश्न के रूप में ही अनुभव है या कथन की सच्चाई की आवश्यकता है। सामान्य तौर पर, भावनाएँ उत्पन्न होने वाली स्थिति होती हैं और उनकी उपस्थिति यह कहने के लिए काफी है कि उसे सिरदर्द है या वह दुखी या बीमार महसूस करता/करती है।

PDF Compressor Free Version

ऐसे शब्द जो व्यक्तियों की "आंतरिक स्थितियों" या "मनोदशा और भावनाओं" का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त होते हैं "स्वभाव प्रदर्शक शब्द" कहलाते हैं। उदाहरण के लिए, "मैं एक चिड़चिड़ी मनोदशा में हूँ", इसका अर्थ है कि अगर कोई मुझे परेशान करता है तो मैं सामान्य से ज़्यादा जल्दी परेशान हो जाऊँगा। आंतरिक इन्द्रियों के माध्यम से ज्ञान को समझने के लिए, उपस्थित और स्वामाविक स्थितियों के बीच अन्तर बनाना महत्वपूर्ण है। एक बीज में पौधा बनाने की क्षमता होती है, लेकिन उसे एक जार में रखना स्वामाविक कहा जाता है, जब समी अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करने पर ही वह बीज एक युवा पौधे में बदलता है तो इसे एक वास्तविक स्थिति कहा जाता है। इस प्रकार हमारे पास हमारी अंदरूनी दशाओं का ज्ञान है जो किसी स्थिति में हो सकता है या किसी को मौका देने पर स्वाभाविक (क्षमता हो गुण होने के नाते) हो सकता है।

ख) कारण के माध्यम से ज्ञान

इस प्रकार का ज्ञान जो तर्क के माध्यम से आया हो, उदाहरण के लिए 2 + 2 = 4, यहाँ दो तरह के तर्क हैं जो ज्ञान के स्रोत के रूप में कार्य करते हैं: निगमनात्मक और आगमनात्मक, आइए, हम उन्हें समझें।

निगमनात्मक तर्क में, निष्कर्ष तर्कसंगत रूप से आधार से प्रकट होता है। यदि आधार सत्य है, तो निष्कर्ष जिसका पालन करना है, वह भी सत्य होगा। उदाहरण के लिए:

- यदि बारिश हो रही है, तो सड़कें गीली होंगी।
- बारिश हो रही है।
- इसलिए सड़कें गीली होंगी।

उपरोक्त उदाहरण एक वैध तर्क दर्शाता है। यदि कोई आधार स्वीकार करता है, तो उसे निष्कर्ष भी स्वीकार करना चाहिए। निष्कर्ष आधार से होता है, वैधता का सत्यता से भेद करना महत्वपूर्ण है। एक वैध तर्क में, आधार की सत्यता की आवश्यकता नहीं है। केवल यह आवश्यक है कि निष्कर्ष तार्किक रूप से आधार को अनुसरण करें। उदाहरण के लिए:

- सभी गाय हरी हैं।
- वह एक गाय है।
- इसलिए, वह हरे रंग की है।

इस उदाहरण में, तर्क वैध है, अर्थात् निष्कर्ष, आधार का अनुसरण करता है। लेकिन आधार सच नहीं है। इसलिए निष्कर्ष भी सच नहीं है।

कभी–कभी आधार सच भी हो सकता है, लेकिन तर्क वैध नहीं हो सकते हैं। उदाहरण के लिए,

- भारत एक लोकतांत्रिक देश है।
- 2 और 2 चार होते हैं।
- इसलिए, वह गाड़ी चला रहा है।

उपर्युक्त उदाहरण में, निष्कर्ष आधार का अनुसरण नहीं करता है, हालाँकि सभी आधारों को सच होना होता है।

PDF Compressor Free Version

इसलिए, आप यह कह सकते हैं कि एक निष्कर्ष सच है, यह जानने के लिए, हमें यह जानना होगा कि आधार सच हैं और तर्क वैध है। अर्थात् निष्कर्ष तार्किक रूप से आधार का अनुसरण करता है।

आगमनात्मक तर्क में, आधार निष्कर्ष के लिए प्रमाण प्रदान करता है – लेकिन पूरा प्रमाण नहीं। निष्कर्ष निश्चित नहीं है लेकिन केवल एक निश्चित सीमा तक संभव है। उदाहरण के लिए,

- कौआ 1 – काला है।
- कौआ 2 – काला है।
- कौआ 3 – काला है, (और ऐसे ही 10,000 कौओ और उससे अधिक के लिए भी)
- इसलिए सभी कौएं काले हैं। इसी तरह,

यहाँ, हालाँकि 10,000 आधार जहाँ कौओं का काला होना सही है, निष्कर्ष स्थापित नहीं है। यह हमेशा संभव है, अगला कौआ, जिससे हमारा सामना हो, सफेद हो सकता है। आगमनात्मक तर्क में, सत्य किसी के लिए पहले के प्रमाणों के आधार पर स्थापित किया जा सकता है, जिसे देखा/निरीक्षण न किया गया हो। एक आगमनात्मक तर्क में, हम प्रकृति के कुछ नियमों पर भरोसा करते हैं जो हमारे अनुभव के दौरान कुछ आवर्ती एकरूपताओं के आधार पर तैयार किए जाते हैं। उदाहरण के लिए,

- हरे पौधे अपना भोजन स्वयं तैयार करते हैं।
- गर्म करने पर पानी वाष्पित हो जाता है।
- गरम होने पर धातु का विस्तार होता है।

अनगिनत एकरूपताएँ हैं जो हमारे अनुभव में काफी परिचित हैं और उनके आधार पर हम आगमनात्मक तर्क तैयार करते हैं। एक आगमनात्मक तर्क में, निष्कर्ष निश्चित नहीं है लेकिन केवल संभावित है।

ग) **प्राधिकार**

यह ज्ञान का प्राथमिक स्रोत नहीं है जहाँ किसी के विचारों या भावनाओं के अनुभवों के माध्यम से ज्ञान का अनुभव होता है। हम प्राधिकार के आधार पर कुछ चीजों को सत्य मानते हैं। प्राधिकार से आने वाले ज्ञान के मामले में निम्नलिखित सावधानियाँ बरती जानी चाहिए:

- व्यक्ति वास्तव में एक प्राधिकरण होना चाहिए, जो अपने ज्ञान के क्षेत्र में विशेषज्ञ है।
- जब भी कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के प्राधिकार का कथन स्वीकार करता है, वह स्वयं को जानने या ज्ञान की पुष्टि करने में सक्षम होना चाहिए। उदाहरण के लिए, हम आनुभविक रूप से आईस्टीन के सापेक्षता के सिद्धान्त की सच्चाई की जाँच कर सकते हैं, हालाँकि इसमें वर्षों के विशेष प्रशिक्षण और प्रयोग लगेंगे।
- प्राधिकरण, उस ज्ञान के लिए साक्ष्य/प्रमाण प्रदान करने में सक्षम होना चाहिए और तर्कसंगत रूप से समझाएँ।

PDF Compressor Free Version

- प्राधिकरण द्वारा दावा किए जाने वाले ज्ञान को उस क्षेत्र के अन्य विशेषज्ञों द्वारा स्वीकार किया जाना चाहिए।

घ) सहज–बोध

यह एक निश्चित प्रकार का अनुभव है। जब एक निश्चित रूप से दृढ़ विश्वास अचानक एक चमक (फ्लैश) की तरह प्रकट होता है। सहज–बोध/अन्तर्ज्ञान कई बार संघर्ष करते हैं। उदाहरण के लिए, दो लोग कल के मौसम के बारे में विभिन्न तरीकों से बता सकते हैं। हम कैसे तय कर सकते हैं कि उनमें से कौन सा सही है? "क" दावा करता है कि कल वर्षा होगी और "ख" दावा करता है कि वर्षा नहीं होगी, हम कल का इन्तजार कर सकते हैं कि दोनों मे से कौन–सा दावा सही है। लेकिन हम यह अनुभव इन्द्रियों के माध्यम से कर सकते हैं। (वर्षा को देखकर), सहज–बोध द्वारा। सहज–बोध/अन्तर्ज्ञान स्वयं यह निर्णय नहीं ले सकता है कि दोनों परस्पर विरोधी दावों सहज–बोधों में से कौन–सा सही है?

सहज–बोध से जानना, वास्तव में, यह नहीं समझाता कि "कैसे जानना"। यह हमें वैधता प्रक्रिया के बारे में कुछ नहीं बताता है। हमारे पास वैज्ञानिक जाँच के इतिहास (आर्किमिडीज सिद्धान्त) और गणितीय खोजों के उदाहरण हैं जहाँ ज्ञान को सहज–बोध के द्वारा खोजा गया था और वैध साबित किया गया था। यहाँ कोई तर्क दे सकता है, ज्ञान किसी पूर्व धारणाओं के बिना विचार के अचानक निश्चित रूप में नहीं आया था। ऐसे मामलों में, समाधान की खोज के लिए समस्या पर लंबे समय तक विचार किया गया था, जहाँ वैज्ञानिकों को सहज–बोध हुआ था। इस प्रक्रिया में, वैज्ञानिकों ने समाधान दिया होगा, जिसे बाद में साक्ष्यों और तर्कों के पर्याप्त आधार के साथ समझाया गया था। हालाँकि, इसकी गारंटी नहीं है कि हर बार जब वैज्ञानिक ने सहज–बोध किया तो ज्ञान भी वैध था।

ङ) रहस्योद्घाटन

इस स्रोत की सहज–बोध की तरह समस्या है। कभी–कभी कोई रहस्योद्घाटन के माध्यम से जानने का दावा करता है। उदाहरण के लिए "यह मेरे लिए सपने में प्रकट हुआ" (या एक दृष्टि)। क्या होगा अगर एक व्यक्ति के पास एक दृष्टांत था जिसने उसे एक बात बताई और दूसरे व्यक्ति के पास एक दृष्टांत था, जिसने उससे विपरीत बताया? यह तथ्य कि व्यक्ति का सपना था या दृष्टांत, यह नहीं दिखाता कि इसका संदेश सत्य है या भरोसेमंद हो सकता है। यदि कोई कहता है कि यह सत्य है, तो इसका सत्य अन्य तरीकों से ही खोजा जा सकता है।

च) आस्था

ज्ञान का यह स्रोत भी पिछले स्रोतों की समान समस्या के साथ परस्पर व्याप्त होता है। "मैं विश्वास के द्वारा यह जानता हूँ, मुझे इस पर आस्था है, इसलिए यह सत्य होना चाहिए", मैं विश्वास के द्वारा इस पर आस्था करता हूँ और यह आस्था मुझे ज्ञान प्रदान करती है।" सहज–बोध और रहस्योद्घाटन के ज्ञान के दावों को ग्रस्त करने वाली इस तरह की कठिनाई यहाँ होती है। लोगों को अलग–अलग चीजों में विश्वास है और जिन चीजों को वे विश्वास के माध्यम से जानने का दावा करते हैं, उनमें अक्सर एक दूसरे के साथ संघर्ष होता है। आस्था एक ऐसा दृढ़ मत है जिसके लिए कोई सबूत नहीं है। यह सबूतों की अनुपस्थिति में किसी के प्रति आस्था का

PDF Compressor Free Version

एक दृष्टिकोण है। किसी की आस्था के प्रति क्या भावना और दृष्टिकोण है और क्या वह आस्था सच है, दो बहुत अलग चीजें हैं। इसलिए, यह ज्ञान का एक वैध स्रोत नहीं हो सकता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1. ज्ञान को अपने शब्दों में परिभाषित कीजिए।

....

....

....

2. प्राक्अनुभव और अनुभवाश्रित ज्ञान में अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

3. तर्क को ज्ञान के स्रोत के रूप में समझाइए।

....

....

....

1.4 ज्ञान की प्रकृति

इस भाग में, हम ज्ञान की विशेषताओं को समझने की कोशिश करेंगे, जिससे आप इसकी प्रकृति को समझ सकेंगे।

i) ज्ञान की अमूर्त प्रकृति

अभी तक, आप समझ गए होंगे कि ज्ञान साझा रूप में प्राप्त की गई समझ है, यह दो विचारों के बीच न्यायसंगत सच्चाई या समझौता है। यह विशेषता ज्ञान की अमूर्त प्रकृति की है।

ii) ज्ञान की सामाजिक प्रकृति

ज्ञान सामाजिक रूप से साझा की गई समझ है, क्योंकि यह समाज के सामुदायिक सदस्यों के सामूहिक लक्ष्य के माध्यम से विकसित किया गया है। व्यक्तियों को अपने अनुभव से बहुत अधिक ज्ञान प्राप्त होता है; साथ ही वे अपने साथी मनुष्य के साथ मिलकर ज्ञान का निर्माण करते हैं। इसलिए ज्ञान को समाज से ही प्राप्त किया जाता है और निर्माण किया जाता है, और इसकी जड़े मनुष्य की सामाजिक गतिविधियों में ही निहित होती हैं। इसलिए ज्ञान चरित्र में अनिवार्य रूप से सामाजिक है।

PDF Compressor Free Version

iii) ज्ञान संचयी है

ज्ञान की प्रकृति संचयी है क्योंकि यह सामाजिक रूप से संरक्षित है और एक पीढ़ी से भविष्य की पीढ़ियों तक जाती है। वास्तविकता की नई समझ, वास्तविकता के ज्ञान की सहायता से यह पीढ़ियों में निरंतर विकसित है। इस तरह, अधूरी समझ वास्तविकता की पूरी समझ की ओर ले जाती है। ज्ञान न केवल जोड़कर बल्कि पहले से मौजूद ज्ञान को सुधारने की प्रक्रिया के माध्यम से विकसित होता है।

iv) ज्ञान सीमित और सीमा से परे दोनों है

ज्ञान का संचयी चरित्र हमें ज्ञान की सीमा और असीम प्रकृति दोनों को सूचित करता है। मानवता के विकास में किसी विशेष स्तर पर, ज्ञान उपलब्ध अनुभव के सीमित चरित्र और ज्ञान प्राप्त करने के मौजूदा साधनों द्वारा निर्धारित सीमाओं के विपरीत आता है। इसलिए, ज्ञान हमेशा सीमित होता है, और एक ही समय में असीम है। दूसरे शब्दों में, ज्ञात हमेशा अज्ञात से घिरा होता है लेकिन अनजान नहीं है।

v) ज्ञान प्रेक्षक है

ज्ञान केवल बाह्य उद्देश्यों की वास्तविकता की व्याख्या नहीं करता है; यह अनुभव द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर वास्तविकता को तैयार करता है। यह केवल चरित्र में व्याख्यात्मक नहीं है; बल्कि यह चरित्र और प्रकृति में निर्वचनात्मक है। इसकी एक सामाजिक संदर्भ में विवेचना की जाती है। ज्ञान की निर्वचनात्मकता का यह अंतर्निहित चरित्र, इसे केवल अवधारणात्मक के बजाय प्रेक्षक बनाता है। ज्ञान ज्ञानदाताओं में दृष्टिकोण परिप्रेक्ष्य विकसित करता है।

1.5 जानना और ज्ञान

ज्ञानमीमांसा (Epistemology) दर्शनशास्त्र की शाखाओं में से एक है, जो ज्ञान के सिद्धान्त से सम्बन्धित है। यह ज्ञान की दो मूलभूत समस्याओं को हल करता है – ज्ञान की उत्पत्ति और ज्ञान का मान्यीकरण। फ्रेरे के अनुसार, जानने के चक्र में दो महत्वपूर्ण क्षण हैं, जो द्वंद्वात्मक रूप से सम्बन्धित हैं। पहला क्षण है – नए ज्ञान के उत्पादन का क्षण और दूसरा है, जब उत्पादित ज्ञान, जानने वाले व्यक्ति को ज्ञात होता है। अक्सर शिक्षकों ने इन दो क्षणों को द्विभाजित किया, यानि हम इन्हें अलग कर देते हैं। इसके परिणामस्वरूप, शिक्षार्थियों को केवल वही याद करने की अपेक्षा की जाती है जो शिक्षक कहते हैं। परिणामस्वरूप, ज्ञान प्रदान करना, ज्ञान के स्थानांतरण मेंहै।

ज्ञान की उत्पत्ति पर चर्चा, ज्ञान के निर्माण में ज्ञान और ज्ञाता की भूमिकाओं पर केन्द्रित है। इस प्रक्रिया में, जानने और ज्ञान के दोनों तरीकों और विभिन्न रूपों पर ज्ञान की संपत्ति का निर्माण होता है। ज्ञान की उत्पत्ति जानने के लिए, हमें इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि हम कैसे जानते हैं। जानने की प्रक्रिया जानने वाले की (विषय) ज्ञात (कर्म) के साथ सम्बन्ध से प्रारंभ होती है। जानने वाले का सम्बन्ध ज्ञात के साथ संपर्क से प्रारंभ होता है। संपर्क एक संदर्भ में चेतना के माध्यम से होता है – भौतिक, जैविक, सामाजिक–सांस्कृतिक और अन्य। इस संदर्भ में, जानने वाले की विभिन्न तरीकों से ज्ञान को प्राप्त करने की अपनी पहल का महत्व मानते हैं।

जैसा कि पहले वर्णित है, जानना एक प्रक्रिया और एक उत्पाद दोनों है। एक प्रक्रिया के रूप में, यह घटना को जानने की विधि को संदर्भित करता है। एक उत्पादन के रूप में ज्ञान, प्रक्रिया जानने का परिणाम है। जानना, धारणा, कारण और भावना के माध्यम से

PDF Compressor Free Version

होता है और संहिताकरण भाषा में किया जाता है। इसी प्रकार से जानने के विभिन्न तरीकों के अर्थ या स्रोत हैं। यह स्रोत, ज्ञात की इन्द्रियाँ और मन हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

4. ज्ञान की सामाजिक प्रकृति की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

5. जानने की प्रक्रिया में, जानने वाले और ज्ञात के बीच सम्बन्ध को दर्शाएँ।

....

....

....

1.6 ज्ञान के पहलू

ज्ञान के कई पहलू हैं: स्थानीय और सार्वभौमिक, मूर्त और अमूर्त, सैद्धान्तिक और व्यावहारिक, प्रासंगिक और शाब्दिक, विद्यालय और विद्यालय से बाहर। प्रत्येक पहलू पर स्पष्टता रखना महत्वपूर्ण है, आइए, हम इन्हें इस खंड में समझने का प्रयास करें:

i) अमूर्त और मूर्त ज्ञान

अमूर्त शब्द, ऐसे विचारों और अवधारणाओं को संदर्भित करता है, उनके पास कोई भौतिक संदर्भ नहीं है, जबकि मूर्त शब्द, उन वस्तुओं या घटनाओं को संदर्भित करता है जो इन्द्रियों के अनुभव के लिए उपलब्ध हैं। अमूर्त और मूर्त शब्दों के बीच इस विषमता को पाईवियो (1971, 1986) के दोहरी संहिता सिद्धान्त के द्वारा समझाया गया है। मूर्त संदर्भों के शब्द अमूर्त संदर्भों के शब्दों की अपेक्षा अधिक आसानी से पहुँचाएं जा सकता है क्योंकि वे मौखिक और काल्पनिक संहिता, दोनों की जानकारी प्रदान करते हैं, जबकि अमूर्त शब्दों द्वारा व्यक्त किए गए शब्द केवल मौखिक संहिता पर जानकारी देते हैं।

अमूर्त ज्ञान उन चीजों के परे है, जो "यहाँ और अभी है विशिष्ट उदाहरणों से या उन अवधारणाओं जिनके बारे में सोचा जा रहा है। मूर्त ज्ञान में कोई गहराई नहीं है। यह सिर्फ परिधि में सोचने को संदर्भित करता है। इसलिए, मूर्त ज्ञान सिर्फ तथ्यों के बारे में है और सभी चीजों के लिए केवल एक सामान्य अवधारणा है। दूसरी ओर, अमूर्त ज्ञान को गहन अधिगम की आवश्यकता है और यह तथ्यों से परे चला जाता है।

अमूर्त ज्ञान प्राप्त करने के लिए, मानसिक प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं, लेकिन मूर्त ज्ञान में ऐसा कोई प्रयास सम्मिलित नहीं है। इसलिए, मूर्त ज्ञान वाला व्यक्ति तथ्यों से परे नहीं सोचता है और इसमें एक निश्चित सीमा से परे सोचने की क्षमता नहीं है।

PDF Compressor Free Version

ii) सैद्धान्तिक ज्ञान और व्यावहारिक ज्ञान

सैद्धान्तिक ज्ञान आपको दूसरों के अनुभव के द्वारा सीखने की अनुमति प्रदान करता है और प्रायः किसी संदर्भ की गहन समझ को बढ़ावा देता है। यह अपने संदर्भ में अवधारणा को समझने में सहायता करता है और इस प्रकार यह आपको तर्क करना और प्रश्न करना सिखाता है। इस ज्ञान की मदद से, एक सिद्धान्त की जटिलताओं को समझना और उसे कैसे व्यावहारिक रूप से लागू किया जा सकता है, यह संभव है। व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए, एक अवधारणा की एक गहरी समझ होना जरूरी है जो स्वयं कार्य करने से या व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से प्राप्त किया जा सकती है। दूसरे शब्दों में, आप कह सकते हैं कि व्यावहारिक ज्ञान को चीजों को करने से ही प्राप्त की जा सकती है; यह वास्तविक जीवन के प्रयासों और कार्यों पर आधारित है।

iii) सार्वभौमिक ज्ञान और स्थानीय ज्ञान

सार्वभौमिक ज्ञान उन सभी कौशलों की विशेषताओं, अधिगम की शाखा, आदि को सम्मिलित करता है जो सभी की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुकूलित या समायोज्य है। आप कह सकते हैं कि यह एक लक्षण या विशेषता है, जो व्यक्ति को किसी विशेष व्यक्ति से अलग बनाता है। या यह वह भी है जो सब में समान रूप से पाया जाता है।

सार्वभौमिक ज्ञान वह है जो ब्रह्माण्ड में हर जगह और सभी समय में सत्य माना जाता है। भौतिक विज्ञान और गणित इस प्रकार के ज्ञान से सम्बन्धित अध्ययन के दो प्राथमिक क्षेत्र हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि आप कहाँ हैं, आप स्थिर रहने के लिए गणित पर भरोसा कर सकते हैं। समानता हमेशा समान रहेगी। गणित के सभी कार्य हर समय स्थिर रहते हैं और इनका उपयोग बहुत सारे या सभी प्रकार, रूपों, आकारों, आदि के लिए किया जा सकता है, जिसका उपयोग सभी को करना है, या सभी को समझना है। सार्वभौमिक ज्ञान के विपरीत, स्थानीय ज्ञान कई या सभी कौशल, अधिगम की शाखाओं आदि को सम्मिलित नहीं करता है। यह ब्रह्मांड की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुकूलित या समायोज्य नहीं है। स्थानीय ज्ञान सभी को प्रभावित नहीं करता है। इसमें सभी सम्मिलित नहीं है और सभी के द्वारा इसका उपयोग या समझा नहीं जाता है।

स्थानीय ज्ञान, हर किसी के द्वारा अनुभव नहीं किया जाता। स्थानीय ज्ञान, हर जगह या सभी परिस्थितियों में विद्यमान या क्रियाशील नहीं है। स्थानीय ज्ञान तथ्यों का संग्रह है और उन सभी अवधारणाओं, विश्वासों और धारणाओं से सम्बन्धित है जो लोग अपने आसपास की दुनिया के बारे में सोचते हैं। इसमें लोगों को उनके परिवेश का निरीक्षण करने और मापने के तरीके सम्मिलित हैं। वे कैसे समस्याओं का समाधान करते हैं, और नई जानकारी को मान्य करते हैं। इसमें वे प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं, जिसमें ज्ञान उत्पन्न होता है, संग्रहित होता है, लागू होता है और दूसरों को प्रेषित होता है। स्थानीय ज्ञान वह ज्ञान है जो किसी दिए गए समुदाय में लोगों ने समय के साथ विकसित किया है, और विकसित करना जारी है। यह है:

- अनुभव पर आधारित
- अक्सर सैकड़ों वर्षों तक प्रयोगों से परीक्षण किया जाता है।
- स्थानीय संस्कृति और पर्यावरण के लिए अनुकूलित।
- सामुदायिक प्रथाओं, संस्थानों, सम्बन्धों और अनुष्ठानों में निहित।

PDF Compressor Free Version

- व्यक्तियों या समुदायों द्वारा निर्मित है।
- गतिशील और बदलता हुआ।

iv) विद्यालयी ज्ञान और विद्यालय से बाहर प्राप्त हुआ ज्ञान

विद्यार्थियों ज्ञान एक औपचारिक पाठ्यक्रम के माध्यम से शैक्षणिक तथ्यों और अवधारणाओं के बारे में बताता है। विद्यालयी ज्ञान में सीखने की गतिविधियाँ सम्मिलित हैं जो स्वैच्छिक और आत्म–निर्देशित, जीवन भर और मुख्य रूप से आंतरिक हितों, जिज्ञासा, अन्वेषण, हेर–फेर, काल्पनिक, कार्य पूर्णता और सामाजिक संपर्क से प्रेरित हैं।

विद्यालयी ज्ञान, एक औपचारिक पाठ्यक्रम द्वारा निदेर्शित संगठित ज्ञान है, इसे पढ़ने से व्यक्ति औपचारिक रूप को मान्यता प्राप्त प्रसरण पत्र, जैसे – माध्यमिक विद्यालय पूर्णता, डिप्लोमा या डिग्री प्राप्त होती है। यह अक्सर निर्देशित और व्यवस्थित, संगठित शिक्षा प्रतिमान से मेल खाता है, कानूनों और मानदंडों के अनुसार संरचित और प्रशासित, उद्देश्यों, सामग्री और पद्धति के सम्बन्ध में एक कठोर पाठ्यक्रम पेश करता है।

विद्यालय ज्ञान में एक पदानुक्रमित संरचित, "कालानुक्रमिक वर्गीकृत" "शिक्षा प्रणाली सम्मिलित है, जो प्राथमिक विद्यालय से विश्वविद्यालय तक के माध्यम से चल रहा है और इसमें सामान्य शैक्षिक अध्ययन के अलावा, पूर्णकालिक तकनीकी और पेशेवर प्रशिक्षण के लिए कई विशेष कार्यक्रम और संस्थान सम्मिलित हैं।

विद्यालय से बाहर के ज्ञान में, वह ज्ञान सम्मिलित है, जो विद्यालय से पहले और बाद सप्ताहांत और अवकाशों में संचालित होता है। इस प्रकार का ज्ञान शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार करने और प्रतिभाओं के विकास और पोषण में सहायता करता है और वयस्कों और पुराने युवाओं के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने के अवसर प्रदान करता है। इस ज्ञान में प्रतिमानों और दृष्टिकोणों की एक विस्तृत श्रेणी सम्मिलित हैं। कुछ विशेष पाठ्यक्रम, घर पर शिक्षण और गृहकार्य सहायता के माध्यम से शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ावा देने पर विशेष रूप से केन्द्रित है और कुछ यह विशेष रूप से दृश्य, प्रदर्शन और पाक कला में सांस्कृतिक संवर्धन प्रदान करने पर केन्द्रित है, मनोरंजक गतिविधियों और दौड़–कूद (ऐथलेटिक्स) या नेतृत्व प्रशिक्षण और सामुदायिक सेवा में सांस्कृतिक संवर्धन प्रदान करने पर केन्द्रित हैं और कुछ यह सामान्य रूप से हमारे विद्यालयों और विश्वविद्यालयों द्वारा अपनाई गई शिक्षा प्रक्रिया से मेल खाती हैं। विद्यालय से बाहर की व्यवस्था और रैखिक या गैर–रैखिक हो सकते हैं और अक्सर स्वगति वाले और दृश्य या वस्तु उन्मुख होती हैं। यह आगे की गतिविधि और सीखने के लिए एक अनुभवात्मक आधार और प्रेरणा प्रदान करता है। विज्ञान, गणित और प्रौद्योगिकी में विद्यालय के बाहर के ज्ञान, सीखने के अनुभवों का परिणाम मजेदार और आश्चर्य की भावना सम्मिलित करती है जिसमें अवधारणाओं, विषयों, वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों में सोचने की प्रक्रिया और इन क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों के बारे में ज्ञान की बढ़ोतरी सम्मिलित है।

विद्यालय के बाहर से ज्ञान प्राप्त करना वास्तव में आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जिसके तहत हर व्यक्ति अपने दैनिक अनुभवों और शिक्षा के प्रभावों और अपने पर्यावरण में उपलब्ध संसाधनों से – परिवार और पड़ोसियों से, काम और खेल से, बाजार के स्थान से, पुस्तकालय और जन संचार माध्यमों से दृष्टिकोण, मूल्य, कौशल और ज्ञान प्राप्त करता है।

विद्यालय के बाहर का ज्ञान, समाज में भाग लेने से सांस्कृतिक मूल्यों, मापदंडों और अपेक्षित व्यवहारों के बारे में सीखने का वर्णन करता है। इस प्रकार की शिक्षा, औपचारिक शिक्षा प्रणाली और घर पर दोनों के माध्यम से होती है। हमारे शुरुआती अधिगम के अनुभव आम तौर पर माता–पिता, रिश्तेदारों और अन्य लोगों द्वारा हमारे समुदाय में होते हैं।

PDF Compressor Free Version

1.7 जानने में संस्कृति की भूमिका

अधिगम का संज्ञानात्मक दृष्टिकोण दर्शाता है कि अधिगम संदर्भ–निर्भर है, यानि की वह "स्थित" है – और नए ज्ञान को केवल तब ही लिया जा सकता है जब वह मौजूदा ज्ञान संरचनाओं से जुड़ा हो। इसका अर्थ है कि अधिगम की प्रक्रिया के दौरान शिक्षार्थी को संयोजन बनाते हैं और ज्ञान को फिर संगठित कर उसे नए स्वरूप और एकीकृत अनुक्रम विकसित करते हैं।

इस प्रकार, शिक्षार्थी जो पहले से जानते हैं, उनको नए अनुभवों से सम्बन्धित करके सीखते हैं। इन नए अर्थों को जो अधिगम की प्रक्रिया के दौरान विकसित होते हैं, नए अर्थों को बनाने में सम्मिलित होते हैं जो आमतौर पर भाषा के माध्यम से व्यक्त किए जाते हैं।

इस प्रकार, अधिगम, भाषा, अर्थ और सोच में निकट से सम्बन्धित है। इस परिप्रेक्ष्य में, ज्ञान का विकास जानकारी के संचय और पुनर्गठन से परे, ज्ञान की विकास प्रक्रिया में आत्म निगरानी और जागरूकता की प्रक्रियाएँ विकसित होती हैं, जिसे हमें परासंज्ञान (मेटाकॉग्निशन) के रूप में जानते हैं। सामाजिक–सांस्कृतिक सिद्धान्त, सोच और सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और संस्थागत संदर्भ के बीच के सम्बन्ध को समझते हैं, जिसमें यह घटित होते हैं।

इस प्रकार, किसी भी प्रकार के अधिगम के संदर्भ में, भाषा अभिन्न हो जाती है। यह एक प्रमुख साधन है जिसके द्वारा हम अपने आप और दूसरों के साथ अर्थ साझा करते हैं, और जिसके द्वारा हम सामाजिक सम्बन्धों और सामाजिक मूल्यों के लिए समझौता करते हैं। इस प्रकार, भाषा जानने के उपर्युक्त स्रोतों/साधनों के अतिरिक्त, जानने का माध्यम भी बन जाती है। शिक्षार्थियों की संस्कृति और संस्कृति जिसमें अर्थ बनाये जाते हैं या संचारित होता है, दोनों का उन तरीकों पर एक प्रभाव होता है जिसमें संभव अर्थ समझा जाता है। चूँकि भाषा, संस्कृति या सामाजिक संदर्भ का एक हिस्सा है जिसमें एक बच्चा जन्म लेता है, जानने के साधन के रूप में, अधिक मूलभूत तरीकों से कार्य करता है।

यह भाषा है जो किसी व्यक्ति के लिए दुनिया में स्वयं को निष्पादित करने और अवधारणा के लिए संभव बनाती है – अनुभवों को नाम देने के लिए, और पर्यावरण, वस्तुओं, अनुभवों, घटनाओं और अंतःक्रियाओं को समझने के लिए। संक्षेप में, भाषा अर्थ को ग्रहण करने की प्रक्रिया के लिए केन्द्रीय गुण है, जो अधिगम का अभिन्न अंग है।

यदि आप शिक्षार्थियों से एक ही वस्तु, घटना या घटना के बारे में उनकी अवधारणाओं के बारे में पूछते हैं, तो आपको विविधताएँ मिलेंगी। अवधारणाओं को समझने में इस अंतर के लिए जानने की प्रक्रिया को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जिसका अर्थ है कि प्रक्रिया हो रही है और अवधारणाओं को अर्थ, समाज की भाषा और सांस्कृतिक संदर्भ द्वारा प्रदान किया जाता है। इस प्रकार, यह दूसरों के साथ हमारी बातचीत में भाषा के उपयोग के माध्यम से है, हमें दुनिया में काम करने, अभिनय करने, और बातचीत करने, सोचने और मूल्यवान करने और भाषा, वस्तुओं और उपकरणों का उपयोग करने में सीखने में सहायता मिलती है, जोकि हमारे ज्ञान को गंभीर रूप से आकार देते हैं। सामाजिक अर्थों के निर्माण में व्यक्तियों और संगठनों के बीच अन्तराविषयात्मकता भी सम्मिलित है। सामाजिक अर्थ और ज्ञान संचारित समूह के भीतर वार्ता के माध्यम से विकसित हुए हैं और इन अनुभवों के माध्यम से व्यक्तिगत अर्थों को आकार मिला है, जो समुदाय की अंतर्निहितता से प्रभावित होते हैं जिनसे लोग सम्बन्धित होते हैं।

PDF Compressor Free Version

इस प्रकार, एक सामाजिक रचनावादी (social constructivist) दृष्टिकोण से देखा जाने वाला ज्ञान इस बात पर जोर देता है कि व्यक्ति और सामूहिक समूह लगातार अपने आपको और उनके आसपास की दुनिया (जैकोब्स, 2002) के बारे में उनकी समझ का निर्माण करते हैं। व्यक्ति विश्वासों, व्यवहारों और संस्थाओं के नियमों की प्रणाली से सामाजिक बनते हैं। ज्ञान के सामाजिक रचनावादी दृष्टिकोण का प्रभाव यह दर्शाता है कि ज्ञान एक मानव उत्पाद है, और यह सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से निर्मित है (कोठारी, 2001, पृ. 148)। यह इस धारणा को इंगित करता है कि व्यक्ति एक दूसरे के साथ उनकी बातचीत के माध्यम से और पर्यावरण के माध्यम से, जहाँ वे रहते हैं, अर्थ निर्मित करते हैं।

इस प्रकार, वास्तविकता का अनुभव करने की प्रक्रिया, सांस्कृतिक उपकरणों से सुगम हो जाती है और संस्कृति जानने और ज्ञान के साधनों के रूप में कार्य करती है। यह विद्यालय के ज्ञान के मामले में भी सच है। विद्यालयों में प्रदान किए जाने वाले ज्ञान की प्रकृति शाब्दिक है; जो शब्दों में दुनिया के बारे में हमारी समझ का प्रतिनिधित्व है। यह कुछ नहीं है, परंतु जिसे हम वैचारिक ज्ञान कहते हैं। सम्प्रत्यात्मक ज्ञान में, शब्द मूर्त से अमूर्त अर्थ को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वास्तव में, नाथानीएल ब्रैंडन (1971) कहते हैं, 'शब्द इस तरह की व्यापक, जटिल घटनाओं, जैसे – "विषय", "ऊर्जा", "स्वतंत्रता", "न्यास" से निपटने के लिए सक्षम बनाता है जिसे कोई मस्तिष्क नहीं समझ पकड़ सकता है। यदि इन अवधारणाओं को परिभाषित करने वाले सभी संकल्पनात्मक संकल्पों को कल्पना दें।' इसलिए, शब्दों के माध्यम से, हम चीजों और उनकी संपत्तियों के बारे में सामान्य निष्कर्षों को व्यक्त कर सकते हैं और इसका उपयोग कैसे किया जा सकता है।

उपर्युक्त चर्चा से, यह स्पष्ट है कि जानने और ज्ञान के निर्माण के सामाजिक और सांस्कृतिक कारक हैं। इस प्रकार, शिक्षार्थियों द्वारा लाए जाने वाले विविध सांस्कृतिक समझ और अनुभव अत्यधिक प्रभावशाली होते हैं और उन्हें ध्यान में रखा जाना चाहिए, जब आप कक्षा में पढ़ाते हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।
(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

6. अमूर्त और मूर्त ज्ञान में अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

7. विद्यालय के बाहर से ज्ञान का अधिग्रहण क्यों आजीवन सीखने की प्रक्रिया है?

....

....

....

8. जानने में भाषा के महत्व को समझाइए।

....

....

....

PDF Compressor Free Version

1.8 ज्ञान की पुष्टि

हमने देखा कि ज्ञान इन्द्रियों के अनुभव, तर्क, अधिकार और अन्य स्रोतों से प्राप्त होता है। हम कैसे पुष्टि करते हैं कि इन स्रोतों से प्राप्त ज्ञान वैध है?

सत्यापन

क्या एक कथन सत्यापित किया जा सकता है? क्या ज्ञान को बताने वाले हर कथन को सत्यापित किया जा सकता है? क्या चाहा गया है कि एक नियम या सिद्धान्त है जो हमें बताएगा कि कथन किस प्रकार के हैं या क्या उनमें अनुभवजन्य सामग्री नहीं है, क्योंकि हम प्रत्येक कथन की जाँच नहीं कर सकते। "100 डिग्री सेंटीग्रेड पर पानी को इस बर्तन में उबाल लेंगे", जैसे कथनों को सत्यापित करना आसान है, क्योंकि इसमें अनुभवजन्य सामग्री है। हम यह पता कर सकते हैं कि कथन सही है या गलत है, पानी के बर्तन को लेते हुए, इसे गरम करते हैं और तापमान को मापते हैं, जब यह उबलता है।

एक कथन जैसे दो और दो जोड़कर चार के बराबर होते हैं। इसमें कोई अनुभवजन्य सामग्री नहीं है। लेकिन यह एक विश्लेषणात्मक कथन है और इसकी सत्यता को केवल औपचारिक तरीकों से दिखाई जा सकती है। उपर्युक्त प्रायोगिक कथन की तरह, सभी कथन इतने सीधे नहीं हैं। एक कथन पर विचार करें "सारा पानी हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से बना है"। "शनि हरे पनीर का बना है।" पहले मामले में, हम सभी पानी का विश्लेषण कैसे कर सकते हैं, यह देखने के लिए कि क्या यह H_2O से बना है? दूसरे मामले में, हम देखने या स्वाद के लिए शनि पर नहीं जा सकते हैं।

एक प्रस्ताव को सत्यापित करने के लिए ऐसे अवलोकन बनाने हैं, जो हमें निश्चित रूप से निष्कर्ष निकालने के लिए समर्थ बना देगा कि "पी" सच है या गलत है। इसकी पुष्टि करने के लिए एक या अधिक अवलोकन करने हैं जो निश्चित रूप से इसे किसी भी तरह से स्थापित किए बिना इसकी सत्य या असत्य होने की संभावना को बढ़ा या घटा देगा। यदि 100 में से 50 पत्थर (मारबल) काले पाए जाते हैं, तो हमने केवल पुष्टि की है, लेकिन इसको सत्यापित्त नहीं किया है थैले में सभी पत्थर (मारबल) काले हैं। यह तब एक सत्यापित नहीं है जब तक किसी ने संपूर्ण 100 की जाँच नहीं की है। सत्यापन और पुष्टि दोनों बातें हम करते हैं, जब हम कोई प्रक्रिया का संचालन करते हैं। हम किसी की पुष्टि या सत्यापित नहीं कर सकते हैं जब तक हमें पुष्टि या सत्यापित किए जाने वाले कथन का अर्थ मालूम नहीं हो। परीक्षण योग्यता मानदंड क्या निर्धारित करता है कि हम इसका अर्थ जानते हैं, जब हम जानते हैं कि यह कैसे सत्यापित किया जाएगा या पुष्टि की जाएगी, चाहे किसी ने भी ऐसा किया हो या नहीं। एक तारे के उदाहरण को ध्यान में रखते हुए, जो 1000 प्रकाश वर्ष दूर है, हमारे लिए यह पता लगाना असंभव है कि आज उस तारे की सतह पर क्या हो रहा है, क्योंकि 186,000 मील प्रति सेकंड की गति से जो प्रकाश तारे को छोड़कर आ रहा है वह 1000 साल तक भी पृथ्वी तक नहीं पहुँच जाएगा, फिर भी हम कहते हैं कि आज तारे की सतह पर धब्बे हैं। यह व्यर्थ नहीं है।

सत्यापन की तार्किक संभावना आवश्यक है। इसलिए, तर्कसंगत रूप से अपने सच्चे ज्ञान के लिए एक कथन को सत्यापित करना संभव है, हालाँकि अनुभवजन्य संभव नहीं है। सत्यापन में विचार करने वाले कुछ मुद्दे हैं, जो निम्नानुसार हैं:

क) सत्यापन कब होना चाहिए?

यह एक महत्वपूर्ण विचार है, क्योंकि पिछले या भविष्य के बारे में कोई कथन अभी सत्यापित नहीं किया जा सकता है।

PDF Compressor Free Version

"जूलियस सीजर" की 44 ईसा पूर्व में हत्या कर दी गई थी।" यह कथन पिछली घटना का वर्णन करता है। यह सच है कि हमें इसे सत्यापित करने की स्थिति में नहीं हैं, क्योंकि हमें रोम में 44 ईसा पूर्व में जाना होगा, जो कि हो नहीं सकता। यह वाक्य पिछली घटनाओं के बारे में है, लेकिन आज हम कुछ भी साक्ष्य प्रस्तुत करे वह हमें भूतकाल में वापिस नहीं लाएगा। वर्तमान में केवल इतना कर सकते हैं, उसकी पुष्टि के लिए, जो भी प्रमाण मिलें कि क्या यह सही है। भविष्य के बारे में कथन के सम्बन्ध में यह प्रावधान हमें सहायता करेगा।

"अगले पाँच सालों में दुनिया में गंभीर आर्थिक निराशा होगी।"

यह कथन अब सत्यापित नहीं किया जा सकता, हालाँकि इसका अर्थ है लेकिन यह भविष्य में सत्यापित किया जा सकता है और यह मानदंड के अनुसार इसे सार्थक बनाने के लिए पर्याप्त है। सामान्य तौर पर, भविष्य के बारे में कथनों के साथ, हम बस इंतजार और निरीक्षण करते हैं कि पूर्वानुमानित समय पर क्या होता है?

ख) किसके द्वारा सत्यापन किया जाना चाहिए?

केवल एक के द्वारा सत्यापन के विचार को डर के कारण कुछ संदिग्ध माना गया है कि वह कई कथनों को सार्थक रूप देने की अनुमति देगा, जिसकी अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए,

"मैंने "पी" को सत्यापित किया कि अनंत काँच की तरह है, क्योंकि आज मुझे इसका अनुभव हुआ।"

लेकिन हमें इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि ऐसा कोई कथन किसी के अहसास स्थिति के बारे में होना चाहिए और यह किसी भी वस्तुनिष्ठ वास्तविकता के लिए कोई दावा नहीं करता है जिसका किसी अन्य के द्वारा परीक्षण किया जा सकता है। किसी के अपने अनुभवों के बारे में (मेरे दाँत में दर्द है, मुझे दर्द महसूस होता है), यह कहना बेहतर होगा कि किसी को इसे सत्यापित करने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि इसे आत्मनिरीक्षण से पुष्टि करता है कि स्वयं को आश्वस्त करता है कि किसी को दर्द महसूस होता है और इस प्रकार जब हम स्वयं के अनुभवों के अलावा किसी अन्य चीज के बारे में कथन का सामना करते हैं तो हम सत्यापन के बारे में बात करते हैं, जब हमें कुछ प्रक्रियाओं के द्वारा पता लगाना है कि कथन सत्य है।

ग) अनंत या अनिश्चित सीमा के साथ कथन को कैसे सत्यापित किया जा सकता है?

उदाहरण के लिए, "सभी कौओं का रंग काला है।"

कौओं की अनंत संख्या नहीं है, लेकिन अवसर खुले हैं। इसके अतिरिक्त, कोई भविष्य के कौओं या सभी कौओं की जाँच भी नहीं कर सकता जोकि उसके जन्म से पहले जिंदा थे या मर चुके थे।

घ) कथनों को एक छोटा लेकिन विशेष वर्ग है जिसकी वास्तविकता का नकारात्मक की तुलना में सकारात्मक में एक अलग स्थिति है।

एक कथन पर ध्यान करें, "पृथ्वी तब भी अस्तित्व में रहेगी, चाहे जीवित चीजें इस पर मौजूद नहीं होंगी।"

PDF Compressor Free Version

कोई भी इंसान इस कथन को सत्यापित नहीं कर सकता, क्योंकि कोई भी इसकी पुष्टि करने के लिए जिंदा नहीं रहेगा। फिर भी हम जानते हैं कि कथन का अर्थ क्या है और इसकी सच्चाई के बारे में अनुमान लगा सकते हैं। हम इस पर रहने वाली चीजों के बिना पृथ्वी की तस्वीर खींच सकते हैं। इसी तर्कसंगत रूप से सत्यापित करना असंभव है, क्योंकि सत्यापित करने के लिए कोई भी नहीं होगा। कुछ मामलों में किसी चीज का होना (वर्तमान) या घटित होना आवश्यक है; लेकिन यह सत्यापित नहीं हो सकते हैं। सत्यापन वह है, जो हम करते हैं, और इसकी पुष्टि करने के लिए किसी की उपस्थिति की आवश्यकता होती है।

(i) पुष्टि करना (Confirmability)

ऐसी कठिनाइयों को देखते हुए, हम सत्यापन की बजाय पुष्टि की बात करते हैं। उदाहरण के लिए, कोई यह सत्यापन नहीं कर सकता है कि "सभी कौवें काले हैं।" लेकिन कोई भी हजारों कौओं की जाँच करके और उन सभी को काला होने के लिए खोज कर इसकी पुष्टि कर सकता है। कोई यह सत्यापित नहीं कर सकता है कि किसी दिन पृथ्वी पर कोई जीवन नहीं रहेगा, परंतु कोई यह सुनिश्चित करके यह पुष्टि कर सकता है कि निर्जीव चीजें, जीवित चीजों के मरने के बाद भी अस्तित्व में रहती हैं और यह निष्कर्ष निकलता है कि जब सूर्य की गर्मी और प्रकाश समाप्त हो जाएगा, तब पृथ्वी जीवन का समर्थन करने के लिए बहुत ठंडी हो जाएगी। यह हम आसानी से देख सकते हैं कि हम प्रकृति के नियमों की पुष्टि कैसे कर लेते हैं (सूर्य पूर्व में उगता है, पानी 212°F पर उबलता है) और उन्हें हम सत्यापित करने की नहीं सोचते।

पुष्टि करने में, इसकी कुछ विशेष समस्याएँ भी सम्मिलित हैं। मुझे कैसे पता चलेगा कि यह कौआ काला है, यह पुष्टि है कि "सभी कौअे काले हैं" जब तक मैं पहले से ही नहीं जानती कि "सभी कौवें काले हैं" का क्या अर्थ है? अगर किसी को पहले से ही पता नहीं है कि कथन का अर्थ क्या है वह उसकी नहीं कर सकता पुष्टि इसका अर्थ यह है कि:

क) किसी को यह पता होना चाहिए कि "पी" एक तार्किक रूप से संभावित स्थिति का वर्णन करता है, इससे पहले कि कोई यह जान सकता है कि इसका परीक्षण करना तार्किक रूप से संभव है या नहीं।

क्या "पी" तार्किक रूप से संभव है, एक प्राक्अनुभव ज्ञान है कि क्या इसका परीक्षण करना तार्किक रूप से संभव है या नहीं। कौन सा अवलोकन, कथन को प्रमाणित करेंगे, इससे पहले कथन का अर्थ पता होना चाहिए। वाक्य का क्या अर्थ है यह जानना प्राथमिकता है, इसे कैसे सत्यापित करना है यह जानना, इसका अर्थ जानने का एक परिणाम है। निष्कर्ष में हम यह कह सकते हैं कि वास्तविकता के तौर पर यथार्थता या पुष्टि करना मानदंड पर्याप्त नहीं होगा:

i) इसमें विश्लेषणात्मक कथनों को सम्मिलित नहीं किया जाएगा, क्योंकि ये पूरी दुनिया के अवलोकन के द्वारा सत्यापित नहीं हैं।

ii) यह ग़ैर–स्वीकारात्मक वाक्य, जैसे कि प्रश्न, आदेशात्मक और विस्मयादिबोधक को सम्मिलित नहीं करेगा। चूँकि ये किसी भी चीज पर जोर नहीं डालते हैं, इसलिए ऐसा कुछ भी नहीं है जो सच हो सकता है या गलत हो सकता है।

iii) इसमें अपने स्वयं के अनुभवों के बारे में कथन सम्मिलित नहीं होंगे, क्योंकि ये "सत्यापन" के किसी भी आसानी से सहज–ज्ञान युक्त अर्थ में सत्यापित नहीं हैं।

PDF Compressor Free Version

iv) इसमें "यह अच्छा है" या "यह प्रशंसात्मक है" जैसे कथन सम्मिलित नहीं होंगे जोकि एक पूरी तरह से भिन्न क्रम के हैं। वे मूल्य विवरण हैं।

v) यह आध्यात्मिक विवरणों को सम्मिलित नहीं करेगा। एकमात्र ऐसा क्षेत्र जिसमें सत्यापन या पुष्टिकरण योग्य है, व्यावहारिक वक्तव्य के संदर्भ में, जैसे – दैनिक जीवन और विज्ञान में बनाया गया।

(ii) निराकरण

ज्ञान जो कानूनों या सिद्धान्तों के रूप में व्यक्त किया जाता है, सिद्धान्त के साथ एक घटना की अयोग्यता के आधार पर खारिज किया जा सकता है। लगभग प्रत्येक सिद्धान्त के लिए पुष्टिकरण या सत्यापन प्राप्त करना आसान है – अगर हम पुष्टिकरण को देखते हैं तो उन पर केवल तभी भरोसा करना चाहिए, जब वे जोखिम भरी भविष्यवाणियों का परिणाम हो, यानि जो सिद्धान्तिक रूप से प्रबुद्ध हो। जब कोई प्रसंग, घटना, सिद्धान्त के साथ असंगत है, तो इसका खंडन किया जा सकता है। साक्ष्य की पुष्टि नहीं की जानी चाहिए जब तक कि सिद्धान्त की वास्तविक जाँच का परिणाम न हों। और इसका अर्थ है कि सिद्धान्त को गलत साबित करने के लिए एक गंभीर लेकिन असफल प्रयास के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है (साक्ष्य संज्ञान के लिए मामलों में)।

एक सिद्धान्त का हर वास्तविक परीक्षण इसे गलत सिद्ध करने या इसे ख़ारिज करने का प्रयास है। परीक्षण योग्यता गलत सिद्ध करने की योग्यता है। लेकिन वे परीक्षण योग्यता की सीमा है। कुछ सिद्धान्त अधिक परीक्षण योग्य हैं, दूसरों की तुलना में निराकरण के लिए अधिक स्पष्ट।

अपने क्लासिक वर्क "कन्जेन्चर्स एंड रिफ्युटेशंस" में पॉपर ने सिद्धान्तों के उत्कृष्ट उदाहरणों के रूप में, मॉर्क्स की समाज के सिद्धान्त और फ्रायड के मानव व्यवहार के सिद्धान्त को प्रयोग किया, जो इस महत्वपूर्ण मानदंड को पूरा करने में विफल रहे। अगर कोई राजनीतिक घटना "क" होती है, (या मानव व्यवहार "ख" प्रदर्शित होता है), तो मार्क्स (या फ्रायड) एक तैयार स्पष्टीकरण प्रदान करते हैं। अगर "क" या "ख" नहीं होते हैं जब उनकी आशा थी, तो (सम्बन्धित पाठ का एक अलग अध्याय और कविता का उपयोग करके) उसे समझाया जा सकता है। ऐसे सिद्धान्त निश्चित भविष्यवाणी, पूर्वानुमान, बनाने में असमर्थ और इसलिए झूठे होते हैं। सब कुछ समझाने की कोशिश में, वे कुछ भी नहीं समझाते।

लेकिन हम निर्णायक प्रमाण प्राप्त नहीं कर सकते हैं कि कोई और आयाम नहीं हैं। हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि अब तक जो कुछ हमने देखा है, केवल तीन स्थानिक आयामों को मानने वाले कानूनों के संतोषजनक ढंग से समझाया जा सकता है।

यदि बुनियादी धारणा सही है, तो निष्कर्ष जोकि निगमनात्मकता के बाद होता है, वह भी सच होगा। यदि धारणा गलत है, या गलत आधार पर निर्मित है, जो निष्कर्ष होगा, वह गलत होगा। हालाँकि, मूल धारणा से एक सच्चे मामले को निकालने का नियम वैध होना चाहिए। ऐसे मामले हैं जहाँ प्रस्ताव सही हैं, लेकिन एक विशेष मामले का पता लगाना संभव नहीं है, क्योंकि प्रत्येक प्रस्ताव स्वतंत्र रूप से एक वास्तविक मामले के रूप में खड़े हो सकते हैं।

धारणा को पूरी तरह से कभी भी सिद्ध नहीं किया जा सकता (जैसे कि, तीन आयामी दुनिया और कुछ प्राकृतिक घटनाओं से सम्बन्धित अवलोकनों की अनन्तता)।

PDF Compressor Free Version

1.9 सारांश

ज्ञानमीमांसा दर्शनशास्त्र की वह शाखा है, जो सिद्धान्तों स्रोतों और ज्ञान की वैधता से सम्बन्धित है। ज्ञान प्रस्तावों के रूप में व्यक्त किया जाता है। किसी प्रस्ताव की सत्यता को जानने के लिए, प्रस्तावों में सम्मिलित शब्दों और शब्दों के अंतर्निहित अवधारणाओं का पता होना चाहिए। एक प्रस्ताव को जानने के लिए कुछ आवश्यकताएँ हैं, अर्थात् क) "पी" सच होना चाहिए, ख) हम मानते हैं कि "पी" सत्य है और ग) पी पर विश्वास करने का कोई प्रमाण या कारण है। ज्ञान को प्राप्त करने के तरीकों के आधार पर इसे मुख्य तौर पर तीन विभागों में वर्गीकृत किया गया है। वे हैं: क) प्राक्अनुभव ज्ञान, ख) अनुभवाश्रित ज्ञान और ग) अनुभवजन्य ज्ञान।

जानने के निम्नलिखित स्रोत हैं: चेतना/इन्द्रियों से अनुभव, कारण, अधिकार, अंतर्ज्ञान, विश्वास और रहस्योद्घाटन। इनमें से, इन्द्रियों के अनुभव के और तर्क के माध्यम से प्राप्त ज्ञान, ज्ञान का सबसे विश्वसनीय स्रोत माना जाता था।

ज्ञान, जो मनुष्य को जानने के विभिन्न तरीकों के माध्यम से प्राप्त होता है, इसमें भौतिक घटना से सम्बन्धित विभिन्न अवधारणाएँ और तथ्य सम्मिलित हैं और मानव जीवन में प्राकृतिक घटनाओं के निरंतर अवलोकन के माध्यम से विकसित हुए हैं। सही ज्ञान अपनी व्याख्या, सत्यापन और स्पष्टीकरण प्रदान करता है। कानून और सिद्धान्त प्रकृति में घटनाओं की व्याख्या प्रदान करते हैं। स्पष्टीकरण एक पदानुक्रम बनाते हैं जहाँ सबसे कम स्तर पर तथ्यों को सिद्धान्तों द्वारा समझाया जाता है, और प्रत्येक सिद्धान्त को बदले में सिद्धान्तों द्वारा तर्कसंगत तरीके से उच्च स्तर पर समझाया जाता है। इसकी वैधता के लिए ज्ञान का परीक्षण करने के लिए सत्यापन और पुष्टिकरण मानदंड लागू किया गया है। अवधारणाओं, तथ्यों, सामान्यीकरण, कानूनों और सिद्धान्तों की अपनी विशिष्ट विशेषताओं के साथ ज्ञान विभिन्न विषयों के तहत विभिन्न प्रकार के ज्ञान (एक प्राथमिक, एक अनुमानित और व्यक्तिगत ज्ञान) में संरचित हो जाते हैं। यह पाठ्यक्रम के नियोजन और अनुशासन के तरीकों और ज्ञानक्षेत्र की समझ के लिए महान निहितार्थ है।

1.10 इकाई के अंत में अभ्यास

1. माध्यमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम का विश्लेषण कीजिए और प्राक्अनुभव ज्ञान और अनुभवश्रित ज्ञान के उदाहरणों की पहचान करें।

2 माध्यमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम से कुछ उदाहरण दें जहाँ–जहाँ सत्यापन, पुष्टिकरण और खंडन का उपयोग ज्ञान की वैधता स्थापित मान्य/वैध करने के लिए किया जा सकता है।

1.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) आपसे शिक्षा की अवधारणा के बारे में अपनी समझ से लिखने की अपेक्षा है।

2) एक प्राक्अनुभव ज्ञान में वह ज्ञान सम्मिलित होता है जिसकी सच्चाई या गलती का अनुभव करने के लिए पहले या बिना आधार पर निर्णय लिया जा सकता है, जबकि अनुभवाश्रित ज्ञान, अवलोकन और अनुभव पर आधारित है और यह सटीक अवलोकन और सटीक विवरण पर जोर देता है।

PDF Compressor Free Version

3) वास्तव में स्रोत के रूप में कारण तर्क से ज्ञान उत्पन्न करने में सहायता करता है। इसमें प्रेरण और तर्कसंगत निगमनात्मक तर्क दोनों सम्मिलित हैं।

4) ज्ञान की सामाजिक प्रकृति यह वर्णन करती है कि ज्ञान का विकास सामाजिक तौर पर साझा समझ से, समाज के सामुदायिक सदस्यों के सामूहिक प्रयास से होता है।

5) जानने की प्रक्रिया में, ज्ञाता का सम्बन्ध, ज्ञात के साथ संपर्क से आरंभ होता है। ज्ञाता, ज्ञान को प्राप्त और विकास करने के लिए, अपनी इन्द्रियों का प्रयोग करके वस्तु के साथ संपर्क करता है।

6) अमूर्त ज्ञान उन विचारों या अवधारणाओं को संदर्भित करता है जिनका कोई भौतिक संदर्भ नहीं होता है, जबकि मूर्त ज्ञान उन वस्तुओं या घटनाओं के बारे में ज्ञान को संदर्भित करता है जो इन्द्रियों के अनुभव के लिए उपलब्ध हैं।

7) यह इसलिए है, क्योंकि इस प्रकार का ज्ञान किसी व्यक्ति द्वारा दैनिक अनुभव और इसके पर्यावरण पर शिक्षाप्रद प्रभाव और संसाधनों से प्राप्त किया जाता है।

8) क्योंकि यह भाषा है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने आप और दूसरों के साथ अर्थ साझा करता है।

1.12 संदर्भ पुस्तकें एवं सुझाई गई अध्ययन सामग्री

बौमान, जेड, *कम्युनिटी: सिकिंग सेफ्टी इन एन इनस्कियोर वर्ल्ड*, कैम्ब्रिजः पॉलिटी प्रेस, 2001।

हर्स्ट, पी. (1974) *नॉलेज एंड कैरीकुलम*, इंटरनेशनल लाइब्रेरी ऑफ फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन, लंदनः रूटलेज और केगल पॉल लिमिटेड।

होस्पर्स, जे. (1973): *एन इंट्रोडक्शन टू फिलिसोफिकल एनालिसिस*, (संशोधित संस्करण), प्रेंटिस हॉल इंक, एंगलवुड क्लिफ्सः एनजे।

इग्नू (2005). *एजुकेशनः नेचर एंड पर्पजेस* (एनईएस 012), खंड 1 और 2, मास्टर ऑफ एजुकेशन, इग्नू, नई दिल्ली।

केमेनी, जी जे. (1959): *ए फिलॉसॉफर लुक्स एट साईंस*, प्रिंसटनः डी. वान, नोस्ट्रेंड कंपनी इंक।

पाईवो, ए. (1986): *मेंटल रिप्रेजेंटेशन्सः ए ड्यूल कोड एप्रोच*, ऑक्सफोर्ड, इंग्लैंड, ऑक्सफोर्ट यूनिवर्सिटी प्रेस।

विलिस, के. (2005) : *थ्योरिज एंड प्रैक्टिसेज ऑफ डेवलमेंट*, लंदन एंड न्यूयॉर्क : रूथलेज।

यीडोन, सी. (2004) : *आइडेन्टटी एंड कल्चरः नरेटिव्स ऑफ डिफरेन्स एंड बिलॉगिंग*, मिल्टन केन्सः ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस।

PDF Compressor Free Version

इकाई 2 जानने की प्रक्रिया

संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 जानने की प्रक्रिया

2.4 जानने के तरीके

2.5 ज्ञान के सहयोगपूर्ण निर्माण स्थल के रूप में कक्षा–कक्ष

2.6 ज्ञान की रचना में शिक्षकों की भूमिका

2.7 कक्षाकक्षों में ज्ञान की रचना के प्रोत्साहन की विधियां

2.8 सारांश

2.9 इकाई के अंत में अभ्यास

2.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.11 संदर्भ पुस्तकें एवं सुझाई गई अध्ययन सामग्री

2.1 प्रस्तावना

नए विचारों और सूझबूझ के उत्पादन के लिए हम अपने आपको ज्ञान रचना की प्रक्रिया में निरंतर लगना पड़ता है। जब हम नए विचारों के निर्माण तथा उनकी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए, तब हम आलोचनात्मक और सृजनशील चिंतन में अधिक कुशल बन सकते हैं। अतः यह महत्वपूर्ण है कि हमारे अधिगमकर्त्ता, नए विचारों के निर्माण में चिन्तनपूर्वक अपने को व्यस्त रखे। इस खण्ड की पिछली इकाई में आपने ज्ञान संप्रत्यय और ज्ञान के विभिन्न प्रकारों के बारे में अध्ययन किया और समझा, अभी यह महत्वपूर्ण है कि जानने के तरीकों को भी समझ जाए।

यह इकाई में हम ज्ञान रचना तथा जानने की प्रक्रिया की महत्ता पर प्रकाश डालेंगे। एक अध्यापक से यह अपेक्षित है कि वह अधिगमकर्त्ता को प्रशिक्षित करने में तथा ज्ञान के आलोचनात्मक मूल्यांकन में सहायता करें ताकि वे समझ पाए कि ज्ञान के भिन्न प्रकारों का आंकलन अलग–अलग तरीकों से होता है। यह उनके नए ज्ञान, विशिष्ट ज्ञान के मुद्दों से जुड़ा है जो उसका मूल्यांकन करने की अनुमति प्रदान करेगा। अधिगमकर्त्ता को विभिन्न तरीकों द्वारा जानने की प्रक्रिया में वांछित किया जा सकता, जिसका वर्णन इस इकाई में किया जाएगा।

इकाई के अन्तिम भाग में उन विभिन्न पद्धतियों की चर्चा की जाएगी जो अध्यापक के कक्षा में ज्ञान रचना में अपना सकता है।

PDF Compressor Free Version

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप:

- जानने की प्रक्रिया का वर्णन कर सकेंगे;
- जानने के भिन्न तरीकों का व्याख्या कर सकेंगे;
- कक्षा में ज्ञान रचना की प्रक्रिया की चर्चा कर सकेंगे;
- ज्ञान के निर्माण में अध्यापक की भूमिका की चर्चा कर सकेंगे; और
- कक्षा में ज्ञान रचना के भिन्न तरीकों की व्याख्या कर सकेंगे।

2.3 जानने की प्रक्रिया

आप इस बात से सहमत होंगे कि आज की दुनिया में ज्ञान, उसकी रचना करने की क्षमता एवं ज्ञान को उपयोग करना किसी भी व्यक्ति के लिए लाभदायक है। व्यक्ति के ज्ञान का विस्तार उसके संसार के प्रति पारस्परिक व्यवहार से बनता है। हर एक का एक–दूसरे के साथ पारस्परिक ध्यान का वास्तविक प्रतिबिम्ब है। यह प्रतिभागी के एक समान भिन्न विषय का दृष्टिकोण को इंगित करता है। आप सहमत होंगे कि आज के संसार में ज्ञान और ज्ञान को उपार्जित तथा उपयोग करना व्यक्ति के लिए एक लाभदायक समझा जाता है। ज्ञान का उपार्जन एक द्वंद्वात्मक प्रक्रिया है जोकि व्यक्ति के वातावरण के साथ पारस्परिक सम्बन्ध को पद्धतिबद्ध तरीके से सम्मिलित करती है।

बेलज और अरौज (2006) के अनुसार, इस के कई लाभ हैं, पहला जब अधिगमकर्त्ता अपने विचार को साझा करने में अधिक हिस्सेदारी होती है तब वे अधिगम प्रक्रिया में ज्यादा सम्मिलित होते है। और इसलिए वे अवधारणाओं को विकसित करने में अच्छे हो जाते है। दूसरा, सहकारी समूह में काम व्यक्तिगत काम की तुलना में अधिक उत्पादक हो सकता है। तीसरा समूह उत्पन्न ज्ञान, व्यक्ति को समझने के लिए एक संसाधन हो सकता है और इसके वितरित भी, अन्त में, प्याजे के विचार के समान, बातचीत एक सार्थक संवाद हो सकता है जिससे विद्यार्थी भिन्न दृष्टिकोणों के प्रकाश मे स्वयं अपने दृष्टिकोण को अपने भीतर सशोधित कर सकता है।

ज्ञान उपार्जन एक घुमावदार प्रक्रिया है जो कि एक दूसरे के विपरीत सम्प्रत्यय के साथ चलती हैं जैसे कि व्यवस्था और अव्यवस्था, वृहद और सूक्ष्म, पूर्ण और अंश, मस्तिष्क और शरीर, अस्पष्ट तथा स्पष्ट, आत्म और अन्य, निगमन तथा आगमन और सृजनशील और सक्षम। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि ज्ञान रचना एक उत्कृष्ट प्रक्रिया है, जिसमें (व्यक्ति, समूह, संस्थान) पुरानी सीमाओं के परे जाकर नए ज्ञान अर्जित करते है। इस प्रक्रिया में नए सम्प्रत्यय और संरचनाएँ निर्मित होती हैं जोकि ज्ञान अर्जन में संभावनाओं के साथ बाधाएँ उत्पन्न करती है। अतः ज्ञान एक चक्रिय प्रक्रिया है।

आपने पिछली इकाई में जाना कि ज्ञान प्रासंगित होता है, जिसका अर्थ है कि समान वास्तविकताएँ अलग–अलग तरीकों से देखी जा सकती है, जोकि देखने वाले के प्रसंग पर निर्भर करती है। इसका अर्थ है कि ज्ञान रूप में, कोई भी अपने संदर्भ से स्वतंत्र नहीं हो सकता। सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ व्यक्ति के लिए अनिवार्य है, क्योंकि यही संदर्भ व्यक्ति को बाहरीकरण अर्थ निकालने में सहायक होते हैं। इसी लिए वातावरण के साथ सीमित अंतःक्रिया एवं व्यक्तिगत ज्ञानवादी भ्रांतियों को जन्म दे सकता है। इसलिए शिक्षण को इस बात से संबंधित होना चाहिए कि हम कैसे विचारों

PDF Compressor Free Version

के विकास की प्रक्रिया को समझते है और कैसे उस प्रकिया में अपने विचारों को सम्मिलित करते हैं।

यह प्रश्नोत्तर के माध्यम से पूरा किया जा सकता है। यह क्यों हुआ? इस प्रकार के प्रश्न हमारे चिन्तन को प्रेरित करते हैं और हमारे ऐसे समग्र विचारों का आह्वान करती है जिससे हमारे संदर्भ और विचार हमारी समझ के अन्तर को कम करते हैं।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि ज्ञान उपार्जन में व्यक्ति वास्तविकता की पूरी तस्वीर का निर्माण उन लोगों के साथ अंतःक्रिया से करता है जिनके विभिन्न दृष्टिकोण हो। यह भी समझना आवश्यक हे कि ज्ञान उपार्जन के लिए व्यक्ति और समाज के बीच परस्पर अंतःक्रिया होनी चाहिए। हमारा वातावरण के साथ अंतःक्रिया हमारे ज्ञान की वृद्धि करती है। जिसमें स्पष्ट और अस्पष्ट प्रक्रिया सम्मिलित हैं।

जानने की प्रक्रिया एक व्यक्तिगत प्रक्रिया है जो अनुभव और अनजाने प्रासंगिक संदर्भों से प्रभावित होती है।। इसके तीन पहलू है : ज्ञाता (प्रतिभागी की चेतना) ज्ञात (अध्ययन का क्षेत्र) और जानने की प्रक्रिया (जो ज्ञाता को ज्ञात से जोड़ता है)।

ज्ञानमीमांसा के कई प्रारूप कार्य करते हैं, जो ज्ञान और ज्ञान को जानने की प्रक्रिया पर अपनी–अपनी समझ देते हैं। जिनका उद्देश्य ज्ञान के सम्बन्ध संख्यात्मक को प्रस्तावित करता है। उदाहरण के लिए, कोई प्रत्यक्षवादी अवधारणा में ज्ञान को मापने योग्य, परीक्षण योग्य रूप से देखा जाता है परंतु यदि हम शिक्षा के अर्थ को देखें, तब यह अधिगमकर्ताओं के विभिन्न संप्रत्यय को समझने में मदद करता है, तब हम ज्ञान की संख्या तथा मापन नहीं थोप सकते।

यथार्थवाद के अनुसार, हम किसी भी चीज का अर्थ अपनी ज्ञान इन्द्रियों से लगाते हैं। इसका अर्थ है कि ये विश्वास करते हैं कि ज्ञान प्रत्यक्ष रूप से चेतना बोध से सम्बन्धित है। अतः यहाँ प्रत्यक्ष ज्ञान सत्य के समान और इसे सार्वभौमिक रूप से ग्रहण किया जाता है। जानने की इस विधि के उपयोग करने से, व्यक्ति जानने और स्पष्टीकरण सीमित करता हैं। इसके विपरित आदर्शवाद मानता है कि वास्तविकता व्यक्ति के मस्तिष्क में विद्यमान है। वे विविधता और वैयतिकता को मानता है परंतु समझ विकसित करने में विश्वास नहीं रखता। ज्ञाता की जागरूकता का स्तर ज्ञान की प्रक्रिया और ज्ञान की प्रकृति को निर्धारित करता है। शिक्षा, ज्ञाता को मस्तिष्क के उच्च स्तरों का उपयागी और पूर्ण ज्ञान को पाने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए। इसलिए अधिगमकर्त्ता को इनके बारे में जागरूक होना चाहिए और अपनी सोच को ऐसे उदिप्त करना चाहिए कि जिससे वह दुनिया की समझ के आधार पर अपने ज्ञान की रचना कर सके। अतः दुनिया के विषय अथवा संप्रत्यय के बारे में ज्ञान एक चिंतनशील प्रक्रिया होनी चाहिए और प्रासंगिक भी।

कोई भी सिद्धान्त जो जानने की प्रक्रिया को परिभाषित करने का प्रयत्न करता है, उसे यह वर्णन करना चाहिए कि कैसे सूचनाओं को अधिगम के स्थान पर प्राप्त, संचित और पुनः प्राप्त किया जाता है। जानने की शुरूआत अपने निजी क्षेत्र और समझ के प्रत्यक्षीकरण से होती है। जिसमें साथ आंतरिक एंव बाहर उत्तेजनाएं भी शामिल होती है भाषा के अभिग्रहण के साथ और स्वनिर्मित अस्तित्वों को हम संग्रहित, याद करते हैं, उनकी कल्पना करते हैं और उन्हें अधिकतम प्रासंगिकता के साथ साझा करते हैं।

जानने वाले की जागरूकता का स्तर जानने की प्रक्रिया को इंगित करता है और साथ ही ज्ञान प्राप्ति की प्रकृति को भी इंगित करता है। शिक्षा जानने वाले को प्रशिक्षित करती है ताकि जानने वाला अपने मस्तिष्क में अधिक से अधिक ज्ञान का भण्डारण कर सकें। जानना और जानने वाला चेतन अन्तर्ज्ञान के रूप में देखा जा सकता है। विचार और क्रिया इसी आधार पर ज्यादा प्रभावशाली होते हैं।

PDF Compressor Free Version

जानने की प्रक्रिया एक व्यक्तिगत कार्य है क्योंकि व्यक्तिगत कार्य अनुभव और अनजाने में प्रांसगिक संकेतों से प्रभावित होता है। ज्ञान के तीन पहलू हैं, ज्ञाता (भागीदार की चेतना के रूप में) जानने वाली वस्तु (अध्यापन का क्षेत्र) और ज्ञान (जानने की प्रक्रिया) आधुनिक शिक्षा केवल जानने से, अध्ययन क्षेत्र पर तक ही केन्द्रित है, जिसमें ज्ञान ज्ञाता हो और जानने की प्रक्रिया का कुछ भाग सम्मिलित नहीं है।

2.4 जानने के तरीके

इस इकाई में आपने जाना कि ज्ञान प्राप्ति के कितने भिन्न–भिन्न तरीके हैं, जिसमें प्रत्यक्षिकरण, कारण, तर्क और भाषा सम्मिलित हैं। एक बच्चा शैशव से पूर्व बाल्यावस्था तक स्वाभाविक रूप से अपने इन्द्रियों द्वारा ज्ञान का प्रत्यक्षिकरण करता है। बाल्यकाल के अन्तिम चरण के आने पर ही बालक ताकि तीनों तरीकों द्वारा ज्ञान को जानना शुरु करता है। वयस्क अवस्था मे, अधिगमकर्त्ता, ज्ञान को जानने के चारों तरीकों का उपयोग करने लगता है। यहाँ विचारों को आकार देने में भाषा की भूमिका पर शायद ही ध्यान जाता है क्योंकि यह आसानी से आ जाता है। अन्त में, एक अधिक तरह से निर्मित तर्क बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण में भी महसूस किया जा सकता है।

एक अध्यापक से आशा की जाती है कि वह अधिगमकर्त्ता को ज्ञान के आलोचनात्मक मूल्यांकन में उन्हें प्रशिक्षित करे और उनकी सहायता करें ताकि वह देख सकें कि कैसे भिन्न प्रकार के ज्ञान को अलग–अलग तरीकों से मूल्यांकित किया जाता है। यह उन्हें नए ज्ञान मूल्यांकित करने की अनुमति प्रदान करेगा, क्योंकि वह विशिष्ट ज्ञान के मुद्दों से संबंधित है। अधिगमकर्त्ता को जानने की प्रक्रिया के विभिन्न तरीकों से अनुभव प्राप्त कर सकता है, आओ इनका विस्तृत वर्णन करें:

1) इन्द्रिय प्रत्यक्षिकरण

प्रत्यक्षिकरण एक सक्रिय चयनात्मक और व्याख्यात्मक अभिलेखन की प्रक्रिया है जो बाहरी दुनिया के प्रति इन्द्रिय प्रत्यक्षिकरण के द्वारा हमें जागरूक बनाती है। यह इन्द्रिय अनुभव मुख्य रूप से पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ, स्पर्श, गंध, स्वाद, श्रवण और दृष्टि के माध्यम से प्राप्त की जाती हैं। उदाहरण के लिए, प्रकाश सतह से परावर्तित होता है, हमारी आँखों को ऐसी मानसिक संरचना बनाने के लिए बुद्वित करता है जिसे हम प्रत्यक्ष वस्तु कहते हैं। यह निर्माण मस्तिष्क की आन्तरिक संरचना पर निर्भर है। दूसरे शब्दों में हम दुनिया को जिस रूप में देखते हैं उसे ही सत्य मानते हैं। लेकिन इस प्रकार यह जानने का सबसे बुनियादी स्रोत है पर कभी–कभी यह बहुत विश्वसनीय स्रोत नहीं होता।

यहाँ यह जानना आवश्यक है कि प्रत्यक्षिकरण और संवेदन अलग है। संवेदना एक साधारण इन्द्रिजन्य अनुभव है जो हमें गुणों को विशेषताओं जैसे रंग, आवाज, स्वाद, गर्मी, सर्दी इत्यादि को जानने में सहायता करती है। यद्यपि प्रत्यक्षिकरण, सरल तत्वों का ऐसा जटिल निर्माण है जो अर्थपूर्ण अनुभवों से मिल कर बनता है।

इन्द्रिय प्रत्यक्षिकरण एक व्यक्तिपरक गतिविधि है, इसलिए वह व्यक्ति की सहज क्षमताओं पर निर्भर करती है। हमारा प्रत्यक्षिकरण, हमारी शारीरिक स्थिति, प्रोषको और मानसिक स्थिति के द्वारा सीमांकित होता है।

लाभः

- ज्ञान प्रत्यक्ष तत्वों पर आधारित होता है। अतः यह निष्पक्ष है।
- इसके द्वारा मिला ज्ञान, दूसरों के द्वारा आसानी से जाँच और सत्यापित किया जा सकता है।

PDF Compressor Free Version

हानियाँ

- हर घटना को प्रत्यक्ष रूप में नहीं जा सकता।
- हमारी इन्द्रियों की एक सीमा है। अतः आसानी से भ्रमित होती है। (जैसे प्रकाश संबंधित भ्रम)।
- वस्तुनिष्ठता पर जोर, विषयपरकता के प्रभावों को ढंक सकता है।

2) भाषा

भाषा एक व्यक्ति से दूसरे तक ज्ञान पहुँचाने के माध्यम के रूप में कार्य करती है। इसमें वे सहमति और परंपरागत अर्थ शामिल है जो संचार उद्देश्य, विचारों के निर्माण ज्ञान के भंडारण या विचारों के माध्यम के नियम अनुसार है। यह उन सभी ज्ञान एकीकृत करता है जो विभिन्न स्थानों और अलग–अलग स्रोतों से मिले हैं। भाषा हमें ज्ञान को सुस्पष्ट रूप से बोलने और ज्ञान के विभिन्न आयामों को एकीकृत करने में मदद करता है।

ज्ञान को संप्रेषित करने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि भाषा वह संदर्भ देती है जिसमें ज्ञान का अर्थ और पुनर्संयोजना हो सके। जब एक सुसंगत तर्क प्रस्तुत किया जाता है तब वह हमारे ध्यान में जल्दी आता है बजाय के उस तर्क के जिसमें कोई तर्क या विवेक न हो।

भाषा जानने की प्रक्रिया को सुगम बनाता है, जिसका मतलब है जानने वाली प्रक्रिया में भाषा अहम भूमिका निभाती है। भाषा हमें अंतर और श्रेणियां बनाने में मदद करती है। डिस्कोर्स (Discourse) सिद्धात के अनुसार, भाषा वास्तविकता के निर्माण में उपयोग होती है। जानने की प्रक्रिया के दौरान, व्यक्ति अपनी सोच को सामाजिक अंतःक्रिया के द्वारा संशोधित करता है।

3) संवेग

संवेग हमारे विचारों का आकार देने में, व्यवहार को प्रभावित करने में और ज्ञान की प्राप्ति को गति देने में एक शक्तिशाली भूमिका निभाते हैं। यद्यपि, संवेग हमारे आत्म समझ तथा संसार को समझने की कुंजी होती है।

संवग और उनकी अभिव्यक्ति विभिन्न संस्कृतियों में भिन्न हैं। अतः वह ज्ञान, जो संवेगों के उपयोग से प्राप्त किया जाता है, वह विश्वसनीय नहीं हो सकता। यह व्यक्तिपरक और कम मापनीय होता है। यह ज्ञान रचना की प्रक्रिया में सहायता या बाधा दोनों पहुंचा जा सकता है। इसलिए संवेगों का प्रशिक्षण, सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण घटक है। सकारात्मक संवेगों को उत्पन्न करने से, ज्ञान के प्रसार में सहायता होती है। अध्यापक को ज्ञान से सम्बन्धित सकारात्मक भावनाओं का ज्ञाता में उत्पन्न करना चाहिए। जिसमें जिज्ञासा और उत्सुकता सबसे आवश्यक है।

4) तर्क

यदि आप तर्क को समझना चाहते हैं तो आपको यह समझना चाहिए कि यह तार्किक विगमन उपयोग करने की योग्यता है। यह हमें विचारों को शुरू करने से लेकर मान्य निष्कर्ष तक पहुंचने की अनुमति देता है। एक साधारण उदाहरण के तौर पर – आधार

PDF Compressor Free Version

वाक्य – रैक्स एक कुत्ता है। (कथन सभी कुत्तों के रोए होते हैं)। प्रश्न – क्या रेक्स रोएदार है? (याद रखे यह होना जरूरी नहीं है) वैध स्थिति – क्या रेक्स के रोए है। मान्य निष्कर्ष : हाँ, रेक्स के रोए है। इस तरह आधार से निष्कर्ष तक जाने को तार्किक निगमन कहते हैं। यद्यपि यह ध्यान देने योग्य है कि निष्कर्ष सत्य नहीं होते।

यह अन्य उदाहरण: आधार वाक्य 1 – सूरज आदमी है। आधार वाक्य 2 – प्रत्येक आदमी के आठ पैर हैं। प्रश्न: क्या पीटर के आठ पैर हैं? मान्य निष्कर्ष – हाँ, सूरज के आठ पैर हैं। यह सत्य नहीं भी हो सकता है क्योंकि सामान्यत: आदमी के दो पैर से अधिक नहीं होते। हालांकि, निषकर्ष अभी भी तार्किक रूप से वैध है क्योंकि यह दोनों कथनों से निकला है। हम यही तार्किक विगमन का उपयोग करते हैं। जब हम सामान्य वाक्यों जब (मानव और कुत्ता) का उपयोग करते हैं। आगमन में हम विशिष्ट उदाहरण को लेते हैं। उदाहरण के लिए आपने ध्यान दिया होगा ज्यादातर खिड़कियाँ शीशे से बनाई जाती हैं, हम निम्न सोपान के द्वारा समझ सकते हैं। :

सोपान – I – मैंने जो सारी खिड़कियाँ देखी है वह शीशे की बनी हैं।

सोपान – II – इसलिए तथापि सभी खिड़कियाँ शीशे से बनी है। आप यह अर्थ लगा सकते है क्योंकि आपने जो खिड़कियां देखी है सभी शीशे से बनी है तो सभी खिड़कियां शीशे से बनी होती है। कोई भी तरीका नहीं जो ये साबित कर सके कि सभी खिड़कियां शीशे से बनी है। यह विचार केवल अनुभव आधारित है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।
(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से तुलना कीजिए।।

1. जानने की प्रक्रिया में भाषा की भूमिका का वर्णन कीजिए।

....

....

....

2. ज्ञान कैसे यथार्थवाद से लिया गया है?

....

....

....

2.5 ज्ञान के सहयोगपूर्ण निर्माण स्थल के रूप में कक्षा–कक्ष

इससे पहले कि हम यह चर्चा करें कैसे कक्षा सहयोगीपूर्ण ज्ञान के निर्माण में सहयोग को बढ़ावा देती है। आइए, हम कक्षा में विभिन्न प्रकार के वार्तालापों के बारे में चर्चा करें। मरसर (2000) ने प्रस्तावित किया है कि वार्तालापों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है – अन्वेषणात्मक, संचयी, विवादात्मक। उनके अनुसार, अन्वेषणात्मक चर्चा एक दूसरे की मान्यताओं पर प्रश्न पूछने, दावों के कारणों की रूपरेखा बताता है, स्पष्ट मूल्यांकन और आलोचना करता है, प्रबोधन में व्यस्त रखता है। जब अधिगमकर्ता कक्षा

PDF Compressor Free Version

में चुनौतियों का सामना करता है तो वह तर्क एवं उसके विकल्प देता है और इस प्रक्रिया में अपनी समझ का पुनगर्ठन करता है उसे सुधारता हैं।

संचयी वार्तालाप, इसके विपरित तब उत्पन्न होता है जब अधिगमकर्त्ता अपनी साझा समझ इसके विपरित ज्ञान को सहमति से प्राप्त हुए ज्ञान द्वारा बनाता हैं। इस तरह का वार्तालाप में, आपसी सूझबूझ और तालमेल से ज्ञान का निर्माण होता है। अतः अधिगमकर्त्ता केवल एक–दूसरे के प्रति जवाबदेह होते हैं। संचयी वार्तालाप, को आप सहयोगी वार्तालाप के रूप में देखते हैं यदि हम दूसरों की बातों को महत्व प्रदान करें और इसमें शक्ति और नियंत्रण प्रदान करे जो इस वार्तालाप की विशेषता है।

विवादात्मक वार्तालाप, सामाजिक अंतःक्रिया का अत्यधिक बाधा प्रतिस्पर्धा का रूप है जिसमें दूसरे के दृष्टिकोणा की देखने की अनिच्छा होती है और केवल अपनी ही बात पर व्यक्ति दृढ़ रहता है। प्रतिभागियों की बातचीत की कमी उन्हें परिप्रेक्ष्य और अंतःदृष्टि प्राप्त करने में बाधित करता है।

विवादात्मक वार्तालाप की केन्द्रिय विशेषता, विपरीत गुण को पैदा करना होता है। विवादात्मक वार्तालाप में नकारात्मक, भावनात्मक वातावरण के कारण, प्रतिभागी को सक्रिय रूप से अपनी व्यक्तिगत पहचान को संरचित करते हैं और सामूहिक पहचान के गठन का विरोध करते हैं। सहयोगी भागीदारी तभी होती है जब, जो सामूहिक समझ को बढ़ाने में आवश्यक है।

उपर्युक्त चर्चा से, यह स्पष्ट है कि कक्षा में सहयोगी भागीदारी तब होती है जब अधिगमकर्त्ता एक दूसरे के विचारों को सामूहिक तर्क के साथ सम्मिलित करते हैं। एक विशिष्ट वार्तालाप जो सहभागी अंतःक्रिया में मदद करता है वह अन्वेषणात्मक वार्तालाप कहलाता है। एक अध्यापक के रूप में हमें इसे अपनी कक्षा में ज्ञान के निर्माण के लिए बढ़ावा देना चाहिए।

यह देखा गया है कि अधिगमकर्त्ता ज्यादातर ज्ञान की रचना, एक सक्रिय सामाजिक कक्षा में प्रभावशाली ढंग से करता है, जहाँ वह अपनी समझ का निर्माण दूसरों से अंतःक्रिया कर, विविध दृष्टिकोणों को समझ कर, करता है। अतः अगर हम अधिगमकर्ताओं समूहों में काम करने के लिए प्रोत्साहित करे, तो वहाँ सीखना में बेहतर सहयोग होगा। बेकर (2002) ने सहयोग को परीभाषित करते हुए कहा यह 'सहयोग, समस्या समाधान का सममित और पंक्तिबद्ध रूप है।' यानि समस्या समाधान में सबकी बराबर भूमिका होती है।

स्टहल (2004) व्यक्त करते हैं कि सहयोगपूर्ण ज्ञान की रचना एक चक्रीय प्रक्रिया होती है जबकि व्यक्ति की अंतर्निहित समझ घटना, अवधारणाओं या उपलब्ध वस्तुगत उपकरणों से संबंधित तथा विमर्श के अंतर्गत प्रकरण की समझ हेतु प्रासंगिक होती है। उनके अनुसार अंतर्निहित ज्ञान का अर्थ है कि व्यक्तियों का वह ज्ञान जो उनमें निहित होता है परंतु शब्दों में शायद व्यक्त न कर पाए। उदाहरणार्थ, अंतर्निहित ज्ञान में कुछ भौतिक उपकरणों के उपयोग या विश्व एवं अन्य लोगों तथा विमर्श से संबंधित वस्तुओं के विषय में अव्यक्त पृष्ठभूमीय ज्ञान को सम्मिलित कर सकता है।

सहयोगपूर्ण ज्ञान रचना की प्रक्रिया के दौरान, यह अंतर्निहित ज्ञान, व्याख्या की प्रक्रिया में स्पष्ट प्रकट तथा सुलझाया जाता है तथा परिणामस्वरूप अर्थ की साझा समझ का निर्माण होता है। जैसे विमर्श आगे बढ़ता है किसी अवधारणा के विषय में स्पष्टतः व्यक्त होता है तथा साझा समझ ग्रहण होता है। जिसे आगामी समझ के विकास में संसाधन के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

PDF Compressor Free Version

इस प्रकार आप यहां से यह ग्रहण कर सकते हैं कि अधिगम एक सक्रिय प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जिसमें केवल शिक्षक से विद्यार्थी को ज्ञान ग्रहण के बजाए नवीन ज्ञान की रचना करता है। इस प्रक्रिया के दौरान शिक्षार्थी सक्रिय रहते हैं वे वर्तमान समझ में अनुप्रयोग करते हैं, नवीन अधिगम अनुभवों में प्रासंगिक तत्वों का उल्लेख करते हैं, पूर्व तथा उदीयमान ज्ञान की निरंतरता का निर्णय करते हैं तथा इस निर्णय पर आधारित ज्ञान का परिमार्जन कर सकते हैं।

यदि आप अपने विद्यालय के संदर्भ में ज्ञान की रचना का विश्लेषण करते हैं तब आप यह अनुभूति करते हैं कि कक्षाकक्ष में जो कुछ भी ज्ञान का निर्माण होता है वह शिक्षकों की सहायता से होता है। वे विद्यार्थियों को समझने, अन्वेषण करने तथा निहित सांस्कृतिक धारणाएँ, संदर्भों के ढांचे, परिप्रेक्ष्य तथा किसी शास्त्र या विषय में पूर्वाग्रह के ज्ञान की रचना की विधियों पर प्रभाव के निर्धारण में सहायता करते हैं।

ज्ञान रचना की प्रक्रिया के दौरान, शिक्षकों के दो विशिष्ट कारकों पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। प्रथम, उनको विद्यार्थी के संभावित विकास क्षेत्र (zone of proximal development) पर विचार करना चाहिए जो स्वतंत्र समस्या समाधान द्वारा निर्धारित वास्तविक विकास स्तर तथा संभावित विकास स्तर के मध्य दूरी है तथा नवीन ज्ञान एवं अर्थों की रचना में वांछित आवश्यकता में विद्यार्थियों की सहायता करते हैं। दूसरा, उनको सहपाठी अंतःक्रिया तथा शिक्षार्थियों में सहयोग हेतु सहायता को प्रोत्साहित करना चाहिए क्योंकि अधिगम का सामाजिक तथा सांस्कृतिक संदर्भ रचनावादी दर्शन में अत्यावश्यक है।

पियाजे के अधिगम दृष्टिकोण पर आधारित सामाजिक-रचनावादी परिप्रेक्ष्य का मानना है कि व्यक्ति प्रसाम्यता (equalibration) की प्रक्रिया द्वारा सक्रियतापूर्वक ज्ञान की रचना करते हैं। अर्थात् व्यक्ति अपने संसार की सतत, साम्य अवधारणा के लक्ष्य को धारण करते हैं। ज्ञान का निर्माण तब होता है जब व्यक्ति संज्ञानात्मक संरचनाओं को वर्तमान संदर्भों प्रस्तुत करने में मदद करते हैं। अनुकूलन की इस प्रक्रिया के दौरान वर्तमान ज्ञान की संरचनाओं या अवधारणाओं को पुनर्संगठित किया जाता है या नवीन ज्ञान की रचना होती है। अधिगम के उनके इस दृष्टिकोण से संज्ञानात्मक संरचनाओं की असाम्य अवस्था, साम्य की प्रक्रिया की वृद्धि में महत्वपूर्ण है। परंतु पियाजे के ज्ञान रचना की दृष्टि में सामाजिक अंतःक्रिया की भूमिका न्यूनतम है। परंतु पियाजे (1965, 1995) ने संबंध/सामाजिक अंतःक्रिया के स्वरूपों को सहयोग एवं बाधा के मानकों के रूप में वर्णन को प्रस्तावित किया है जो ज्ञान के विकास को विभिन्न रूपों में प्रभावित करते हैं। राईट (1982) के अनुसार सहयोगपूर्ण संबधों में पारस्परिक सम्मान सम्मिलित होता है तथा ऐसे संबंध पारस्परिक सहानुभूति तथा स्नेह के सकारात्मक भावपूर्ण परिवेश के विकास में सहायता भी करते हैं। पियाजे (1932/1965) यह तर्क दिया कि ऐसे संबंध पारस्परिक समझ की प्राप्ति तथा ज्ञान के विकास हेतु आदर्शतः उपयुक्त होते हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से तुलना कीजिए।।

3. ज्ञान के विकास में कक्षाकक्ष में संबंधों के महत्व को बताइए।

....

....

....

PDF Compressor Free Version

2.6 ज्ञान की रचना में शिक्षकों की भूमिका

कक्षाकक्षों को ऐसे स्थान के रूप में देखा जाता है जहां अन्वेषण तथा ज्ञान की सह-रचना होती है। रचनावादी कक्षाकक्ष में शिक्षा की भूमिका विमर्श को प्रोत्साहन तथा सहायता करने के रूप में होती है। इस प्रकार, शिक्षक का मुख्य अवधान प्रश्नों के पूछने द्वारा शिक्षार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान करने पर होना चाहिए जो उनको विषय पर अपने स्वयं के निष्कर्ष विकसित करने में अग्रसर करेगा। पार्कर के पामर (1997) सुझाते हैं कि अच्छे शिक्षक, जीवन के तानाबाना में स्वयं, विषय तथा शिक्षार्थियों को जोड़ते हैं क्योंकि वे समाकलित तथा अविभाजित स्व द्वारा शिक्षण करते हैं, वे अपने जीवन में प्रदर्शित करते हैं तथा अपने शिक्षार्थियों में संबद्धता की क्षमता को उत्पन्न करते हैं।

आप यह भी कह सकते हैं कि शिक्षक सुविधा प्रदाता होते हैं जो सूचना के संप्रेषण के बजाय प्रश्न पूछते हैं। शिक्षकों द्वारा पूछे गए प्रश्न कक्षाकक्ष में विमर्श में सहायता करते हैं। शिक्षार्थी प्रश्नकर्ता, संश्लेषक तथा विश्लेषक की भूमिका ग्रहण करते हैं। प्रश्न पूछकर, उनके ज्ञान को उजागर कर एवं आँकलन करके शिक्षार्थी सक्रिय शिक्षार्थी होते हैं। इस अधिगम प्रक्रिया के दौरान शिक्षार्थी अवधारणाओं के विषय में अपनी समझ का विकास करते हैं। वे ज्ञान के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र के स्वरूप तथा विषयवस्तु को संबंधित तथा अंतर-संबंधित भी करते हैं।

यहाँ प्रत्येक विद्यार्थी विषयवस्तु पर अपनी समझ के निर्माण में सक्रियता पूर्वक सम्मिलित होता है। उदाहरण के लिए श्वसन क्रिया के अध्ययन के दौरान शिक्षार्थी इन संरचनाओं को बेहतर ढंग से देखने तथा अपनी समझ की सहायत हेतु तथा साक्ष्य प्रदान करने हेतु फेफड़े के प्रतिमान की सहायता से मध्यपट, वायुनली, फेफड़ा, सांस लेने तथा छोड़ने जैसे पदों के अर्थ की रचना का अधिगम करते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को प्रयोग हेतु सहायता कर सकते हैं कि किस प्रकार श्वसन तथा बीमारी से संबंधित अन्य कारकों द्वारा फेफड़ा प्रभावित होता है इसका अवलोकन कर सकते हैं इस प्रकार शिक्षकों को अपनी रणनीतियों को साझा करने द्वारा विद्यार्थियों की समस्या समाधान हेतु अवसर प्रदान कर बहु-स्तरीय उपागमों के उपयोग को प्रोत्साहित करना होता है।

शिक्षक की भूमिका विषयवस्तु के प्रसारणकर्ता से प्रश्नकर्ता के रूप में परिवर्तित हो चुकी है जो उचित समझ को प्रोत्साहित करता है। यहां शिक्षकों के लिए केंद्र बिंदु विद्यार्थियों में यह जागृत करना है कि वे क्यों निर्मित वास्तविकता के चयनित पक्षों में संबंधों का निर्माण करते हैं। इस तरह शिक्षार्थी पूर्व अनुभवों तथा वर्तमान अनुभव में संबंध स्थापित करते हैं। अवधारणाओं के विषय में विद्यार्थियों की समझ शिक्षकों एवं सहपाठियों में विमर्श के दौरान तर्क के उपयोग द्वारा संबंधों की संगत अवधारणाओं के संप्रेषण की उनकी योग्यता द्वारा आंकलन किया जा सकता है।

शिक्षार्थी स्वयं की अधिगम प्रक्रियाओं पर नियंत्रण करते हैं तथा वे अपने अनुभवों पर चिंतन द्वारा मार्ग प्रशस्त करते हैं। यह प्रक्रिया उनको अपने अधिगम हेतु विशेषज्ञ बनाती है। शिक्षक व्यक्तिगत रूप में या सामूहिक विमर्श द्वारा सुरक्षित प्रश्नोत्तर तथा अपनी प्रक्रियाओं पर विद्यार्थी चिंतन की अनुमति द्वारा परिस्थितियों के निर्माण में सहायता करता है। शिक्षक को गतिविधियों का निर्माण भी करना चाहिए जो विद्यार्थियों को उनके पूर्व ज्ञान तथा अनुभवों पर चिंतन हेतु उनको अग्रसर करते हैं। क्या सीखा गया तथा कैसे

PDF Compressor Free Version

सीखा गया। इस पर बात करना वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए शिक्षार्थी लेखन कक्षा में जर्नल रखते हैं, जहां वे कक्षा की परियोजनाओं, परियोजना के विषय में दूसरों की दृश्य एवं शाब्दिक प्रतिक्रियाओं के विषय में अनुभूतियों को रिकार्ड करते हैं तथा वे अपने लेखन में किस प्रकार का परिवर्तन आया इस अनुभूति को भी रिकार्ड करते हैं। कभी–कभी, जब शिक्षक इन जर्नल को पढ़ता है तथा अग्रलिखित के आंकलन हेतु शिक्षार्थी के साथ बैठक करता हैं। (i) शिक्षार्थी ने किस नवीन ज्ञान की रचना की है। (ii) शिक्षार्थी किस प्रकार बेहतर अधिगम करते हैं। (iii) अधिगम परिवेश तथा इसमें शिक्षक की भूमिका।

शिखकों को अवश्य सुनिश्चित करना चाहिए कि एक सकारात्मक एवं सहयोगपूर्ण अधिगम वातावरण हो जिसमें शिक्षार्थी भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस करें तथा स्वयं को संज्ञानात्मक रूप में चुनौती के लिए सक्षम हों। शिक्षक को नम्य होना चाहिए तथा शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत रूचियों एवं आवश्यकताओं को समायोजित करना चाहिए।

शिक्षक के रूप में हमें शिक्षार्थियों के निरंतर आंकलन हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए कि किस प्रकार गतिविधि उनकी समझ कि प्राप्ति में सहायता कर रही है। उनके स्वयं द्वारा प्रश्न करने तथा उनकी रणनीतियों, द्वारा शिक्षार्थी रचनावादी कक्षाकक्ष में आदर्शतः विशेषज्ञ शिक्षार्थी' बनते हैं। यह उनकी अधिगम की निरंतरता हेतु व्यापक उपकरण प्रदान करता है। एक सुनियोजित कक्षाकक्ष परिवेश के साथ शिक्षार्थी यह सीखते हैं कि अधिगम कैसे किया जाए। कोई व्यक्ति इसे उलझनपूर्ण प्रक्रिया के रूप में देख सकता है। जब वे अपने अनुभवों पर सतत चिंतन करते हैं, शिक्षार्थी जटिलता एवं शक्ति से अपने विचार अर्जन की प्राप्ति करते हैं। तथा वे नवीन सूचना के समाकलन हेतु अधिकांश प्रबल क्षमताओं को विकसित करते हैं। शिक्षक कि मुख्य भूमिका इस अधिगम तथा चिंतन प्रक्रिया को प्रोत्साहित करना हो जाता है।

उदाहरण : विज्ञान कक्षा में विद्यार्थियों का एक समूह, भौतिक विज्ञान की समस्या पर विमर्श कर रहा है। यद्यपि शिक्षक उस समस्या का उत्तर जानती है फिर भी वह एक उपयोगी तरीके से विद्यार्थियों के प्रश्नों को पुनर्व्यक्त करने हेतु उनकी सहायता पर ध्यान केंद्रित करती है। वह उनके वर्तमान ज्ञान पर चिंतन तथा परिक्षण हेतु प्रत्येक शिक्षार्थी को प्रोत्साहित करती है। जब कोई विद्यार्थी प्रासंगिक अवधारणा के साथ आता है शिक्षक इसे स्वीकार कर लेती है तथा समूह को संकेत देती है कि यह उजागर करने हेतु उनके लिए एक लाभकारी मार्ग हो सकता है। वे प्रासंगिक प्रयोगों को स्वरूपित एवं निष्पादित करते हैं। तत्पश्चात् शिक्षार्थी एवं शिक्षक अधिगम के विषय में बातचीत करते हैं तथा किस प्रकार उनके अवलोकन एवं प्रयोग अवधारणा के विषय में उनकी बेहतर समझ हेतु सहायता किया (या नहीं किया) इस पर भी बात करते हैं।

शिक्षार्थी प्रबल अवधारणात्मक संरचनाओं का निर्माण करते हैं जब शिक्षक आंकलन एवं पूर्वज्ञान के स्पष्टीकरण में उनकी सहायता करते हैं; सक्रिय अधिगम गतिविधियों द्वारा परिवेश में सहायता करते हैं जो विचार करते हैं; तथा विद्यार्थियो का चिंतन, मार्ग के सहनिर्माण तथा उच्च-संज्ञान के अन्य स्वरूपों को प्रयास करते हैं।

इस प्रकार शिक्षक को ऐसे अधिक परिवेश प्रदान करना होता है जो विद्यार्थी के वर्तमान समझ तथा अपने समझ नवीन अनुभवों में असततताओं के समाधान में सहायता करता है। यहां एक चुनौती है कि एक शिक्षक नहीं यह मान सकती है कि सभी विद्यार्थियों की समझ

PDF Compressor Free Version

समान है। इसलिए उसे शिक्षार्थियों की समझ के विभिन्न स्तरों को पूरा करने हेतु विभिन्न अधिगम अनुभवों को प्रदान करने होंगे।

आप रचनावादी कक्षाकक्षों में शिक्षकों की भूमिका के विषय में निम्नलिखित बिन्दुओं को व्यक्त कर निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं :

- शिक्षक उन तकनीकों का उपयोग करते हैं जो समूह अंतःक्रिया को प्रोत्साहित कर सकते हैं जहां शिक्षार्थी अपने सहपाठियों से तुलना द्वारा अपने स्वयं ही समझ के विषय में व्यक्त होने का अवसर प्राप्त करते हैं।
- शिक्षक की पाठ्यचर्या में मौजूद अवधारणाओं, विषयों तथा गतिविधियों को अंतर्संबंधित करना चाहिए ताकि एक गतिविधि में अधिगम सशक्त हो सके तथा दूसरे में सुदृढ़ हो सके (अवधारणा का समाकलन)।
- हस्त गतिविधियों से मुक्त सक्रिय अधिगम को प्रोत्साहित करना जो प्रक्रिया पर बल देते हैं।
- केस परिचर्या के साथ व्यापक गतिविधियों को प्रदान करता है, शिक्षक साधारण तथ्यात्मक उत्तर से बाहर विद्यार्थियों की पहुंच को चुनौती देता है। शिक्षार्थियों के विश्लेषण, भविष्यवाणी, औचित्य तथा अपने विचारों की रक्षा द्वारा अवधारणाओं को संबद्ध तथा निष्कर्ष निकालने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है।
- विद्यार्थी स्वायत्ता तथा पहल अपेक्षित तथा प्रोत्साहित किए जाते हैं। विद्यार्थी के विचारों का सम्मान तथा स्वतंत्र सोच के प्रोत्साहन द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों को अपनी स्वयं की बौद्धिक पहचान की प्राप्ति में सहायता करते हैं। विद्यार्थी जो प्रश्नों एवं मुद्दों को उठाते हैं। तथा उनका विश्लेषण एवं उत्तर देते हैं स्वयं अधिगम का उत्तरदायित्व लेते हैं तथा समस्या समाधानकर्ता बनते हैं।
- यह मानता है कि अधिगम सामाजिक संदर्भ में होता है तथा समझ की सहायता हेतु संदर्भ का उपयोग करता है।
- वास्तविक संसार की समस्या परिस्थितियों से अवधारणाओं को विकसित करता है तथा समस्या समाधान एवं उच्च स्तरीय चिंतन कौशलों को विषयवस्तु की इकाइयों से समाकलित करता है बजाय पृथक रूप में इन कौशलों का शिक्षण करना था।
- सहारा प्रदान करता है उसे शिक्षार्थी की सहायता, कार्य, परिवेश शिक्षक तथा शिक्षार्थी पर केन्द्रित करने का अधिक क्रमबद्ध उपागम है। सहारा अधिगम तथा शिक्षार्थी के उनके क्षमता से बाहर निष्पादन की सहायता हेतु अस्थायी संरचना प्रदान करता है। प्रभावी सहारा में शिक्षक हेतु निम्नलिखित की आवश्यकता होती है :
  - विद्यार्थी की अवधारणाओं की समझ की इच्छा तथा गलतफहमियों तथा असत्य विचारों का उजागर करना।
  - समझ के विकास हेतु शिक्षार्थियों एवं शिक्षकों में वार्तालाप का प्रोत्साहन।
  - प्रश्न तथा सहपाठी विनियम द्वारा अधिगम के अवसर प्रदान करना।
  - शिक्षार्थी अनुक्रिया का विस्तारण एवं विचारों के औचित्य की मांग करना।

PDF Compressor Free Version

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से तुलना कीजिए।।

4. शिक्षकों को ज्ञान की रचना में संभावित विकास क्षेत्र पर क्यों ध्यान देना चाहिए?

....

....

....

5. ज्ञान की रचना में शिक्षकों की किन्हीं दो महत्वपूर्ण भूमिकाओं को बताइए।

....

....

....

2.7 कक्षाकक्षों में ज्ञान की रचना के प्रोत्साहन की विधियां

कक्षाकक्ष जो रचनावादी उपागम को अपनाता है, शिक्षार्थी प्राथमिक रूप से समूह में कार्य करते हैं तथा अधिगम एवं ज्ञान समूह में गतिशील अंतःक्रिया के परिणामी होते हैं। सामाजिक एवं सम्प्रेषण कौशलों के साथ समूह सदस्यों में सहयोग एवं विचार विनिमय पर बल दिया जाता है। परंपरागत कक्षाकक्ष के विपरीत जिसमें शिक्षार्थी प्राथमिक रूप से अकेले कार्य करते हैं जबकि विषय पाठ्यक्रम पुस्तक में निहित होते हैं। तथा इसके द्वारा मार्गदर्शित होते हैं, रचनावादी कक्षाकक्षों में विभिन्न सक्रिय अधिगम गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाता है। इस प्रकार कक्षाकक्ष अनुदेश का केंद्र शिक्षार्थियों के अधिगम तथा इस प्रक्रिया के अनुभव की सहायता पर होना चाहिए। इसका अभिप्राय है कि अधिगम गतिविधियों को अवश्य ही नियोजित होना चाहिए जो विचारों की रचना, अन्य विषयवस्तु से उनको संबंधित करने तथा समझ को आत्मसात करने का अवसर प्रदान करते हैं।

गतिविधियां जो शिक्षार्थियों हेतु विचार उत्पन्न करने हेतु आवश्यक हैं उनमें सामान्यतः निम्नलिखित बिंदु सम्मिलित होते हैं :

- **व्याख्या :** इसका अर्थ शाब्दिक अर्थ के अलावा निष्कर्ष निकालना है। उदाहरण के लिए शिक्षार्थी ऐतिहासिक काल के एक वृत्तांत को पढ़ सकते हैं तथा निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उस समय के लोग क्यों इस तरह का व्यवहार करते थे।
- **विश्लेषण** : इसका अर्थ संपूर्ण में अंशों के मध्य संबंध की पहचान करना है। शिक्षार्थी प्रवासी पक्षियों को प्रभावित करने वाले अधिक संभावित स्थानीय कारकों को निर्धारित करने हेतु खोज कर सकते हैं।
- **संश्लेषण :** इसका अर्थ दो या अधिक विचारों में संबंधों की पहचान करना है। शिक्षार्थी बहुस्तरीय स्रोतों से परिप्रेक्ष्यों की तुलना तथा भेद कर सकते हैं।
- **मूल्यांकन :** इसका अर्थ गुणवत्ता, विश्वसनीयता या आंकड़े का महत्व, विचार का निर्णय करना होता है। शिक्षार्थी जिन्हें अधिक विश्वसनीयता आंकड़े का महत्व,

PDF Compressor Free Version

विचार या घटनाओं का निर्णय करना होता है। शिक्षार्थी जिन्हें अधिक विश्वसनीय मानते हैं उनके निर्धारण हेतु एक घटना के कई विवरणों को पढ़ सकते हैं।

एक शिक्षक कक्षाकक्ष में ज्ञान रचना के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विनिम्न शिक्षण विधियों का उपयोग कर सकता है। आईए उन पर विमर्श किया जाए।

(i) अन्वेषी शिक्षण : शिक्षक विषयवस्तु को प्रस्तुत करता है तथा पाठ्य द्वारा शिक्षार्थियों के निर्देशित करता है। उदाहरण द्वारा एक नियम को प्रस्तुत किया जाता है तत्पश्चात् अभ्यास प्रदान किया जाता है। शिक्षक विषय के प्रमुख बिंदुओं पर शिक्षार्थियों का ध्यान केंद्रित करता है तथा विषय की विस्तारित करने हेतु ग्राफिक्स, आरेखों या अन्य निरूपणों का उपयोग कर सकता है। उदाहरणों में ऐतिहासिक सूचना तथा पूर्व आवश्यक सूचना द्वारा चित्रात्मक संबंधों, नियमों का अनुप्रयोग, संदर्भ सम्मिलित होते हैं। ऐसे उदाहरण संदर्मित विवरण देने तथा विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से विषयवस्तु को देखने में विद्यार्थियों की सहायता प्रदान करना है।

(ii) मार्गदर्शित अन्वेषण : इसमें समस्याओं को व्याख्यान, प्रयोगशाला कार्य तथा क्षेत्र कार्य में सम्मिलित किया जा सकता है। ये शिक्षण हेतु अधिगम के चक्रीय उपागम के अन्वेषण के चरण में सुंदरता से निहित होते हैं तथा तब अच्छे से कार्य करते हैं जब उनको किसी प्रकरण पर व्याख्यान या पठन के पूर्व कार्य सौंपा जाता है।

उदाहरण के लिए यह तत्वों की आवर्त सारणी के अध्ययन के आरंभ में किया जा सकता है। आप गतिविधियों टके टसाथ आरंभ टकर सकते हैं जो प्रतिरूपों तथा वर्गीकरण के निर्धारण में सम्मिलित होते हैं। आप अपने विद्यार्थियों से रंग, संख्या तथा तारों के गुणों पर आधारित सार्थक क्रम में निम्नलिखित तत्वों को सजाने को कह सकते हैं।

शिक्षार्थी वस्तुओं को सजाने के संभवतः एक से अधिक विधियों को जानते हैं तथा विभिन्न सजावटों की शक्तियों को जानते हैं तथा विभिन्न सजावटों की शक्तियों पर वाद विवाद किया जा सकता है। इन तथ्यों को सजाने की कोई एक सही विधि नहीं है। परंतु कुछ सजावट दूसरे से अधिक उपयोगी हो सकते हैं। यदि क्रमबद्ध प्रतिरूप से एक अज्ञात तत्व लुप्त है (या प्रतिरूप में एक अंतराल है), इसके कई गुणों के परिकल्पित किया जा सकता है। तत्पश्चात् आप एक मान्य निष्कर्ष पर पहुंचने हेतु आवर्त सारणी के विकास के अध्ययन हेतु उनको कह सकते हैं। इसके द्वारा विद्यार्थियों को तत्वों, उनके गुणों तथा रासायनिक प्रतिक्रियाओं की समझ हेतु सामग्री के रूप में उपयोगी उपकरण के रूप में इससे परिचय कराया जाता है।

अन्वेषण की इस प्रक्रिया के दौरान आपको शिक्षार्थी के सोच को मार्गदर्शित करने हेतु रणनीतिपूर्ण शीघ्रताओं, संकेतों, प्रश्नों, प्रत्यक्ष व्याख्या, प्रतिमन का उपयोग करना होता है तथा गहन अधिगम के पोषण हेतु कार्य की पूर्णता हेतु बुद्धिमान उत्तरदायित्व की व्याख्या करना चाहता है।

(iii) सहकारी/सहयोगपूर्ण अधिगम

रचनावादी कक्षाकक्ष शिक्षार्थियों में सहयोग पर बहुत अधिक निर्भर होता है। अधिगम के लिए सहयोग के योगदान के कई कारण है। मुख्य कारण यह है कि यह रचनावाद में बहुत अधिक प्रयुक्त होता है तथा विद्यार्थी न केवल स्वयं से यद्यपि अपने सहपाठियां से अधिगम के विषय में सीखते हैं। जब शिक्षार्थी एक साथ अपनी अधिगम प्रक्रियाओं पर समीक्षा तथा चिंतन करते हैं वे एक दूसरे से रणनीतियों एवं विधियों का चयन कर सकते हैं।

PDF Compressor Free Version

इस विधि में समूह का प्रत्येक सदस्य न केवल पढ़ाए गए अधिगम यद्यपि समूह सदस्यों के अधिगम में सहायता हेतु भी उत्तरदायी होता है। इस प्रकार उपलब्धि का एक परिवेश बनता है। शिक्षार्थी समूह के सभी सदस्यों के सफल समझ तथा इसकी पूर्णता तक सत्रीय कार्य द्वारा कार्य करते हैं। सहयोगपूर्ण प्रयास पारस्परिक लाभ हेतु सहभागियों के साहस का परिणामी होता है। ताकि समूह के सभी सदस्य एक–दूसरे के प्रयासों को प्राप्त करते हैं।

अंततः शिक्षार्थियों को बौद्धिक जिज्ञासा तथा समझ के उनके पथ पर अग्रसर करता है।

उदाहरणार्थ बीज अंकुरण के विषय में अध्ययन के दौरान शिक्षार्थी संपूर्ण समूह तथा लघु समूह व्यवस्था में अंकुरण को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का अध्ययन करते हैं। संपूर्ण कक्षा को एक प्लास्टिक के थैले में बीज की वृद्धि का पूर्व अधिगम अनुभव है। लघु समूहों में अंकुरण को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया जाता है। एक समूह बीज अंकुरण पर प्रकाश की मात्रा के प्रभावों का अध्ययन करता हैं, अन्य समूह तापमान का अध्ययन करता है, तथा अन्य समूह समान परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार के बीजों के अंकुरण का अध्ययन करते हैं।

प्रयोग के पश्चात् प्रत्येक समूह संपूर्ण कक्षा में अपने अवलोकनों के परिणामों को साझा करते हैं। बीज अंकुरण को प्रभावित करने वाले कारकों की एक सूची संपूर्ण समूह परिचर्चा से उभरते हुए आरंभ होती है। प्रत्येक शिक्षार्थी का परिचर्चा में योगदान होता है। प्रत्येक विद्यार्थी को अनुभव होता है कि वह बीज अंकुरण के विषय में अपने विचारों का निर्माण करता है।

पूर्व के दोनों उदाहरणों में कक्षा शिक्षक संपूर्ण समूह परिचर्चा हेतु लौटता है या संभव है कि कुछ विद्यार्थियों के साथ प्रश्न के उत्तर हेतु बढ़ेंगे जबकि अन्य शिक्षार्थी की सहभागिता नहीं दिखती है। यद्यपि यह प्रगट होता है कि सभी विद्यार्थियों की सहभागिता हेतु अपनी इच्छा में शिक्षार्थियों में व्यक्तिगत भिन्नताएं, उनका आत्म विश्वास, उनकी अधिगम शैली, अन्य विभिन्नताएं, उनका आत्म विश्वास, उनकी अधिगम शैली अन्य विभिन्नताएं इस अधिगम परिदृश्य को कुछ विद्यार्थियों को दूसरों के अनुग्रहित बना सकता है। शिक्षक को सभी विद्यार्थियों की सहभागिता हेतु प्रोत्साहित करने की रणनीतियों को जानना महत्वपूर्ण है। प्रतीक्षा समय का प्रभावी उपयोग करना, ताकि शिक्षार्थियों को समय दिया जाता है उनको उत्तर रचना की आवश्यकता है तथा न्योचित सहभागिता हेतु महत्वपूर्ण प्रश्नों के नियम में सोचने की आवश्यकता है तथा न्यायोचित सहभागिता हेतु महत्वपूर्ण प्रश्नों के विषय में सोचने की आवश्यकता है। शिक्षार्थियों को अत्याधिक हेतु अनुमति देना भी वृहद सहभागिता को प्रोत्साहित करेगा। कई अन्य शिक्षण रणनीतियाँ है जो सभी शिक्षार्थियों को सीखने में सहायता करती हैं। रचनावादी शिक्षक सक्रिय अधिगम के प्रोत्साहन हेतु इन रणनीतियों के व्यापक क्षेत्र का प्रभावी उपयोग करता है।

(v) उद्घोषित अनुदेशन

यह उपागम एक रोचक प्रकरण पर परिस्थितिगत या उद्घोषित अनुदेशन द्वारा अधिगम में अधिक प्रभावी संलग्नता हेतु शिक्षार्थियों की सहायता करने का एक प्रयास है। अधिगम परिवेश विचारपूर्ण संलग्नता के प्रकारों को उत्तेजित करने हेतु निर्मित किए जाते हैं जो शिक्षार्थियों को प्रभावी चिंतन कौशलों तथा मनोवृत्तियों के विकास में सहायता करता है, जो प्रभावी समस्या समाधान तथा समीक्षात्मक सोच में योगदान देते हैं।

उद्घोषित अनुदेशन समस्याओं पर विचार एवं कार्य हेतु विद्यार्थियों को अवसर प्रदान करने की आवश्यकता पर बल देता है तथा समूह या सहयोगपूर्ण समस्या समाधान पर बल देता है।

PDF Compressor Free Version

प्रायः यह माना जाता है कि पृथ्वी की सूर्य से निकटता पर आधारित मौसम में परिवर्तन होता है। वास्तव में , मौसम के बारे में विभिन्न समय में पृथ्वी के सूर्य की ओर झुकने या दूर हाने के कारण परिवर्तित होते हैं। इस गलत अवधाररणा के प्रतिपक्ष हेतु शिक्षक एक चिंतन –साझा–युग्म गतिविधि को आयोजित कर सकता है। जहां पहले वह शिक्षार्थियों के पूर्व ज्ञान तथा संभावित गलत अवधारणाओं को प्रत्यक्षतः संबंधित करते हुए इस प्रकरण पर सुसंगठित पाठ को प्रस्तुत करता है। शिक्षार्थी पुनः युग्म बनाते हैं तथा मौसम की व्याख्या करते हैं। शिक्षार्थियों की गलत अवधारणा उनके सक्रिय अधिगम के दौरान संज्ञानात्मक विभेद का अनुभव कर सकते हैं इसके अतिरिक्त उनके ज्ञान की पुनर्रचना तथा सुदृढ़ीकरण हेतु गतिविधियाँ सतत रहती हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

6. कक्षा में नए विचारों को उत्पन्न करने में कौन–सी गतिविधियाँ सहायता करती हैं?

....

....

....

7. समस्या–आधारित अधिगम की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

2.8 सारांश

इस इकाई में हमने ज्ञान रचना के बारे में चर्चा की। यह तर्क दिया जाता है कि ज्ञान रचना एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें लगातार वार्तालाप और अभ्यास सम्मिलित रहता है। इसमें जानने वाला, विषयवस्तु और जानने की प्रक्रिया आपस में अन्तःक्रिया करते हैं जिसके फलस्वरूप ज्ञान रचना होता है। जानने के विभिन्न तरीकों में ज्ञान–इन्द्रिय बोध, भाषा, कारण और भावना सम्मिलित हैं। अधिगम ज्ञान प्राप्ति के लिए इनमें से किसी एक मार्ग का उपयोग कर सकता है। इसलिए ज्ञान रचना की प्रक्रिया में ज्ञाता और जानकारों की भूमिका निर्णायक बनती है।

ज्ञान प्राप्ति के लिए सक्रिय अधिगमकर्ता वह है जो लगातार ज्ञान प्राप्ति के लिए अग्रसर रहता है। अतः कक्षा में अध्यापक को विद्यार्थी के लिए ऐसे मौके प्रदान करने चाहिए जो उन्हें अधिगम की क्रिया में सक्रिय रहने में सहायता करें। इस इकाई में हमने यह भी चर्चा की कि कक्षा में कैसे सम्बन्ध बनाने चाहिए और कक्षा में एक सक्रिय अधिगम के लिए कैसा वातावरण तैयार करना चाहिए। इस इकाई में यह भी चर्चा की गई है कि निर्माणकारी प्रक्रिया में अधिगम किस प्रकार से सहायता करता है। सक्रिय विद्यार्थी स्वयं

PDF Compressor Free Version

विषयपरक सम्बन्ध बनाते हैं या विषय की वास्तविकता पर स्वयं ज्ञान का निर्माण करते हैं।

इकाई अन्त में हमने विभिन्न प्रकार की विधियाँ जिन्हें विद्यार्थी अपना सकता है, जिसमें सीधा अनुदेशन, विवरणात्मक शिक्षण, मार्गदर्शन अन्वेषण, सहयोगी अधिगम–समस्यात्मक/खोजपूर्ण अधिगम आदि के बारे में अध्ययन किया।

2.9 इकाई के अंत में अभ्यास

1. किसी कक्षा का निरीक्षण कीजिए जिसमें निर्माणवाद उपागम के माध्यम से शिक्षण प्रदान किया जाता है और एक अध्यापक द्वारा कक्षा के नए सुझावों, विचारों की रूपरेखा पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

2.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ज्ञान के संचरण में भाषा मदद करती है – यह समझा जा सकता है। जब एक उत्तम संरचनात्मक तर्क प्रस्तुत किया जाता है। भाषा के माध्यम से हम अपने अनुभवों और अनुभवों की संरचना का वर्णन कर सकते हैं।
2. यथार्थवाद में व्यक्ति अपनी इन्द्रियों के माध्यम से वस्तुओं का अर्थ तैयार कर सकता है।
3. सहयोगपूर्ण सम्बन्ध आपसी सम्मान और सही सम्बन्ध सकारात्मक, संवेगात्मक के विकास करने में सहायता करते हैं। पियाजे (1932 एवं 1965) ने तर्क दिया है कि यही सम्बन्ध आपसी समझ और ज्ञान के विकास के लिए अति उपयुक्त है।
4. ZPD की मदद से अध्यापक, विद्यार्थियों की वास्तविक तथा संभावित स्तर के मध्य दूरी का विश्लेषण करता है। अगर अध्यापक को ZPD पता चल जाए, तो वह विद्यार्थियों के लिए ऐसी शिक्षण नीतियों को चुनाव कर सकता है जिनसे वे अच्छा स्तर प्राप्त कर सके।
5. क) सक्रिय अधिगम को बढ़ावा देता है।

   ख) विद्यार्थियों को उनके विचारों का विश्लेषण, अनुमान और उन्हें परिभाषित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
6. ऐसी गतिविधियां जिसमें व्याख्या, विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन शामिल है।
7. यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो प्रश्नों और विचारों की जांच के माध्यम से समस्या सुलझाने में मदद करता है।

2.11 संदर्भ पुस्तकें एवं सुझाई गई अध्ययन सामग्री

बर्गर, पी.एल., और टी. लकमैन (1975). *दि सोशल कंस्ट्रक्शन ऑफ रियलिटी – ए ट्रिटीज इन दि सोशयोलॉजी ऑफ नालेज,* पेंगुइन बुक्स, लंदन।

ब्रूक्स जे जी, ब्रूक्स एम जी (1999) *इन सर्च ऑफ अंडरस्टैंडिंग: दि केस फॉर कन्स्ट्रक्टिविस्ट क्लासरूम, एसोसिएशन फॉर सुपरविजन एंड कैरिकुलम डेवलपमेंट,* वर्जीनिया, यूएसए।

PDF Compressor Free Version

बर्ग, जी. और निकोलस, के. (2012). *दि पैरलल्स बिटवीन फिलोफिकल इंक्वारी एंड साइंटफिक इंक्वारी.* 44 (10). 1045–1059

फोसनॉट, सी.टी. (2005). *कन्स्ट्रटीविज्म* : थ्योरी, पर्सपेक्टिव्स एंड प्रैक्टिस, कोलंबिया विश्वविद्यालय प्रेस

मर्सर, एन. (1995). *दि गाइडिड कंस्ट्रक्शन ऑफ नालेज: टॉक एमंगस्ट टीचर्स एंड लर्नर्स,* फिलाडेल्फिया. पीए: मल्टीलिंगवल मैटर्स।

मर्सर, एन. (2004) "सोशायोकलच्रल डिसकोर्स एनालिसिसः एनालिसिंग टॉक एज ए सोशल मोड ऑफ थिंकिंग, *जर्नल ऑफ एप्लाइड लिंगवीस्टिक्स,* 1 (2), 137–168

मर्सर, एन. (2008 बी.) टॉक एंड दि डेवलेपमेंट ऑफ रीजिंग एंड अंडरस्टेडिंग, *ह्यूमन डेवलेपमेंट,* 51, 90–100

मर्सर, एन., और लिटिलटन, के. (2007). *डॉयलाग एंड दि डेवलेपमेंट ऑफ चिल्ड्रन'ज थिंकिंग: ए सोशयो–कल्चरल अप्रोच,* लंदन, इंग्लैंडः रूटलेज।

एनसीईआरटी. (2005). नेशनल कैरीकुलम फ्रेमवर्क – 2005, नई दिल्ली।

नॉलेज एंड कैरीकुलम नोडिइंग, एन. (1998). *फिलोसिफी ऑफ एजुकेशन,* बोल्डर, सीओः वेस्टव्यू प्रेस।

स्कैफ, जॉन. (2012). *कन्स्ट्रक्टिविस्टज इन एक्शनः टीचिंग फॉर लर्निंग,* रूटलेज।

वैल्स, जी. एवं अरज़ (2006), *डायलॉग इन क्लासरूम, जर्नल ऑफ दि लर्निंग साइंस,* वॉल्यूम 15, नंबर 3, पृ. 379–428।

यागर, आर. ई. (1991). *दि कंस्ट्रविस्ट लर्निंग मॉडल, दि साईन्स टीचर,* 58 (6), 52–57

विगोत्स्की, एल. (1978). *माइंड इन सोसायटी,* हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन।

PDF Compressor Free Version

इकाई 3 ज्ञान में शैक्षिक विचारक

संरचना

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 शिक्षा में भारतीय विचारकों का मत
3.3.1 रविन्द्र नाथ टैगोर
3.3.2 महात्मा गाँधी
3.4 शिक्षा में पाश्चात्य विचारकों का मत
3.4.1 जॉन डिवी
3.4.2 पाओले फ्रेरे
3.5 शिक्षा के उद्देश्यों में समानताएँ और भिन्नताएँ
3.6 शिक्षा में वैचारिक तार्किक परिप्रेक्ष्य
3.7 शिक्षा में सामाजिक परिप्रेक्ष्य
3.8 सारांश
3.9 इकाई अंत में अभ्यास
3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर
3.11 संदर्भ ग्रंथ एवं सुझाई गई अध्ययन सामग्री

3.1 प्रस्तावना

इस खंड की पिछली इकाई में हमने ज्ञान और उसके प्रकारों के बारे में अध्ययन किया। इसी के साथ हमने ज्ञान प्रक्रिया को भी जाना। इसी इकाई में हमने जाना कि ज्ञान प्राप्त करना एक व्यक्तिगत प्रक्रिया है जोकि अनुभव और अनजाने में मिले हुए प्रासंगिक संकेतों से प्रभावित होती है। साथ ही इस इकाई में ज्ञान के तीन पहलू – ज्ञान प्राप्त करने वाला (प्रतिभागी की चेतना), ज्ञान रूप (अध्ययन का क्षेत्र) और ज्ञान की प्रक्रिया (ज्ञान और ज्ञाता का सम्बन्ध) की भी व्याख्या की है। इस इकाई में हम विभिन्न शिक्षा विचारकों को शिक्षा और ज्ञान के बारे में उनके विचारों पर चर्चा करेंगे। शिक्षा के संदर्भ में विभिन्न विचारकों रविन्द्र नाथ टैगोर, महात्मा गाँधी और शिक्षा के पाश्चात्य संदर्भ में जॉन डिवी और पाओले फ्रेरे के बारे में जानेंगे। अंततः हम शिक्षा में वैचारिक तार्किक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य को भी जानेंगे।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप:

- शिक्षा में भारतीय विचारक – रविन्द्र नाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के मतों का व्याख्या कर सकेंगे;
- शिक्षा के पाश्चात्य विचारक – जॉन डिवी तथा पाओले फ्रेरे के मत स्पष्ट कर सकेंगे;
- शिक्षा में वैचारिक–तार्किक परिप्रेक्ष्य के बारे में चर्चा कर सकेंगे; और
- शिक्षा में सामाजिक दृष्टिकोण का वर्णन कर सकेंगे।

PDF Compressor Free Version

3.3 शिक्षा में भारतीय विचारकों का मत

आप इस तथ्य के बारे में जानते होंगे कि आजादी से पूर्व का भारतीय सामाजिक, राजनीतिक वातावरण ने रविन्द्र नाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी ने दर्शन के विभिन्न पहलुओं में अपना भारी योगदान दिया, जिसमें शिक्षा भी शामिल है। निम्न अनुभागों में हम शिक्षा में उनके विचारों का अध्ययन तथा चर्चा करेंगे।

3.3.1 रविन्द्र नाथ टैगोर

रविन्द्र नाथ टैगोर एक विश्व प्रसिद्ध कवि, जोकि "गुरूदेव" के नाम से भी जाने जाते थे। रविन्द्र नाथ टैगोर को सन् 1913 में *गीताजंली* के लिए नोबल साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया था। शिक्षा के क्षेत्र में शान्ति निकेतन और विश्वभारती उनके प्रमुख योगदान के रूप में जाने जाते हैं।

टैगोर के अनुसार जीवन का उद्देश्य मात्र जीने से नहीं है परंतु अपने अस्तित्व को जानना और अपनी आत्म की अनुभूति दूसरों से सहानुभूति तथा प्यार द्वारा पाना है। अतः बच्चे के संतुलित और समाकलित व्यक्तित्व का विकास जीवन के सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य है और उसे सच्चिदानन्द (सत्+चित+आनंद) की प्राप्ति हो। उनका विश्वास था कि स्वतंत्रता, शिक्षा का मुख्य मार्ग विचारक सिद्धान्त है। स्वतंत्रता से टैगोर का अर्थ हर पहलू तथा शक्ति का मुक्त प्रयोग, जिसमें ज्ञान इन्द्रियाँ तथा भिन्न ऊर्जा सम्मिलित हैं। भिन्न प्रकार की मानसिक योग्यताएँ जैसे बुद्धी, कल्पना शक्ति, मानसिक भावनाएँ, सहानुभूति तथा स्नेह इत्यादि सम्मिलित हैं। यहाँ विचारणीय यह है कि टैगोर के विचार रूसो, फ्रोवेल तथा डिवी के विचारों के समान हैं जिन्होंने स्वतंत्र, मधुर सम्बन्ध पर बल दिया है जिन्हें हम महसूस करते हैं।

उन्होंने आत्माभिव्यक्ति और उसके विकास पर भी बल दिया है। आत्माभिव्यक्ति सृजनशील होती है तथा इसे बच्चों में कला, संगीत, ड्रामा तथा हस्तकला से संगठित किया जा सकते हैं। अतः उन्होंने खेल तथा कार्यों को बच्चों तथा बड़ों की शिक्षा में उत्साहित करने पर बल दिया है।

उन्होंने अनुभव तथा शिक्षा में समस्वरता के विभिन्न बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक, नैतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक तत्वों का समर्थन किया है, जोकि बच्चे के आत्मानुभिती सृजनात्मकता को प्रभावित करते हैं। उन्होंने नृत्य, कला, चित्रकला, संगीत, कविता आदि का भी शिक्षा में महत्व पर जोर दिया है। उन्होंने शिक्षा के सार्वभौमिक एकता तथा अन्तर्राष्ट्रीयकरण का समर्थन करते हुए विद्यार्थी के अधिगम में पाश्चात्य संस्कृति के अध्ययन का भी समर्थन किया है, ताकि वे दूसरी संस्कृतियों को भी सराहना कर पाए।

टैगोर ने सहानुभूति और प्रसन्नता को शिक्षा में मुख्य तत्व के रूप में परिचित करवाया। उनका मानना था कि प्रसन्नता ही सभी शैक्षिक क्रियाकलापों के मुख्य केन्द्र होनी चाहिए। उन्होंने जिज्ञासा के सिद्धान्तों, रूचि और खेल भावना पर भी बल दिया। उनके अनुसार बच्चों को प्रकृति के संपर्क में लाना चाहिए, इससे उन्हें स्वतंत्रता और वृहद अनुभवों की अनुभूति होगी। उनके अनुसार शिक्षा को मुक्त विचार, कल्पना को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे कि बच्चे नए विचारों और ज्ञान को आत्मसात कर सके। टैगोर चाहते थे कि शिक्षा केवल व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास मात्र न करे बल्कि इसमें सामाजिक विशेषताएँ भी सम्मिलित होनी चाहिए। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मात्र धन कमाना नहीं है बल्कि उसे सामाजिक सेवा की तरफ उदित करना और देश के विकास में भी भागीदार बनाना होना चाहिए। टैगोर ने शिक्षा में मातृ भाषा के द्वारा अनुदेशन पर बल दिया है क्योंकि बच्चे अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकते हैं।

PDF Compressor Free Version

टैगोर द्वारा दी शिक्षा में मानवता, प्राकृतिक व्यक्तिकरण, सार्वभौमिकता और आध्यात्मिकता का स्पष्ट प्रतिबिम्ब है। और उनका यही योगदान उन्हें रूसो, फ्रेबरी मोन्टेसरी डिवी इत्यादि की तरह एक बड़े सितारे की तरह ब्रह्माण्ड में स्थापित करता है। अतः आगे वह परिकल्पित करते हैं कि शिक्षा का हमारे बच्चों को निम्न लक्ष्य होने चाहिए:

- विचारों का स्वतंत्र पोषण, मुक्त भावना तथा मुक्त इच्छा को उत्साहित करना।
- व्यक्ति का बन्धनमुक्त आध्यात्मिक विकास तथा नैतिक पदोन्नित और उसे सभी बंधनों से मुक्त करना।
- नए विचारों तथा ज्ञान का प्रयोग और अनुकलन की योग्यता का विकास करना।
- नई पीढ़ी को उनकी राष्ट्रीय धरोहर के प्रति जागरूक करना तथा उसके महत्व को समझना और अन्य देशों की संस्कृति को सराहना तथा उससे सीखना।
- भारतीय स्त्री तथा पुरुष को तर्कसंगत तथा निरर्थक सामाजिक और व्यक्तिगत रीति–रिवाजों को विषयपरक करना।
- विद्यार्थियों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने में सहायता करना। अन्य शब्दों में शंका का समाधान के लिए प्रोत्साहित करना, मानसिक साहस को उत्साहित करना और क्रिया को बंधन मुक्त करना।
- व्यक्तित्व का विकास और सामाजिक विशेषताओं का विकास करना।
- विद्यार्थियों में अपनत्व की भावना का विकास और समाज सेवा तथा देश सेवा के प्रति अर्पण योग्य बनाना।

3.3.2 महात्मा गाँधी

टैगोर की तरह गाँधी जी के बारे में विचार, उनके सामाजिक–संस्कृति से प्रभावित थे। उनका विश्वास था कि शिक्षा का पुनःनिर्माण सामाजिक और राष्ट्रीय पुनः निर्माण के लिए आवश्यक है। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति का परिचय दिया जिसे आधारभूत शिक्षा (Basic Education) के नाम से जाना जाता है। गाँधीजी की आधारभूत शिक्षा, शिल्प केन्द्रित शिक्षा है जोकि एक ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली का विरोध माना जाता है, जिसका उद्देश्य राजनीतिक बंधनों से मुक्ति और आर्थिक निर्भरता थी।

गाँधीजी का विश्वास था कि शिक्षा ज्ञान देने की प्रक्रिया नहीं बल्कि अधिगमकर्ता में छुपे ज्ञान को निकालने की प्रक्रिया है। ज्ञान का बिन्दुपथ "बाहर" नहीं बल्कि बच्चे के अंदर है। गाँधीजी ने शिक्षा का अर्थ समझाते हुए लिखा है कि – "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के उत्कृष्ट एवं सर्वगुण विकास से है।" गाँधीजी समग्र व्यक्तित्व विकास में विश्वास रखते थे। उनके अनुसार शिक्षा का मात्र अर्थ साक्षरता नहीं है अपितु मन, शरीर, आत्मा, सत्य तथा अहिंसा और आत्मा की जागृति की खोज हैं।

अतः शिक्षा, बच्चों में उच्च नैतिकता, आत्म–नियंत्रण, उचित सोच का विकास करती है जिससे आत्म बोधन हो सकें। उनका विश्वास था कि अधिगम द्वारा मानवता का भला होना चाहिए, जिसमें उचित प्रशिक्षण और सही अनुदेशन सम्मिलित है। शिक्षा का तात्कालिक उद्देश्य व्यक्तित्व का विकास, सम्पूर्ण जीवन, नैतिक चरित्र का निर्माण तथा नागरिक सुलभ गुणों का विकास है। उनका विश्वास था कि सामाजिक गुणों के अभाव में व्यक्ति अपने आन्तरिक गुणों का आभास नहीं करता और बिना व्यक्ति के समान अपने आपमें कुछ नहीं है। अतः उन्होंने सामाजिक सेवा के माध्यम से सामाजिक गुणों के हस्तांतरण पर बल दिया।

PDF Compressor Free Version

गाँधीजी ने बुनियादी शिक्षा की नींव रखी जो कि हस्तशिल्प पर आधारित है और जो एक उद्देश्यपरक, सृजनात्मक और समाज उपयोगी शिक्षा है। अतः यह बच्चों में समृद्ध उत्तरदायित्व, नागरिकता और सहयोग की भावना को उत्पन्न करती है। बुनियादी शिक्षा भिन्न विषयों, विषय ज्ञान को वास्तविक जीवन से जोड़ती है। अतः शिल्प साधन तथा साध्य दोनों है और सभी विषयों का केन्द्र बिन्दु भी है। इसी के माध्यम से व्यक्ति समाज से जुड़ता है। उन्होंने माना कि विद्यालय एक लघु समाज है जहाँ विद्यार्थी अपने अधिकार और उत्तरदायित्व को समझ पाता है। अतः उन्होंने सामाजिक संदर्भ को शिक्षा से जोड़ा।

गाँधी के अनुसार शिक्षा में अनिवार्य रूप से बच्चों में आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक विकास करने वाले होने चाहिए। उन्होंने बच्चों के त्रि–आयामी, मस्तिष्क, मन और क्रिया मे समन्वयन पर बल दिया। उनका विश्वास था कि लगातार जानने की उत्सुकता और जिज्ञासा अधिगम की पहली सीढ़ी है। वह बच्चे की 6–14 वर्ष की आयु में प्राथमिक और अनिवार्य शिक्षा पर विश्वास करते थे और जो बच्चे की मातृभाषा में होनी चाहिए। गाँधीजी चाहते थे कि शिक्षक, सरकार तथा अधिकारी वर्ग के हस्तक्षेप से रहित होना चाहिए। गाँधीजी को शिक्षा सुधारक, शिक्षा पद्धति में शिक्षा उद्देश्यों में आदर्शवादी तथा शिक्षा में प्रयोजनवादी माना गया है। गाँधीजी शिक्षा को अन्याय के विरुद्ध, देश के लिए स्वावलम्बी और सामाजिक विसंगतियों से मुक्त मानते थे।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि गाँधीजी का दर्शन सुदृढ़ तथा वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक है। हस्तशिल्प के शिक्षा से लागू कर उन्होंने बौद्धिक वर्ग तथा सामान्य कारीगर वर्ग के बीच की दूरी को कम करने का प्रयत्न किया तथा शिक्षित वर्ग और अशिक्षित वर्ग आदि को देश हित और राष्ट्र की एकता में समावेशित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने लोकतांत्रिक प्रणाली के आधार पर विद्यार्थी की लोकतांत्रिक विचारधारा जिसमें विद्यार्थी ज्ञान, कौशल, मूल्य, सहयोग, स्नेह, सहानुभूति, अपनत्व की भावना और समानता पर बल दिया। गाँधीजी की दूरदर्शिता "सर्वोदय समाज" में देखने को मिलती है। जिसकी मुख्य विशेषताएँ सामाजिक न्याय, शान्ति अहिंसा तथा मानवता को जोड़ती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1. "जहाँ तक शिक्षा दर्शन का सम्बन्ध है, टैगोर एक प्राकृतिवादी थे यद्यपि गाँधीजी एक प्रयोजनवादी" उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

2. टैगोर के अनुसार, शिक्षा के क्या उद्देश्य हैं?

....

....

....

PDF Compressor Free Version

3.4 शिक्षा में पाश्चात्य विचारकों का मत

जब भारत में नए शैक्षिक विचार पनप रहे थे तब पश्चिम में प्रचलित शिक्षा पद्धतियों को चुनौती दी जा रही थी। इनमें जॉन डिवी की और पाओलो फ्रेरे दो मुख्य विचारक हैं उनके विचार अलग थे और वे प्रचलित शिक्षा पद्धतियों से अप्रसन्न थे। अतः उन्होंने शिक्षा प्रणाली में नवीन विचारों का परिचय करवाया। उनकी विचारधारा समकालीन, शिक्षा विचारकता और सोच पर प्रभाव डालती है।

3.4.1 जॉन डिवी

आधुनिक समय में जॉन डिवी एक बहुत प्रभावशाली विचारक रहे हैं। उनका शैक्षिक दर्शन, प्रयोजनवाद, प्रयोगवाद, प्रकार्यवाद अनुभववाद, व्यवहार आदि को इंगित करता है।

आरंभ में डिवी एक आदर्शवादी थे परंतु बाद में वह प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद की ओर परिवर्तित हो गए। उनके दर्शन का केन्द्र बिन्दु ज्ञान के सिद्धान्त पर आधारित है जोकि आगामी विचारधारा "मन और संसार", विचार तथा क्रिया को सम्मिलित करता है। यह सत्रहवीं शताब्दी में पश्चिम दर्शन को इंगित करता हैं यह ज्ञान का सिद्धान्त इस बात पर जोर देता है कि "प्रत्येक निष्कर्ष जो हम निकालते हैं उसके हल की परीक्षा इसके संदर्भ में होती है कि वह किस सीमा तक हमारे वर्तमान ज्ञान तक सामंजस्य रखता है।" उनका शिक्षा में उद्देश्य वर्तमान में शिक्षा की मान्यताओं का प्रयोग के माध्यम से परीक्षण है। डिवी का दर्शन शिक्षा में "प्रयोगात्मक शिक्षा" के माध्यम से विकास और सुधार है।

उनकी शिक्षा "सामाजिक आवश्यकता और प्रकृति" से सम्बन्धित है जोकि जीवन की वृद्धि और जीने पर और उसके सामाजिक और व्यक्तिगत पहलू जोकि आपस में निर्भर हैं, उन पर आधारित हैं। सामाजिक दृष्टिकोण से मनुष्य की समाज के बिना परिकल्पना नहीं की जा सकती। वह अन्य मनुष्य के साथ मिलकर ही विकसित करता है। समाज में ही वह अच्छा साबित होता है जो अपनी भूमिका एक सदस्य के रूप में अदा करता है।

डिवी के अनुसार, "शिक्षा अनुभव के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया है जो कि व्यक्तिगत प्रत्यन के रूप में सामाजिक मूल्य को बढ़ाती है।" वे चाहते थे कि प्रत्येक विचारक और व्यक्तित्व वर्तमान नियमों के अनुसार विकसित नहीं होना चाहिए अपितु अपनी योग्यताओं के अनुसार विकसित होना चाहिए। उन्होंने शिक्षा का लोकतांत्रिक रूप में समर्थन किया और यही शिक्षा का उद्देश्य है, जो लोगों को एक प्रजातांत्रिक समाज में एक प्रभावशाली सदस्य के रूप में विकसित करें।

डिवी के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य उनका प्राकृतिक विकास, सामाजिक निपुणता, व्यक्ति के मस्तिष्क को ऐसे पोषण दें कि वे विचारों, कला तथा मानवीय रूचि की सराहना करें। डिवी का विश्वास था कि शिक्षा का उद्देश्य पूर्व निर्धारित कौशलों को पाने के इर्द गिर्द न होकर, बल्कि अपनी योग्यतापूर्ण की प्राप्ति करना और उन क्षमताओं को समाज के लाभ पहुंचने में उपयोग करना है। अतः शिक्षा और अधिगम, सामाजिक और संवादात्मक प्रक्रिया है तथा विद्यालय एक ऐसी सामाजिक संस्था है जिसके द्वारा सामाजिक सुधार लाया जा सकता है। डिवी के लिए शिक्षा एक सामाजिक कार्य है जब तक हम समाज के सही रूप को नहीं जानते तब तक हम शिक्षा के सही रूप को नहीं जान सकेंगे।

डिवी के अनुसार, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को अपने विकास और उन्नति के लिए अपने आपको जानना है। विकास जो सृजनात्मकता और वार्तालाप द्वारा मिलती है, वह सबसे उत्कृष्ट है। डिवी के अनुसार, विकास के लिए तैयार करने की क्षमता ही

PDF Compressor Free Version

सामाजिक संस्थानों का मूल्यांकन करने का मानदंड है। डिवी का विश्वास था कि लोकतंत्र एक सामाजिक संरचना है जो बुद्धि को स्वतंत्र रूप से बढ़ने का अवसर प्रदान करती है। अतः शिक्षा स्वतंत्र होनी चाहिए। डिवी स्वतंत्रता की धारणा को अनुशासनहीनता में नहीं देखते हैं।

डिवी की स्पष्ट धारणा है कि शिक्षा का कक्षा में क्या स्थान है। वह पाठ्यक्रम की अनुचित महत्ता की आलोचना करते हैं क्योंकि वह विद्यार्थी ही पूरी अधिगम प्रक्रिया में निष्क्रय बनाती है। उनका मानना था कि विद्यार्थी को पर्यावरण के साथ अन्तःक्रिया में रहना चाहिए और उसके साथ ही पाठ्यक्रम से अनुभव के आधार पर अन्तःक्रिया करनी चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी को अपने स्व–अधिगम में भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। उनका मानना था कि विषयवस्तु को ऐसे प्रस्तुत किया जाना चाहिए कि बच्चों के पूर्व ज्ञान को नए ज्ञान के साथ जोड़ सके। उन्होंने ऐसी शिक्षा का समर्थन किया जो पढ़ाते समय विद्यार्थी के अनुभव है रूचि पर आधारित हो। अतः छात्रों का निरंतर चलने वाली प्रक्रिया बताया था अनुभव की अधिगम का केन्द्र बिन्दु माना। प्रत्येक अधिगम, क्रिया का परिणामस्वरूप है। विद्यार्थी क्रियाओं से ही सीखते हैं। ये बच्चे के "कर के सीखना" और 'जीवन को जीकर सीखने में ' बल देते थे। उन्होंने रटने की हमेशा आलोचना की है।

उन्होंने तर्क दिया कि चिन्तन में सामाजिक परिस्थितियों के बिना अनुभव और क्रिया से अलग होकर नहीं हो सकता। डिवी के अनुसार, "चिन्तन एक विधि है, यह एक बौद्धिक अनुभव है।" यह क्रिया की उपयोगिता को बढ़ने से है और अपने समाज को समझने से संबंधित है। एक रत्ती भर का अनुभव टन भर की सिद्धांत से कहीं अधिक अच्छा होता है क्योंकि अनुभव ही सिद्धांत से कहीं अधिक महत्ता रखता है।

डिवी के अनुसार, बच्चा शिक्षा अधिगम का केन्द्र है। शिक्षा का आरंभ बच्चे के मनोवैज्ञानिक अन्तर्दर्शिता, क्षमता, रूचि और आदतों से होता है। उनका मानना था कि बच्चे की क्षमताओं और रूचियों को सामाजिक संदर्भ में देखते हैं और ये उन्हें सामाजिक संदर्भ में विकसित करते हैं।

डिवी के अनुसार, शिक्षा स्वयं में जीवन है, न कि जीवन की तैयारी। डिवी विद्यालय को सामाजिक जीवन की एक मुख्य संस्था मानते हैं। उनके अनुसार, विद्यालय समाज की मुख्य आवश्यकता है। विद्यालय वह स्थान नहीं है, जहाँ ज्ञान केवल अर्जित किया जाता है या जहाँ कुछ आदतों का विकास होता है, बल्कि जहाँ विद्यार्थी अपने अनुभवों से सीखता है। यह परिवार का बढ़े हुए हाथ है। घर में और विद्यालय में बच्चे की गतिविधियों में कोई अचानक विराम नहीं होना चाहिए। शुरूआत में विद्यालय को, बच्चों को उन अनुभवों और गतिविधियों का पुनर्निर्माण करना चाहिए जिनसे वे घर में परिचित हो। इस प्रकार विद्यालय बच्चों को घर जैसी वातावरण में देना चाहिए।

डिवी का मानना था कि विधि विषय से अविभाज्य नहीं है। उनके लिए विधि या संरचना एक उद्देश्य के लिए संरचना है। विधि का अर्थ है विषय की ऐसी व्यवस्था जो उसे सबसे ज्यादा उपयोगी बनाए। उनके अनुसार शिक्षक के केवल विषय में ही व्यस्त नहीं रहना चाहिए, बल्कि वर्तमान में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं पर भी ध्यान देना चाहिए। शिक्षण केवल विषय पढ़ाना नहीं है बल्कि विषय को अच्छी तरह से सिखाने के लिए, विद्यार्थियों की इच्छाओं, हितों और संज्ञानात्मक विकास से जोड़ना है। प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक अध्यापक को विषय की पूरी जानकारी, विश्वास और अच्छे कमान की आवश्यकता होती है।

डिवी की शिक्षण के लिए निम्न योग्यताएँ होना आवश्यक है: – युवा बच्चों के साथ काम करने के लिए एक प्राकृतिक प्यार, विषयों तरीकों और अन्य सामाजिक पेशों से सम्बन्धित मुद्दों के बारे में पूछताछ की प्रवृति और अर्जित ज्ञान की दूसरों से साझा करने की इच्छा।

PDF Compressor Free Version

शिक्षक की जिम्मेदारी है कि वे विद्यार्थियों को अनुशासित करे, ताकि वे प्रचलित मानकों और अभ्यासों का कर सके। लेकिन, इस तरह करे की विद्यार्थियों की व्यक्तिगत क्षमताओं का विकास हो सके। यहाँ शिक्षित करने से मतलब है व्यक्ति की रचनात्मक और कलात्मक क्षमता का विकास और साथ में उन्हें महत्वपूर्ण जाँच में संलग्न होने की क्षमता का विकास करना है। और यदि आवश्यक हो, तो भविष्य में एक बेहतर समाज विकसित करने के लिए मौजूदा सामाजिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण रखने की क्षमता से भी है।

जॉन डिवी का, ज्ञान रचना के बारे उनको विचार लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 में भी परिलक्षित हैं। "बच्चों के संज्ञान से तभी शिक्षक अपनी भूमिका को बढ़ा सकता है। जब वे ज्ञान रचना की प्रक्रिया में एक सक्रिय भूमिका ग्रहण करें। बच्चे ज्ञान का निर्माण तब करते हैं जब वे अधिगम प्रक्रिया में संलग्न हो। बच्चों को प्रश्न पूछने की अनुमति, उन्हें विद्यालय से बाहर जो वे सीख रहे हैं, बच्चों को अपने स्वयं के शब्दों में और अपने अनुभव से उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करता है। न कि सिर्फ उनसे रटना और केवल एक ही तरह के उत्तर की अपेक्षा रखता है।

3.4.2 पाओले फ्रेरे

पाओले फ्रेरे का शिक्षणशास्त्र मुख्यतः नव–उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद की ऐतिहासिक और राजनैतिक परिस्थितियों में विकसित हुआ। फ्रेरे की समाज की समाज और सामाजिक संबंधों की अवधारणा वर्ग संबंधों पर आधारित थी। वे सामाजिक–गतिकी को उत्पीड़क और उत्पीड़ित अन्तर्विरोधों के रूप में देखते है।।

फ्रेरे ने दो प्रकार के ज्ञान की चर्चा की है, अचेतन, जो कभी–कभी व्यवहारिक ज्ञान है, और आलोचनात्मक, जो चिन्तनशील या सैद्धांतिक ज्ञान है। धारणाएं चर्चा एवं आलोचनात्मक चिंतन द्वारा ज्ञान का रूप लेती हैं। ज्ञान को केवल तर्क का विषयवस्तु या संवेदनाओं और अंधविश्वासों तक सीमित नहीं होना चाहिए वरन् उसे समझ एवं भावनाओं के बीच संबंध खोजना चाहिए।

उनकी जमाकारी (बैंकिंग) शिक्षा की शिक्षणशास्त्रीय आलोचना तथा उनकी समास्योन्मुखी (Problem-posing) शिक्षणशास्त्रीय संरचना उनके मनुष्य के संप्रत्यय से जुड़ी हैं। पाउले फ्रेरे प्रचलित शिक्षण व्यवस्था के मुखर आलोचक थे। जैसी शिक्षा अभ्यास में थी, उसे वे जमाकारी (बैंकिंग) शिक्षा का प्रत्यय कहते थे। इस अवधारणा में शिक्षा के साथ एक जमा (एकल) करने वाली गतिविधि के रूप में व्यवहार/अभ्यास होता है। इस जमा करने के कृत्य में, विद्यार्थी संग्रहकारक हो जाता है और अध्यापक संग्रह करने वाला। विद्यार्थियों के कार्य व्यवहार की सीमा मात्र प्राप्तकर्ता, पूर्तिकर्ता या संग्रह के एकलकर्ता मात्र ही रह जाती है। संग्रहकर्ता की भूमिका में अध्यापक बच्चे में एक उत्पीड़क चेतना का विकास करता है। फ्रेरे कहते हैं कि इस जमाकारी प्रकार की शिक्षा ने शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध तथा शिक्षण प्रक्रिया को काफी हानि पहुंची है।

फ्रेरे का जमाकारी संबंधी विवरण तथा समस्योन्मुखी शिक्षा संबंधी अनुशंसा, मनुष्य के बारे में उनकी समझ, उनकी चेतना और संचार से उनके संबंध पर आधारित है। फ्रेरे के अनुसार, जमाकारी शिक्षा मनुष्य की 'वस्तु' के रूप में एक झूठी समझ से प्रारंभ होती है।

जमाकारी शिक्षा में मनुष्य और संचार के बीच विरोधाभास का अनुमान अन्तर्निहित है। मनुष्य संचार में मात्र है, वह संसार के या अन्य के साथ नहीं है। मनुष्य दर्शक है, पुनर्निर्माणकर्ता नहीं। इस विचार में मनुष्य सचेतन नहीं है, उसमें केवल चेतनता मात्र है, एक खाली मस्तिष्क जो बाहरी दुनिया से वास्तविकताओं को जमा करने के लिए निष्क्रिय रूप से खुला है।

PDF Compressor Free Version

समास्योन्मुखी शिक्षा की विषयवस्तु इस 'प्रकरण युक्त ब्रह्माण्ड' के अन्वेषण से जन्म लेती है। जमाकारी शिक्षा, 'प्रमुत्व' के सततता के लिए अपने शिक्षण भारतीय कार्य करती है, यहीं समस्योन्मुखी शिक्षा 'स्वंत्रतता' से अपने शिक्षणशास्त्र को निर्मित करती है। फ्रेरे ने आचरण (Prais) और संवादवकता (Pizlogue) के आधार पर मनुष्यों के विवेकीकरण (Conscientization) का शिक्षणशास्त्र प्रस्तावित किया। विवेकीकरण में अध्येता द्वारा स्वयं विकसित हो रही आलोचनात्मक जागरूकता तथा इसमें परिवर्तन के लिए वास्तविकता से कार्य करने की इच्छा, दोनों सम्मिलित हैं। आचरण (Prais) मानव व्यवहार एवं चिन्तनशीलता की आपास में गुंथी स्थिति है। संवादात्मकता केस शिक्षक की विधि नहीं, वरन् मानवीयकरण की अस्तित्ववादी वास्तविकता है।

अतः, अधिगम एक प्रक्रिया है जहां ज्ञान को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया जाता है, फिर उसे बोध, चर्चा एवं चिन्तन के द्वारा आकार दिया जाता है। शिक्षा को विद्यार्थियों में जागरूकता विकसित करनी चाहिए, जिससे वे 'वस्तु' की बजाय संसार के एक 'व्यक्ति' बनें। ऐसा विद्यार्थियों को लोकतांत्रिक ढंग से सोचना, निरंतर प्रश्न करना तथा जो कुछ भी उन्होंने सीखा है, उसका अर्थ निम्राण करना, पढ़ाकर किया जाता है।

- आचरणात्मक व्यवहार की चिन्ता, जो ज्ञात हो तथा जिससे कुछ मूल्य जुड़े हों। उन्होंने बल दिया कि संवाद के परिणामस्वरूपव केवल समझ ही गहरी न हो, वरन् इससे औपचारिक कार्यव्यवहार हों तथा दुनिया में एक बदलाव भी आए।

- विवेकीकरण की चिन्ता : ऐसे विवेक का विकास करना जिसमें वास्तविकता में परिवर्तन लाने की शक्ति निहित हो।

- भागीदारों को सजीव अनुभवों पर बल : ऐसे शैक्षणिक क्रियाकलाप प्रदान करना जो व्यक्तियों के सजीवन परिस्थितियों/अनुभवों के अनुरूप हो।

फ्रेरे के विचारों का प्रभाव राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–रूल पर देखा जा सकता है जहां यह उल्लेख किया गया है कि शिक्षण मात्र एक पाठ की योजना बनाने का क्रियाकलाप या वस्तुनिष्ठतापूर्वक मापने योग्य अधिगम निष्पत्तियों को प्राप्त करने के लिए पूर्व–से तैयार ज्ञान प्रस्तुत करना नहीं है। अब इसे बच्चों को 'चिन्तन तथा उन्होंने जो सीखा, उसका अनुप्रयोग करने के लिए तैयार करने की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। शिक्षक को अपनी परंपरागत' सूचना प्रदाता' की भूमिका से 'उत्प्रेरक'ह्र तथा 'मार्गदर्शक' की भूमिका में आना होगा। शिक्षक की भूमिका ज्ञान के सृजन में सुसाध्यकर्ता तथा सही प्रश्न उठाकर तथा उचित प्रकार संगठित क्रियाकलापों तथा कार्यों को आयोजित करके बच्चों को सम्मिलित करने की है। सक्रिया भागरीदारी में अन्वेषण, खोज, प्रश्न करना, वाद–विवाद, अनुप्रयोग तथा ऐसी चिन्हनशीलता सम्मिलित है जो सिद्धांत निर्माण तथा विचारों/स्थानों के निर्माण की ओर ले जाए। विद्यालयों को अवश्य ही प्रश्न करने, वाद–विवाद, अन्वेषण, चिन्तनशीलता संप्रत्यय निर्माण या नयं विचारों के सृजन के अवसर देने चाहिए।

— राष्ट्रीय पाठ्यचया रूपरेखा

फ्रेरे का स्पष्ट रूप से मानना था कि जानना एकबैंकिंग अवधारणा में निहित मनुष्य और दुनिया के बीच एक विरोधाभास की धारणा है। मनुष्य मात्र दूसरों के साथ है, एक साथ नहीं। आदमी एक दर्शक है, पुनर्निर्माण कर्ता नहीं।

PDF Compressor Free Version

बोध प्रश्न

टिप्पणीः (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।
(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

3. "शिक्षा एक सामाजिक आवश्यकता और क्रिया है।" वर्णन कीजिए।

....

....

....

4. बैंकिंग अवधारणा का वर्णन करें।

....

....

....

5. डिवी के दर्शन के मुख्य तत्व क्या–क्या हैं?

....

....

....

3.5 शिक्षा के उद्देश्यों में समानताएँ और भिन्नताएँ

अभी तक हमने शिक्षा के उद्देश्यों का भिन्न–भिन्न आधुनिक भारतीय और पाश्चात्य विचारकों के अनुसार अध्ययन किया। अब हम शिक्षा के उद्देश्यों में समानताओं और भिन्नताओं को समझने का प्रयास करेंगे।

यह जानना काफी रूचिकर है कि बहुत सारे सामान्य और समान बिन्दु भारतीय विचारकों के हैं, जिन्हें हमने जाना है। सभी की विचारधारा में शिक्षा, व्यक्ति मे (बच्चों तथा व्यक्तिगत विकास) तथा सर्वांगीण विकास है। सभी ने व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास के सम्बन्धों को उजागर किया है।

दूसरी तरफ वे सार्वभौमिक मानव पर विश्वास करते हैं। यद्यपि जिनमें किसी भी प्रकार का कोई विभेद नहीं है बल्कि सभी को आदरयोग्य, प्रेम योग्य और बराबर समझा जाता है। इसके अतिरिक्त, उनके विचार में व्यक्ति के बिना समाज में कोई मूल्य नहीं और समाज बिना व्यक्ति के विकास से आगे नहीं बढ़ सकता। वे समझते हैं कि व्यक्ति और समाज का लक्ष्य दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

एक अन्य बिन्दु जिसमें भारतीय विचारक एक मत है, वह है अधिगमकर्त्ता की स्वतंत्रता। वे अधिगमकर्त्ता की आजादी का समर्थन करते हैं और विवशता या दबाव से परे हो जाते हैं।

टैगोर और गाँधी शिक्षा के सांस्कृतिक पहलू के सम्बन्ध में एक मत है। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य लोगों को जागरूक करना होना चाहिए और अपने देश की समानता पर गर्वावित होने के साथ विदेशी संस्कृति के लिए भी आदर व्यवहार होना चाहिए।

PDF Compressor Free Version

भारतीय विचारकों में मतभेद भी पाए जाते हैं। टैगोर ने मनुष्य और प्रकृति के सम्बन्धों पर बल दिया है और आत्म अभिव्यक्ति तथा मधुर सम्बन्धों का स्मरण किया है। आधुनिक समय में पुराने भारतीय विचारों को संजोने का सारा श्रेय उन्हें ही जाता है। और दूसरी तरफ गाँधीजी शिल्प शिक्षा और हस्तशिल्प शिक्षा पर बल देते हैं, तथा सर्वोदय समाज में आत्मनिर्भर तथा आत्म योग्यता का समर्थन करते हैं।

निष्कर्ष के रूप में स्पष्ट कहा जा सकता है कि भारतीय विचारकों में शिक्षा के उद्देश्यों को लेकर भिन्नताओं की अपेक्षा अधिक समानताएँ हैं। प्रत्येक विचारक ने अलग भाषा तथा अलग तरीके से एक समान मत दिया है। अन्ततः, सभी ने अपने आप को जानने, अपनी क्षमताओं को जानने तथा जीवन के अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त करना ही शिक्षा के मुख्य लक्ष्य के रूप में अंकित किया है। सभी आधुनिक विचारकों का मानना है कि शिक्षा व्यक्ति को सामाजिक बंधनों से मुक्त करता है। वे मानते थे कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का संपूर्ण विकास है तथा व्यक्ति और समाज के उद्देश्य समान हैं। आधुनिक समाज में व्यक्ति को अपनी भूमिका का निर्वाह करने के लिए पूर्ण रूप से परिपूर्ण होना चाहिए। भारतीय विचारकों के अनुसार पाश्चात्य विचारक भी अधिगमकर्त्ता की स्वतंत्रता तथा अधिगम को मान्यता देते हैं। परंतु वे शिक्षा के अलग पहलू और विचारों में भिन्नता रखते हैं।

जॉन डिवी, विद्यालय को एक अलग सामाजिक संस्था मानते हैं, जहाँ बच्चे का मुख्य आवेग, सम्प्रेषण, निर्माण, पूछताछ और व्यक्त करना उसकी क्रियात्मक उन्नति है। उन्होंने रटने की बजाय "करके सीखने" पर बल दिया।

डिवी के अनुसार, पाओले फ्रेरे ने एकीकरण के सिद्धान्त और अभ्यास पर बल दिया। उन्होंने माना कि शिक्षा मानव की मानवता और दशा को सुधार सकती है। उन्होंने "दीन की शिक्षण" की वकालत की है उनके अनुसार यह शास्त्र विचार, बातचीत की बजाय क्रियात्मक पक्ष रखता है। अतः पॉल फेयरी के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य लोगों में आलोचनात्मक चेतना का विकास है।

मुख्य रूप से भारतीय विचारक और पाश्चात्य विचारक में शिक्षा के, आध्यात्मिक पक्ष में मतभेद पाया जाता है। यद्यपि सभी विचारक शिक्षा में आध्यात्मिकता को महत्व देते हैं और आध्यात्मिक विकास की शिक्षा का उद्देश्य मानते हैं। वहीं पाश्चात्य विचारक, मनुष्य का उसके सामाजिक वातावरण के संबंध पर ध्यान देते हैं।

3.6 शिक्षा में वैचारिक तार्किक परिप्रेक्ष्य

आर.एस. पीटर ने अपने शिक्षा का विश्लेषण करते हुए, शिक्षा को "सुधार" और "ईलाज" से तुलना की है। उनके अनुसार शिक्षा कोई विशेष प्रक्रिया को संदर्भित नहीं करती बल्कि उन मानदंडों को संपुटित करता है, जिन्हें प्रक्रियाओं को मानना चाहिए। इस तरह यह "सुधार" की तरह है। उनके अनुसार शिक्षा एक शुरूआत है, जिसमें शिक्षा को कार्यसिद्ध की प्रक्रिया माना जाता है। उनके अनुसार, "शिक्षा, बच्चे को एक प्रकार के जीवन में दीक्षा के रूप में होती है।" यह एक ऐसी संस्कृति जिसे सार्थक माना जाता है।

शिक्षा मूलतः एक ऐसी प्रक्रिया है जो जानबूझकर स्वेच्छा, सगमता से संचारित होती है, और यह विद्यार्थी में इसे प्राप्त करने की इच्छा तैयार करती है। तात्पर्य यह है कि ऐसा शिक्षित मनुष्य वह है कार्य की सफलता के लिए कार्य करता है। इस प्रकार यह सभी प्रक्रियाओं में सुधार के रूप में देखता है जोकि मनुष्य को नैतिक रूप से उत्तम बनाने में सहायता करता है। इसी प्रकार शिक्षा, सिद्धान्तों का समूह है, जिससे एक शिक्षक, दूसरों के जीवन को सुदृढ़ बनाना और विद्यार्थियों की ज्ञान और समझ को बढ़ाने में भूमिका

PDF Compressor Free Version

निभाता है।

इसके साथ विषयवस्तु को लाभकर और कभी भी आपत्तिजनक नहीं होना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य सुधार है और सुधार का अर्थ मनुष्य को अपनी उत्तरदायित्व का अनुभव कराना है।

पीटर (1967) के अनुसार, शिक्षा की मुख्य तीन कसौटियाँ हैं:

1. एक शिक्षित व्यक्ति वह है, जिसकी जीवन शैली सोचने के लिए वांछनीय है।
2. उसे कुछ भी करने के लिए उसमें ज्ञान का होना और सिद्धान्तों की समझ होना आवश्यक है।
3. उसका ज्ञान और समझ निःसक्रिय नहीं होना चाहिए।

हम उसे शिक्षित नहीं बोल सकते जो केवल कौशल में दक्ष है। शिक्षित होने के लिए व्यक्ति के पास ज्ञान का होना आवश्यक है। उसके पास ऐसे वैचारिक पक्ष होने चाहिए, जिनसे वह अपने तथ्यों को संगठित कर सके और अपने असंबंधित ज्ञान से उपर उठा सके। इसका तात्पर्य है कि उसमें तथ्यों को संगठित करने के सिद्धांतों की समझ होनी चाहिए। हमें यही भी समझ होनी चाहिए। हमें यह भी समझ होनी चाहिए कि चीजें क्यों होती है। शिक्षित व्यक्ति का व्यवहार और आचार बताता है कि वह कितना ज्ञान रखता है? ज्ञान कभी भी स्थायी नहीं होता, क्योंकि इसमें प्रत्येक तरह की सहमति सम्मिलित होती है जोकि अन्दर से विचार और जागरूकता लाती है। एक व्यक्ति वास्तव में वैज्ञानिक रूप तब तक नहीं समझ पाता जब तक उसके पास तथ्य होते और साक्ष्य नहीं होते हैं। प्रत्येक तरह का चिन्तन और समझ की सहमति जरूरी है। शिक्षा संपूर्ण व्यक्ति के लिए है, ना कि सामान्यतः किसी विशेष प्रशिक्षण के प्रति विरोध है।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

5. शिक्षा का एक दीक्षा संस्कार के रूप में वर्णन कीजिए।

....

....

....

3.7 शिक्षा में सामाजिक परिप्रेक्ष्य

शिक्षा को अलग–अलग परिप्रेक्ष्य से अध्ययन किया जा सकता है। यह परिप्रेक्ष्य कुछ बिन्दुओं पर एक जगह विलीन हो जाते है, क्योंकि यह सभी मानते हैं कि शिक्षा समाज की एक महत्वपूर्ण क्रिया है। इस भाग में हम समाज और शिक्षा का संबंध को विशेषकर विद्यालय के संदर्भ में समाजीकरण के माध्यम के रूप में और शिक्षा सामाजिक बदलाव और नियंत्रण के रूप में समझेंगे। यह भी जानेंगे कि कैसे संस्कृति बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव डालती है और कैसे विषयवस्तु और शिक्षण विधि, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित होती है।

PDF Compressor Free Version

बच्चे के आधुनिक अध्ययन का महत्व यह है कि अध्ययन का उद्देश्य व्यक्ति का दूसरों के साथ सम्बन्ध स्थापित करना है। व्यक्ति समाज के साथ ही बड़ा होता है और उसके नियमों का पालन करता है। जैसे कि कहा जा सकता है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का समाज के साथ, एक दूसरे के साथ निर्भरता का सम्बन्ध स्थापित करना है। शिक्षा ही संस्कृति और मूल्यों के सांस्कृतिकरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी भी समाज में, मन की स्थिति, विचारों के आदान प्रदान का तरीका तथा जागरूकता और संस्कृति एक मूलभूत मूल्य है। शिक्षा को हम एक अपने पारिवारिक वार्तालापों से समझते हैं वह हमें जागरूक बनाती है और पालन भी कराने हैं।

शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य, प्रत्येक विद्यार्थी को उनकी सामाजिक धरोहर, आदर्श परंपरा के बारे में अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है। यह सामाजिक सेवा और सामाजिक सम्प्रेषण से ही संभव है। इससे व्यक्ति में सामाजिक दक्षता का विकास होता है। शिक्षा को वास्तव में, व्यक्ति के सामंजस्य की क्षमता और सामाजिक वातावरण में सामंजस्य बैठाने के रूप में समझा जाता है। शिक्षा व्यक्ति क सामाजिक समूह में सार्वभौमिकता को स्पष्टीकरण करने वाली होनी चाहिए तथा साथ ही व्यक्ति को सामाजिक बुराइयों से जैसे जुर्म, नशाखोरी आदि से दूर कराने वाली होनी चाहिए। यह बच्चे को भविष्य के जीवन के लिए तैयार करता है। अन्य शब्दों में बच्चे, सामाजिक व्यवहार के नियमों को शिक्षा के माध्यम से सीखते हैं। अतः बच्चे को, अपने आपको समाजीकरण प्रक्रिया और शिक्षा द्वारा विभिन्न भूमिकाओं के लिए तैयार करना चाहिए। शिक्षा का सामाजिक परिप्रेक्ष्य, सामाजिक नियमों और मूल्य द्वारा सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में सहायता करती है, जिसे सामाजिक नियंत्रण भी कहा जाता है। यह सामाजिक सम्बन्धों पर केन्द्रित है जोकि व्यक्ति को सामाजिक सांस्कृतिक में समाजीकरण प्रक्रिया द्वारा उपयुक्त बनाती है। इसी संदर्भ में शिक्षा अनौपचारिक भी है जो परिवार से और सहमति समूह से प्राप्त की जा सकती है। प्रत्येक समाज मानता है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का मुख्य औजार है। इसी कारण से विद्यालयों का समाज में महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यालय व्यक्ति परिवर्तन द्वारा सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, तथा समाज को जागृत बनाते है। व्यक्ति अपनी अनुभूति, शिक्षा द्वारा और सामाजिक संस्कृति में सक्रिय प्रतिभागी के रूप में स्वयं करता है। जहाँ तक संभव है एक व्यक्ति सुधार के लिए संघर्ष भी करता है।

शिक्षा को सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक भावनाओं के विकास, सामाजिक संचरण, व्यावसायिक दक्षता में सुधार, खाली समय का सदुपयोग, व्यक्ति रचना और रचनात्मक दृष्टिकोण के विकास का साधन माना जाता है। अतः शिक्षा व्यक्तियों में सामाजिक सेवा की भावना, सामाजिक दक्षता, भावनात्मक एकता, राष्ट्रीय एकता, देशभक्ति की भावना को समझाने में भूमिका निभाती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणीः (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

6. शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक औजार है, उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

....

....

....

PDF Compressor Free Version

7. तार्किक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

3.8 सारांश

इस इकाई में हमने चार आधुनिक विचारकों, टैगोर, गाँधी, डिवी और पाओले फ्रेरे के विचारों को प्रदर्शित किया। हमने इनके शैक्षिक विचारों का अध्ययन करके यह पाया कि यह प्रचलित शिक्षा प्रणाली और प्रथाओं का विरोध करते हैं। जहां तक इसके साथ शिक्षा के उद्देश्य का सवाल है, यह चारों विचारक, आत्म अभिकरण और मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक, नैतिक और आत्म आध्यात्मिक के इर्द गिर्द ही घूमते हैं। उन्होंने बच्चे की आत्म अनुभूति की स्वतंत्रता पर बल दिया है। वे व्यक्ति में विश्वास करते हैं उनका मानना है कि व्यक्ति के रूपांतरण से ही सामाजिक रूपांतरण होता है। अतः वे व्यक्ति के सम्मिश्रित विकास के लिए सामाजिक और व्यक्तिगत उद्देश्यों के विकास के लिए सुझाव देते हैं। यद्यपि उनके द्वारा सुझाई गई विधि और अभ्यास पूर्ण रूप से अलग है। टैगोर प्रकृति के साथ सक्रिय संभीषण के बारे में बात करते है। वहीं गाँधीजी शिल्प आधारित शिक्षा की बात करते हैं। आगे डिवी के विचार प्रायोजनवादी और प्रयोगवादी दर्शन पर आधारित हैं जोकि "करके सिखने" का प्रचार करते हैं। उनके लिए शिक्षा प्रयोग, निर्माण और पुनः निर्माण की प्रक्रिया है। यह जीवन के लिए तैयारी नहीं है, बल्कि अपने आपमें जीवन है। जबकि पाओले फ्रेरे व्यवसायी शिक्षा, जोकि मनुष्य के दिमाग को खाली बर्तन मानता है। वह समस्या निवारण शिक्षा का समर्थन करते हैं जो मनुष्य को एक चेतना मानता है, जो संसार में लगातार बातचीत करता है। हमने शिक्षा के तार्किक प्रत्यय के परिप्रेक्ष्य का भी वर्णन किया है, जिसके अनुसार शिक्षा एक "सुधार" और "जिज्ञासा" की प्रक्रिया है। इकाई के अंत में शिक्षा के समाजीकरण परिप्रेक्ष्य का भी वर्णन किया है जिसमें शिक्षा एक समाजीकरण की प्रक्रिया है। साथ ही सामाजिक नियंत्रण के साथ–साथ सामाजिक परिवर्तन की कुंजी भी है।

3.9 इकाई के अंत में अभ्यास

1. जॉन डिवी की भारतीय शिक्षा प्रणाली में मान्यताओं का वर्णन कीजिए।
2. "शिक्षा समाजीकरण की प्रक्रिया है।" वर्णन कीजिए।

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. उत्तर के लिए भाग 3.3 देखें।
2. शिक्षा के उद्देश्य थे:
   - विचारों की स्वतंत्रता को प्रोत्साहन देना, स्वतंत्रता की भावना और स्वतंत्र इच्छा को बढ़ावा देना।
   - व्यक्ति की नैतिक, आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहन देना और भिन्न बंधनों से मुक्ति।
   - आत्मसात् की योग्यता उत्पन्न करना और नए विचारों को लागू करना तथा कल्पना और चिंतन की योग्यता।

PDF Compressor Free Version

- नई पीढ़ी को राष्ट्रीय संस्कृति और धरोहर के प्रति जागरूक करना और उसके महत्व को जानना, दूसरे देशों की संस्कृति की सराहना और उसे सीखना।
- भारतीय स्त्री–पुरुष की तर्कसंगत और व्यक्तिगत रिवाज़ तथा सामाजिक विषय पर कम महत्वहीनता।
- विद्यार्थियों में "वैज्ञानिक दृष्टिकोण" अपनाने में सहायता करना अन्य शब्दों में निर्माणात्मक शंका को प्रोत्साहित करना, मानसिक साहय के प्रति प्यार, विश्व को साहसिक विचारों की ओर क्रिया की दृढ़ता को अपनाना।

3. सामाजिक दृष्टिकोण से शिक्षा एक निरंतर अस्तित्व है और संस्थाओं में सामाजिक जीवन के हर तरह रूपांतरण के लिए आवश्यक है।
4. व्यावसायिक प्रत्यय के रूप में शिक्षा को एक स्थिर क्रिया के रूप में मानना जहाँ विद्यार्थी "जमा करने वाला" और शिक्षक "जमा करवाने वाला" बनता है। विद्यार्थी का कर्म क्षेत्र केवल प्राप्त करना, भरना और संग्रह करना मान्य है।
5. अभ्यास और एकीकरण का सिद्धान्त
   - ज्ञान का सिद्धान्त जिसमें संसार और मन का द्वैतवाद विचार तथा क्रिया सम्मिलित हैं।
   - प्रयोगात्मक शिक्षा/पूर्ण शिक्षा
   - करके सिखना/अनुभव पर बल
   - लोकतंत्र को वचनबद्धता
6. भाग 3.8 समझने के लिए और आपके अनुभव के लिए उदाहरण।
7. शिक्षा का तार्किक परिप्रेक्ष्य वस्तुओं के "क्यों–कारण" की ओर इंगित करता है। केवल कौशल में दक्षता का ज्ञान एकत्रित करना व्यक्ति को शिक्षित नहीं बनाता। उसको तथ्यों की संरचना के सिद्धान्तों की समझ अनिवार्य है।

शिक्षा का सामाजिक परिप्रेक्ष्य, इस बात पर बल देता है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का शक्तिशाली साधन है।

3.11 संदर्भ पुस्तकें एवं सुझाई गई अध्ययन सामग्री

चड्डा, वाई. (1997). *रिडिस्कवरी गांधी* लंदनः सेंचुरी।

डेवी, जॉन (1916). *डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन,* न्यूयॉर्क : मैकमिलन

दुर्कीम, एमिल (1956). *एजुकेशन एंड सोशयोलॉजी* न्यूयॉर्क : दि फ्री प्रेस।

फ्रेरे पाओले (1993). एजुकेशन फॉर क्रिटिकल कंसीक्यूसिस, न्यूयॉर्कः कंटीन्यूम।

फ्रेरे पाओले (1994). पैडेगॉगी ऑफ द ओपर्रेसेड, न्यूयॉर्कः ट्रांस मायरा बर्गमैन रावोस रेव. एडी.

इग्नू (2000): यूनिट 12 *एम्स ऑफ एजुकेशनः मार्डन थिंकर्स,* एम.ए. (शिक्षा) कार्यक्रम

क्रिप्लाणी, के. (1980) *रवींद्रनाथ टैगोरः ए बायोग्राफी,* शांतिनिकेतनः विश्व भारती।

एनसीईआरटी. (2005). नेशनल कैरीकुलम फ्रेमवर्क – 2005, नई दिल्ली।

एनसीईआरटी (2005) नेशनल कैरीकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन, नई दिल्लीः एनसीईआरटी।

PDF Compressor Free Version

ओटावे, ए. के. सी (1962) *एजुकेशन एंड सोसाइटी,* लंदनः रूटलेज और केगन पॉल।

पीटर्स आर. एस. (संपा.) (1967) *दि कंसेप्ट ऑफ एजुकेशन,* न्यूयॉर्क : रूटलेज।

रीड, इवान (1978). *सोशयोलॉजी पर्सपेक्टिव्स ऑन स्कूल एंड एजुकेशन,* लंदनः ओपन बुक्स

वेबसाइट

http://eepat.net/doku.php?id=dewey_john **वेबसाइट** 16-3-2016 को लिया गया।

http://infed.org/mobi/rabindranath-tagore-on-education/ **वेबसाइट** 16-3-2016 से लिया गया।

http://www.newfoundations.com/GALLERY/Gandhi.html **वेबसाइट** 16-3-2016 से लिया गया।

http://www.newfoundations.com/GALLERY/Freire.html oscIkbV 16-3-2016 से लिया गया।

PDF Compressor Free Version

इकाई 4 ज्ञान, समाज और शक्ति

संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 विचारधारा को समझना

4.3.1 अवधारणा को समझना

4.3.2 एक परिप्रेक्ष्य के रूप में विचारधारा

4.3.3 असत्य चेतना" के रूप में विचारधारा

4.3.4 विचारधारा और आधिपत्य

4.4 वाद–विवाद के क्षेत्र के रूप में पाठ्यचर्या

4.4.1 क्या "तटस्थ" पाठ्यचर्या के जैसा कुछ भी है?

4.4.2 पाठ्यचर्या सम्बन्धी विचारधाराएँ

4.4.3 कक्षा अभ्यास और विचारधारा: सम्बन्धों की खोज

4.4.4 परिवर्तन का शिक्षाशास्त्र

4.5 विचारधारा, पाठ्यचर्या और अदृश्य पाठ्यचर्या

4.5.1 अदृश्य पाठ्यचर्या क्या है?

4.5.1.1 प्राधिकरण के लिए आज्ञाकारिता और सम्मान सीखना

4.5.1.2 व्यक्तिवाद और प्रतिस्पर्धा

4.5.1.3 विद्यालय सामाजिक असमानताओं को पुनः उत्पन्न और सुदृढ़ करते हैं

4.5.1.4 कक्षा में बैठने की व्यवस्था

4.5.1.5 पाठ्यपुस्तकें और उपेक्षितों का प्रतिनिधित्व

4.6 पाठ्यचर्या और विचारधारा पर चर्चा की समीक्षा: शिक्षा की सार्थक स्वायत्तता?

4.6.1 एक "स्थानीय संस्था" के रूप में विद्यालय

4.6.2 राजनीतिक व्यक्तियों और नौकरशाही की भूमिका

4.6.3 हितधारकों की भूमिका

4.7 सारांश

4.8 इकाई के अंत में अभ्यास

4.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.10 संदर्भ पुस्तकें एवं सुझाई गई अध्ययन सामग्री

4.1 प्रस्तावना

आप सहमत होंगे कि शिक्षा कुछ स्थिर और अऐतिहासिक जैसी नहीं है। वास्तव में, इतिहास पर सावधानीपूर्वक अवलोकन से पता चलता है कि जिसे हम शिक्षा कहते हैं, यह समय–समय पर बदलती है, और इसकी प्राथमिकताओं में भी बदलता रहता है। इन दिनों आप महसूस कर सकते हैं कि शिक्षा धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक और व्यावसायिक होनी चाहिए; लेकिन फिर भी, हमारे कुछ प्राचीन ग्रंथ यह दर्शाते हैं, कि जब धार्मिक संस्थान बहुत शक्तिशाली थे, शिक्षा, धर्मनिरपेक्षता और तकनीकी से दूर, अनिवार्य रूप से आध्यात्मिक

PDF Compressor Free Version

और धार्मिक थी। प्रत्येक समाज की शिक्षा की अपनी धारणा होती है। शिक्षा का अर्थ समझने के लिए – हम जो सीखते हैं, किसे वैध ज्ञान माना जाता है या जिस तरह से हम सीखते हैं – हमें विशिष्ट समय और स्थान के परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता देखनी होती। तथ्य के मामले में, जब आप समाजशास्त्रीय रूप से शिक्षा को देखना शुरु करते हैं, तो आप महसूस करते हैं, कि इसे अलगाव में नहीं देखा जा सकता है, यह एक समय विशेष आयु की सामाजिक आवश्यकताओं से जुड़ी होती है। क्या प्रचलित है, शिक्षा के रूप में इसे राजनीति, अर्थव्यवस्था और संस्कृति से अलग नहीं किया जा सकता है। हम दो उदाहरण लेते हैं। इन दिनों, पर्यावरण शिक्षा को विद्यालय से उच्च शिक्षा स्तर तक पढ़ाया जा रहा है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि जटिल/औद्योगिक समाज में पर्यावरण एक बड़ी चिंता का विषय बन गया है, और उस तरह के ज्ञान के लिए प्रयास करना ज़रूरी है जो बढ़ते पर्यावरण संकट की समझ को विकसित करे और इसके समाधान के लिए, पारिस्थितिकी संवेदनशीलता उत्पन्न करे। इसी प्रकार, जैसे महिलाओं से जुड़े आंदोलनों को और अधिक वैधता प्राप्त हो रही है, विद्यालय पाठ्यचर्या, विद्यालय शिक्षा के एक महत्वपूर्ण उद्देश्य के रूप में लिंग संवेदीकरण को स्वीकार कर रहा है।

आप इस बात से सहमत होंगे कि यह समझना मुश्किल नहीं है कि शिक्षा हमारी सामूहिक चिंता से सम्बन्धित है। ये सामूहिक चिंताएँ स्वयं को राजनीतिक–आर्थिक विचारों के रूप में प्रकट करती हैं। शिक्षा और राजनीतिक–आर्थिक विचारों के बीच सम्बन्धों का पता लगाना दिलचस्प है। इस अवसर पर आप यह भी देख सकते हैं कि हर गतिशील समाज कई ऐसे विचारों और आकांक्षाओं के साथ रहता है यदि आप हमारे अपने समाज को देखते हैं, तो हम पाएँगे कि वहाँ भी (उदाहरण) के लिए, गान्धीवादी, मार्क्सवादियों और दलित विचारक है और इनमें से प्रत्येक के समाज के बारे में विचार, आकांक्षाएँ और विश्वास है जिसके निर्माण की आवश्यकता है। जैसे समाज का निर्माण वे करना चाहते हैं, उसी के अनुसार, उनके पास शिक्षा के लिए अपना स्वयं का एजेंडा है। ये विभिन्न सामाजिक–आर्थिक परियोजनाएँ, जिन्हें गान्धीवादी, मार्क्सवादी और अम्बेडकरवादी के रूप में माना जाता है, ही 'विचारधारा' के रूप में स्वीकारी जाती है। अपनी सामाजिक अवसर के आधार पर आपके लिए यह समझना मुश्किल नहीं है कि शिक्षा या पाठ्यचर्या, इन विचारधाराओं से अविभाज्य है। यही कारण है कि हर गतिशील समाज शिक्षा पर निरंतर बहस कर रहा है। यह वास्तव में एक वाद–विवाद का क्षेत्र है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप:

- विचारधारा के अर्थ और शिक्षा के साथ जुड़े लोगों के साथ–साथ कैसे यह सामाजिक संस्थानों और समाज को आकार प्रदान करते हैं और व्यवस्थित करती है, इसके बारे में समझ सकेंगे;
- यह विश्लेषण करने में सक्षम हो सकेंगे कि शिक्षा क्या है और क्या यह तटस्थ और "मूल्य–मुक्त" (value-free) हो सकती है;
- पाठ्यचर्या के अध्ययन से विचारधारा को सम्बन्धित करने में और विभिन्न पाठ्यचर्या सम्बन्धी विचारधाराओं के आधार का विश्लेषण और शिक्षाशास्त्र में उनकी अभिव्यक्ति कर सकेंगे;
- औपचारिक पाठ्यचर्या में पाठ्यचर्या की खोज और विश्लेषण करने में और शिक्षक के पक्षपात और व्यवहार और विद्यार्थी अधिगम पर असर डालने में इसकी भूमिका की कक्षा अभ्यासों में प्रकट कर सकेंगे;

PDF Compressor Free Version

- पाठ्यचर्या तैयार करने में शिक्षा की "सापेक्ष स्वायत्तता" (relative autonomy) की अवधारणा का खोज कर सकेंगे; और
- कक्षा में आलोचनात्मक अधिगम और अवसरों की समानता के माध्यम से "यथा स्थिति निरंतरता शिक्षणशास्त्र (status-quoist pedagogy) को चुनौती देने में चिंतनशील शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका की आवश्यकता और महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।

4.3 विचारधारा को समझना

जब हम विचारधारा और पाठ्यचर्या के बीच सम्बन्धों का पता लगाने की ओर बढ़ते हैं, तो यह समझना महत्वपूर्ण है कि विचारधारा क्या है, हमारी रोज की बातचीत में हम अक्सर इस शब्द का उपयोग करते हैं। हम विचारधाराओं को एक विश्वास, दृष्टिकोण और आकांक्षाओं के समान मानते हैं जो एक व्यक्ति या सामाजिक समूह की राजनीतिक आस्थाओं का वर्णन करने के लिए शब्द का उपयोग करते हैं, और यह कहें, गान्धीवाद, मार्क्सवाद और उदारवादी, आदि।

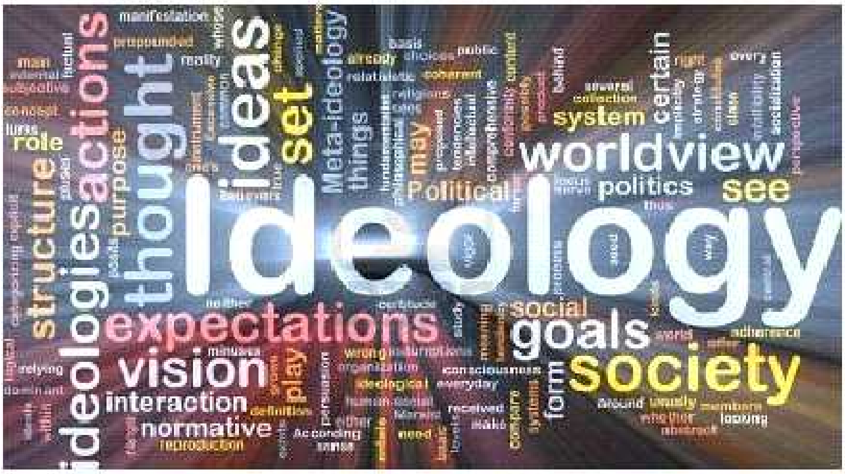

4.3.1 अवधारणा को समझना

विचारधारा एक लेंस है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति दुनिया को देखता है। यह एक व्यक्ति की वैश्विक दृष्टि होती है और संस्कृति, मूल्यों, विश्वासों, मान्यताओं, सामान्य ज्ञान और उम्मीदें, जो लोगों की स्वयं के लिए और दूसरों के लिए होती हैं, सब का मिश्रण है। विचारधारा हमारे विचार, क्रिया, बातचीत और हमारे जीवन और समाज में क्या घटित होता है, को आकार प्रदान करती है।

विचारधारा के माध्यम से हर कोई न केवल दुनिया को देखता है बल्कि दुनिया में अपनी स्थिति, दूसरों के साथ उनके सम्बन्ध, साथ ही साथ उनके व्यक्तिगत उद्देश्य, भूमिका और जीवन में पथ को भी समझता है। वैचारिक लेंस के माध्यम से एक दुनिया को देखता है और घटनाओं और अनुभवों की व्याख्या करता है। यह एक ऐसे फ्रेम की तरह है जो कुछ चीजों को अधिकार में लेता है और ध्यान केन्द्रित करता है और दूसरों को विचारों और महत्व से अलग करता है।

विचारधारा यह निर्धारित करती है कि हम चीजों का अर्थ कैसे समझते हैं, दुनिया को देखते हैं, इसमें आपसी जगह, और दूसरों के साथ हमारा सम्बन्ध, संपूर्ण सामाजिक जीवन और समाज, को आकार देने और व्यवस्थित करना आदि को समझते हैं। चूँकि यह हमारे

PDF Compressor Free Version

सामाजिक जीवन और समाज (जिसमें हम रहते हैं), के लिए गहन रूप से महत्वपूर्ण है, इसलिए हम ऐसा करने के प्रति जागरूक होने के बावजूद, विचारधारा से जुड़ते हैं और इसका बचाव करते हैं। यद्यपि, विचारधारा प्रचलित सामाजिक संरचना, उत्पादन की आर्थिक व्यवस्था, और राजनीतिक संरचना से उभरती है लेकिन उसमें व्यक्त किए गए सामाजिक हित छिपे हुए होते हैं और स्पष्ट नहीं होते। यह एक बंद प्रणाली बनाने का प्रयास करता है और विसंगतियों के चेहरे में स्वयं को रखता है।

विचारधारा की अवधारणा स्वयं ही सामान्य प्रकृति की है और केवल एक ही तरह से सोचने के तरीके से नहीं जुड़ी है। ***यद्यपि विचारधारा एक व्यक्ति की विश्वदृष्टि के रूप में देखी जाती है, यह वास्तव में, इतिहास में एक विशेष समय पर एक विशिष्ट समूह के एक अच्छी तरह से स्पष्ट, व्यक्त विश्वदृष्टि है। किसी भी समय एक समाज में विभिन्न सक्रिय और प्रतिस्पर्धात्मक विचारधाराएँ रहती हैं, और कुछ दूसरों की तुलना में अधिक प्रभावी होती हैं।***

4.3.2 एक परिप्रेक्ष्य के रूप में विचारधारा

विभिन्न सिद्धान्तों के अनुसार "विचारधारा" के अलग अर्थ हैं। मार्क्स और एंगल्स जैसे कुछ विचारकों के अनुसार, विचारधारा गलत/असत्य – चेतना या विकृत और भ्रमिक विचारों की एक प्रणाली है, क्योंकि, यह "उद्देश्य और मूल्य तटस्थ" लगती है, पर यह सत्तारूढ़ वर्ग के हितों को संरक्षित करने के लिए वास्तविकता को छुपाती है। एडोर्नो और थॉम्पसन जैसे विद्वानों के लिए, विचारधारा एक तटस्थ अवधारणा है, और एक विशिष्ट समूह की मूल्य प्रणाली या उदारवाद, फासीवाद और अन्य लोगों के बीच व्यवहार जैसे विचारों के किसी भी समूह से जुड़ी है। वास्तव में, समाजशास्त्रियों ने कुछ समय के लिए विचारधारा के अर्थ पर बहस की है। इस बहस के इस काफी लंबे इतिहास से हम तीन प्रमुख रूझानों की चर्चा करेंगे।

कार्ल मैनहेम (Karl Mannheim) जिसने एक उप अनुशासन के रूप में "ज्ञान के समाजशास्त्र" को विकसित और समृद्ध किया, विचारधारा को समझने में उल्लेखनीय योगदान दिया। मैनहेम के लिए, "ऐसे विचारों के तरीके हैं जिन्हें पर्याप्त रूप से समझा नहीं जा सकता है, जब तक कि उनकी सामाजिक उत्पत्ति अस्पष्ट हो।" हम अलगाव में नहीं सोचते। हम एक सामाजिक समूह के रूप में सोचते हैं। हम जो सोचते हैं – या जिस तरह से हम दुनिया को देख रहे हैं – हमारे समूह के अनुभवों पर निर्भर करता है: हम जो जीवन जीते हैं, जो हम संघर्ष करते हैं, जो रूचियाँ, हम बनाए रखने का प्रयास करते हैं, और उम्मीदें, जिन्हें हम संजो कर रखते हैं। प्रत्येक सामाजिक समूह (और मैनहेम ने बल दिया कि यह समूह ज़रूरी नहीं कि आर्थिक वर्ग पर आधारित हो, यह जाति, वर्ग, लिंग, जातीय या धार्मिक पहचान पर आधारित हो सकती है) का अपना सोचने का तरीका है। प्रत्येक सामाजिक समूह दुनिया को एक विशेष सहूलियत बिंदु से देख रहा है। अन्यथा इसे स्थापित करने के लिए, प्रत्येक सामाजिक समूह के पास एक "परिप्रेक्ष्य" या "विश्वदृष्टि" है, जिसे मैनहेम के अनुसार, समूह की "संपूर्ण विचारधारा" माना जाता है। एक संपूर्ण विचारधारा के रूप में, यह ठोस सामाजिक–ऐतिहासिक अनुभवों में निहित है; यह किसी विशेष व्यक्ति के "मनोवैज्ञानिक उद्देश्य" के साथ भ्रमित नहीं होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, जब हम कहते हैं कि पूँजीपतियों की एक विचारधारा है तो हम इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं कि व्यक्तियों के रूप में पूँजीपति क्या सोच रहे हैं। इसके बजाय, हमें यह जानने में रूचि है कि एक मूर्त सामाजिक–ऐतिहासिक परिस्थिति में उनकी व्यवस्थता के कारण, एक वर्ग के रूप में पूँजीपति दुनिया को कैसे देख रहे हैं।

PDF Compressor Free Version

मैनहेम के अनुसार, विचारधारा और काल्पनिक आदर्श के बीच एक भेद किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, मौजूदा क्रम को संरक्षित करने में सत्तारूढ़ समूह की निहित रूचि है। इसकी विचारधारा यथास्थिति बरकरार रखती है; इसकी प्रकृति प्रभाववादी है लेकिन उभरने वाला समूह इस प्रणाली को पलटना चाहता है, इसकी सोच क्रांतिकारी है। मैनहेम ने इसे काल्पनिक आदर्श के रूप में माना।

4.3.3 "असत्य चेतना" के रूप में विचारधारा

समाजशास्त्र के लिए प्रासंगिक विचारधारा के सैद्धान्तिक निर्धारण को तैयार करने वालों में कार्ल मॉर्क्स को अग्रणी माना जाता है। मार्क्स के अनुसार, विचारधारा समाज में उत्पादन के क्षेत्र से बाहर निकलती है, अर्थात विचारधारा, उत्पादन का जो भी आर्थिक मॉडल हो, इसके द्वारा निर्धारित की जाती है। उनके अनुसार उत्पादन का आर्थिक तरीका पूँजीवाद है।

मार्क्स की विचारधारा के दृष्टिकोण को आधार और अधिरचना के उनके सिद्धान्त के अनुसार निर्धारित किया गया था। मार्क्स के अनुसार, अधिरचना, जो विचारधारा का क्षेत्र है, सत्तारूढ़ वर्ग के हितों को प्रतिबिम्बित करने के लिए आधार, उत्पादन के क्षेत्र से विकसित होती है। इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा का बुनियादी आधार यह है कि लोगों को इतिहास बनाने की स्थिति में होना चाहिए, और इसके लिए उन्हें खाने, पीने, कपड़े और आश्रय जैसी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने की आवश्यकता होती है। हम क्या हैं, इस पर निर्भर करता है कि हम क्या उत्पादन करते हैं और हम कैसे उत्पादित करते हैं। दूसरे शब्दों में, नैतिकता, धर्म, तत्वमीमांसा और अन्य सभी विचारधारा अब स्वतंत्रता की झलक नहीं देते हैं, वे उत्पादन की विधियों, बल और उत्पादन के सम्बन्धों पर निर्भर करते हैं। कोई आश्चर्य नहीं, "हाथ–मशीन हमें सामंती जमींदार के साथ वाला एक समाज और भाप का इंजन एक औद्योगिक पूँजीवादी के साथ स्टीम इंजन देती हैं।"

मार्क्सवादी अर्थ में, विचारधारा की सभी विचारों के साथ समानता की आवश्यकता नहीं है। मूलतः इसकी विशिष्ट पहचान यह है कि यह शासक वर्ग के हितों की रक्षा करता है। यद्यपि, यह स्वयं को उद्देश्य और मूल्य–तटस्थ के रूप में पेश करती है, तथ्य यह है कि, मार्क्सवादियों के तर्क के रूप में, यह सत्तारूढ़ वर्ग के हितों के संरक्षण के लिए वास्तविकता को छुपाता है और मिथ्या सिद्ध करती है। जबकि सत्तारूढ़ वर्ग अपनी विचारधारा को पूरे समाज के लिए एक वांछनीय प्रस्ताव के रूप में देखता है, मार्क्सवादियों ने इसे "असत्य चेतना" के रूप में ख़ारिज कर दिया। एक उदाहरण लेते हैं। "व्यक्तिगत समानता" का एक विचार एक पूँजीवादी समाज में पोषित होता है। हाँ, सतही तौर पर, कार्यकर्ता किसी नियोक्ता के साथ किसी भी समझौते में प्रवेश करने के लिए स्वतंत्र है जो उसके अपने हित के अनुकूल हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि स्वतंत्रता की यह विचारधारा वास्तविकता को मिथ्या सिद्ध करती है और इसके विरोधाभासों को छुपाती है। इसका कारण यह है कि श्रमिक, स्वतंत्र होने से दूर, अपनी श्रम शक्ति को बेचने के लिए मजबूर हैं, अगर वे ठीक से जीवित रहना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें उत्पादन के साधनों से वंचित किया गया है। दूसरे शब्दों में, एक पूँजीवादी समाज में, जैसा कि मार्क्सवादियों का तर्क है, व्यक्तिगत समानता की विचारधारा केवल एक भ्रम है।" ?

4.3.4 विचारधारा और आधिपत्य

एंटोनियो ग्राम्सी – एक इतालवी मार्क्सवादी एक और महत्वपूर्ण विचारक है, जिन्होंने विचारधारा की हमारी समझ को समृद्ध किया। यह देखना महत्वपूर्ण है कि ग्राम्सी "नकारात्मक विचारधारा के साथ संतुष्ट नहीं थे, जैसा मार्क्स के मामले में था, क्योंकि उनके लिए विचारधारा निश्चित रूप से "यह स्थिति है जिस पर व्यक्ति आगे बढ़ते हैं,

PDF Compressor Free Version

अपनी स्थिति, संघर्ष आदि की चेतना प्राप्त करते हैं। इसके अलावा, विचारधारा, वह स्थिति है जिस पर सत्तारूढ़ वर्ग केवल जबरदस्ती/बलपूर्वक या हिंसा के माध्यम से नहीं बल्कि उत्पीड़ित/सीमांत वर्गों से भी सहमति प्राप्त करके वैधता प्राप्त करने से सर्वोच्चता को प्राप्त करता है। दूसरे शब्दों में, सत्तारूढ़ वर्ग द्वारा आधिपत्य की स्थापना, एक साझी विचारधारा बनाकर की जाती है। ग्राम्सी ने तर्क किया कि शासक वर्ग की वैचारिक आधिपत्य को मजबूत करने की प्रक्रिया में सभ्य समाज (सिविल सोसाइटी) जनसंचार माध्यम, शैक्षिक, सांस्कृतिक संस्थान, महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आधिपत्य की समझ के बारे में एक और महत्वपूर्ण तथ्य को समझना चाहिए। अधिपत्यवादी मानते हैं कि हर कोई उन समूहों के हितों को ध्यान में रखता है जिन पर आधिपत्य का उपयोग किया जाएगा। ग्रामसी के अनुसार, वैचारिक आधिपत्यवाद पर काबू पाने के लिए एक नई रणनीति की आवश्यकता होती है जोकि मजदूर वर्ग द्वारा स्थापित किया गया वैकल्पिक आधिपत्य है। इसके लिए मजदूर वर्ग के "मूल बुद्धिजीवियों" की सक्रिय भूमिका की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में, विचारधारा एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जिस पर इन बुद्धिजीवियों को एक असाधारण रचनात्मक भूमिका निभानी है।

अब आप देख सकते हैं कि सामाजिक विज्ञान, विचारधारा – इसकी प्रकृति और गठन इसका संचलन और आधिपत्य, पर इस गहन बहस से समृद्ध हो रही है – हालाँकि, सामाजिक वैज्ञानिकों के बीच राय में अंतर है। विचारधारा की व्यापक समझ रखने के लिए यह पूरी तरह से असंभव नहीं है, जिस पर उचित मात्रा में सहमति हो सकती है। निम्नलिखित बिन्दुओं में, हम विचारधारा की अवधारणा पर हमारी चर्चा के प्रमुख बिन्दुओं को सारांश रूप में देखते हैं :

- विचारधारा एक परिप्रेक्ष्य या वैश्विक दृष्टि से समाज की प्रकृति को दर्शाती है, एक विशिष्ट सामाजिक समूह, इसक राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और सम्बन्धों का संजाल बनाने का प्रयास करती है।

- विचारधारा अनिवार्य रूप से सामाजिक है, मनोवैज्ञानिक नहीं। दूसरे शब्दों में, विचारधारा किसी की निजी पसंद और नापसंद के बारे में नहीं है। इसके बजाय, यह इतिहास के एक निश्चित समय पर एक विशिष्ट सामाजिक समूह अच्छी तरह से व्यक्त किया गया एक वैश्विक नजरिया है। इस अर्थ में कोई कह सकता है कि ब्राह्मणवाद या गान्धीवाद या मार्क्सवाद एक विचारधारा है।

- विचारधारा अनिवार्य रूप से झूठी या गलत नहीं। एक परिप्रेक्ष्य के रूप में, यह आंशिक, अपूर्ण या खंडित हो सकती है। इसलिए, 'वस्तुनिष्ठ विज्ञान' को 'व्यक्तिपरक विचारधारा' से अलग करना उचित नहीं है। वास्तव में, विज्ञान को एक प्रकार की विचारधारा के रूप में देखा जा सकता है। दुनिया के प्रतिनिधित्व के रूप में विचारधारा को देखना बेहतर है, भले ही यह अधूरा और अपर्याप्त प्रतिनिधित्व हो।

- एक गतिशील समाज, ऐसा समाज है जिसमें कई विचारधाराएँ हैं। स्थैतिक और सजातीय होने से दूर, एक गतिशील समाज संघर्ष का अखाड़ा है। यह संघर्ष वैचारिक संघर्षों के रूप में प्रकट होता है। यदि हम अपने समाज को देखते हैं तो हम भिन्न–भिन्न और विरोधी विचारधाराएं देख रहे हैं: गान्धीवाद, अम्बेडकरवाद, मार्क्सवाद और उदारवादी व्यक्तिवाद।

- सभी विचारधाराओं के पास, हालाँकि, उनका वर्चस्व या आधिपत्य स्थापित करने के लिए समान शक्ति है। यह अधिक संभावना है कि प्रमुख/विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग

PDF Compressor Free Version

अधिक सफल होते हैं – विशेषकर जनसंचार माध्यम और शैक्षिक संस्थानों पर उनके नियंत्रण के कारण – उनकी विचारधारा को एक "सार्वभौमिक" चरित्र देने में। फिर भी, यह नहीं भूलना चाहिए कि इतिहास निरंतर प्रवाह में है, और यहाँ तक कि सीमांत विचारधाराओं ने स्वयं पर जोर दिया और प्रमुख विचारधारा का विरोध किया। समाज इसी संघर्ष के कारण विकसित होता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।
(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1. विचारधारा से आप क्या समझते हैं? व्यक्तिगत मान्यताओं, मूल्यों और विचारधारा में क्या अंतर है?

....

....

....

2. "विचारों का आधिपत्य" शब्द का क्या अर्थ है? उपर्युक्त चर्चा में, किसके विचारों का उल्लेख किया जा रहा है?"

....

....

....

4.4 वाद–विवाद के एक क्षेत्र के रूप में पाठ्यचर्या

शिक्षकों के रूप में हममें से कई के लिए, पाठ्यचर्या विषयवस्तु की एक सूची है जिसे विषयवस्तु के शिक्षण, की मौजूदा विधियों के आधार पर सिखाया जाना है। कुछ के लिए, पाठ्यचय ा वह है जिसे विद्यालयों को जानबूझकर और उद्देश्यपूर्वक करना है। तो, पाठ्यचर्या क्या है? सरल शब्दों में, पाठ्यचर्या एक विद्यालय या विद्यालयों की व्यवस्था में अध्ययन करने वाले के लिए एक व्यवस्था है और जो निर्धारित किया गया है। यह एक स्तर पर या एक पाठ्यचर्या में या पाठ्यचर्या के सेट में पूरी की गई सामग्री और क्या पढ़ाना है, उसके निर्धारित की गई शिक्षण और मूल्यांकन विधियाँ, है। पाठ्यचर्या की परिभाषा एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखी जा सकती है जिसमें अधिगम के उद्देश्य, शिक्षण के तरीके और विद्यार्थियों का मूल्यांकन करने के तरीके; कक्षा संगठन और प्रबंधन अभ्यास सम्मिलित हैं।

हालाँकि, हममें से ज़्यादातर नहीं जानते हैं कि निर्धारित विषयवस्तु एक गर्मागर्म बहस और विवादास्पद दोनों क्षेत्र हैं। आपने शायद देखा होगा कि सरकार, माता–पिता, शिक्षक और विभिन्न समूह समय–समय पर पाठ्यचर्या के बारे में चर्चा में लगे रहते हैं। शैक्षणिक लेख और नीति बनाने में पाठ्यचर्या का विचार, इस तरह का ध्यान और महत्व क्यों आकर्षित करता है?

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि विद्यालय पाठ्यक्रम, समाज के विभिन्न दृष्टिकोणों को दर्शाता है, जैसा कि शिक्षक, माता–पिता, रूचि समूहों और नियोक्ताओं की आँखों के माध्यम से देखा गया है और ऐसे मुद्दों पर

PDF Compressor Free Version

कोई एकमतता या सहमति नहीं है, जैसे सामग्री क्या होनी चाहिए, कैसे पढ़ाया जाना चाहिए और विद्यालयी शिक्षा के उद्देश्य क्या हैं, विद्यालयों की अपेक्षाओं और विद्यालयों की गुणवत्ता और प्रकृति के विपरीत, उनसे क्या अपेक्षाएँ हैं।

चूँकि शिक्षण के उद्देश्य के बारे में कोई एक राय नहीं है, पाठ्यचर्या के बारे में चर्चा, हमेशा एक या दूसरे पाठ्यचर्या के अच्छे/बुरे परिणामों के बारे में अनसुलझे मतभेद या दृष्टिकोण को शामिल करती है और अनुत्तरित प्रश्न जैसे कि क्या पाठ्यचर्या अर्थव्यवस्था या समाज की आवश्यकताओं के आधार पर होना चाहिए? या अंतर्राष्ट्रीय या तर्कसंगत या स्थानीय संदर्भों पर? समाज और संस्कृति को संरक्षित करने या बदलने की आवश्यकता पर? या समाज में मौजूद विभाजन को तोड़ने पर? या किस प्रकार के जीवन की मनुष्य कामना करते हैं, या सही जीवन क्या है? भी इसका अंग है।

कोई भी पाठ्यचर्या पढ़ाने और सीखने के बारे में विचारों का नतीजा है, इसलिए पाठ्यचर्या के विकास में मूलभूत प्रश्न या अंतर्निहित प्रारंभिक बिन्दु ऐसे प्रश्नों का उत्तर है, जैसे "कौन सा ज्ञान सही शिक्षण है"? "कौन–से ज्ञान का अधिक मूल्य है"? यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है क्योंकि पाठ्यचर्या को उस ज्ञान को प्रतिबिम्बित करना चाहिए जो पढ़ाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण और योग्य है। इस प्रश्न के उत्तर में तर्कसंगत तर्कों का निर्माण करना शामिल है जिसमें पाठ्यचर्या की एक या अन्य रूपरेखा विकसित करने के लिए वैचारिक या विचारक पहलू सम्मिलित हैं। वैचारिक प्रोत्साहन के आधार पर, यह रूपरेखा शिक्षा के विस्तार और प्रकृति की समकालीन समझ पर आधारित हो सकता है, या यह प्रजाति, लिंग, जाति और वर्ग के मुद्दों को सम्मिलित करने वाले अदृश्य पाठ्यचर्या को रेखांकित करने वाला एक आलोचनावादी/महत्वपूर्ण हो सकता है। और इसका उद्देश्य विद्यालय के बच्चों की इन श्रेणियों की स्तरित समझ को उजागर करना है और उस समाज में सामाजिक और सांस्कृतिक क्रम में अपनी जगह पाना है।

वैचारिक रूपरेखा के आधार पर यह निष्कर्ष निकालता है कि पाठ्यचर्या तीन प्रकार के कार्य करता है; उन्हें रूढ़िवादी, रचनात्मक और आलोचनात्मक के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

अपने रूढ़िवादी पहलू में, शिक्षा ने निर्देशों के माध्यम से, मौजूदा सामाजिक संरचना, इसकी मान्यता और मूल्य प्रणाली, रिवाज, परम्पराओं और प्रथाओं को संरक्षित और संचारित करने की कोशिश की है। इस तरह से, इसने सामाजिक जीवन के एक मौजूदा स्वरूप और यथास्थिति को सुरक्षित रखने के लिए एक संस्था के रूप में कार्य किया है और किसी भी समय समाज को स्थिरता प्रदान करती हैं। इस प्रकार का एक उदाहरण देने के लिए, किस प्रकार परंपरा का भव्य भार, पाठ्यचर्या में शामिल किए जाने वाले ज्ञान का निर्धारण करता है, लैटिन को यूरोप में सदियों से पढ़ाया जाता है, हालाँकि, इसने उस बहाने पर अपनी प्रासंगिकता खो दी थी कि यह तर्क, स्मृति, एकाग्रता, आदि मानसिक संकायों को प्रशिक्षित करती है।

यद्यपि, ऐतिहासिक रूप में, वर्तमान सामाजिक परिणामों को संरक्षित करने के लिए शिक्षा केवल अवशिष्ट संस्था के रूप में कार्यात्मक नहीं हैं लेकिन यह एक और सक्रिय भूमिका भी निभाती है, जिसमें नए ज्ञान, विचार, तकनीक और कला और शिल्प के रूपों को बनाने और विद्यार्थियों के बीच स्वतंत्र रूप से, आलोचनात्मक तरीके से और परिवर्तन के लिए तीव्र इच्छा की सामाजिक विरासत को समृद्ध करना है। जैसा कि पहले समझाया गया है कि सांस्कृतिक विरासत का प्रसार करना शिक्षा की प्रकृति है और साथ ही नई सोच और परिवर्तन के लिए तीव्र इच्छा विकसित करना भी। यहाँ तक कि सबसे रूढ़िवादी

PDF Compressor Free Version

और पारंपरिक समाजों को भी शिक्षा के प्रभाव में बदलना पड़ा है यद्यपि रूढ़िवाद बदलाव को धीमा तो कर देता है, लेकिन इसे रोक नहीं सकता।

यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि पाठ्यचर्या के मुद्दे, कि क्या पढ़ाया जाना है और इसे कैसे पढ़ाया जाना है, यह स्वयं राजनीतिक (और वैचारिक) प्रश्नों के प्रति उत्तर है कि क्या समाज में मौजूद सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक अनुक्रमों को संरक्षित या परिवर्तित किया जाना चाहिए और किस प्रकार के ज्ञान, कौशल और व्यवहार, पाठ्यचर्या को प्रतिबिम्बित करने चाहिए ताकि समाज का संरक्षण और परिवर्तन हो सकें।

4.4.1 क्या "तटस्थ" पाठ्यचर्या के जैसा कुछ भी है?

हमने पहले चर्चा की है कि पाठ्यचर्या हमेशा प्रतियोगिता और बहस का क्षेत्र है और "वैचारिक युद्ध" (ideological battle) का यह क्षेत्र न केवल व्यक्तियों के विवादित निजी विचारों को प्रतिबिम्बित करता है, बल्कि विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं को भी, जिसके माध्यम से व्यक्तियों को समाज, सामाजिक जीवन, शिक्षा और समाज के बीच सम्बन्ध की समझ प्राप्त होती है। प्रचलित विचारधाराओं में से, एक जो शक्तिशाली सामाजिक संस्थानों और कक्षाओं/वर्गों का समर्थन करता है, एक समाज में प्रमुख हो जाता है। जैसे कि विचारधारा और आधिपत्य पर खण्ड 2 में पहले से ही चर्चा हुई है, विचारों की यह सूक्ष्म आधिपत्य जिसका ग्रामसी ने उल्लेख किया है, यह एक स्थिति है, जहाँ शासक वर्ग केवल बलपूर्वक या हिंसा के साथ नहीं, वरन उत्पीड़ित/ सीमांत वर्गों की सहमति से भी वैधता प्राप्त करना आधिपत्य को प्राप्त करता है। समाजीकरण की प्रक्रिया में लगे अन्य सामाजिक संस्थानों में, शैक्षिक संस्थान, जैसे – विद्यालय, विचारधाराओं की वैधता और स्थायीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो प्रमुख समूहों के हितों की रक्षा करने की कोशिश करते हैं। ये अंतर्निहित वैचारिक दृष्टिकोण, पाठ्यचर्या, सोच और विकास को प्रभावित करते हैं लेकिन स्पष्ट रूप से नहीं बताये जाते हैं और सतह पर उभरकर नहीं आते हैं। इससे पाठ्यचर्या "वस्तुनिष्ठ" "मूल्य तटस्थ" और "समस्यारहित" बनता या दिखाई देता है। इसे बेहतर समझने के लिए, यह परीक्षण करना महत्वपूर्ण है कि विद्यालय के पाठ्यचर्या के बारे में क्या दृष्टिकोण होना चाहिए या समय–समय पर क्या परिवर्तित हुआ है, और उस तरीके पर निर्भर करता है जिसमें शिक्षा और समाज के बीच के सम्बन्धों को परिभाषित किया गया है। ये परिवर्तन पाठ्यचर्या सामग्री के चयन और संगठन, इसके संचरण और आंकलन के तरीकों में परिलक्षित होते हैं। कैसे विद्यालय पाठ्यचर्या समाज के प्रमुख सामाजिक समूहों के हितों, मूल्यों और अभिव्यक्ति का एक उत्पाद है, की दो आयामों के साथ जाँच की जा सकती है, पाठ्यचर्या परिवर्तन और पाठ्यचर्या निरंतरता।

4.4.2 पाठ्यचर्या सम्बन्धी विचारधाराएँ

पाठ्यचर्या की विचारधाराएँ यह दर्शाती हैं कि विद्यालय का पाठ्यचर्या क्या होना चाहिए – विद्यालयी शिक्षा के उद्देश्य/प्रयोजन क्या है? और इन प्रयोजनों को कैसे प्राप्त किया जा सकता है? दूसरे शब्दों में, प्रत्येक विचारधारा, विद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले ज्ञान के प्रकार के बारे में अलग–अलग मान्यताओं का प्रतीक है, शिक्षा कैसी होनी चाहिए? बच्चों का आंकलन कैसे किया जाना चाहिए? – प्रत्येक विचारधारा अपने विशिष्ट मूल्यों, शिक्षा के अपने स्वयं के उद्देश्यों पर आधारित है।

इस भाग में, हम शिक्षा के कार्यवत को समझने के लिए विभिन्न पाठ्यचर्या सम्बन्धी विचार–विमर्शों पर संक्षेप में चर्चा करेंगे – जैसे क्या पढ़ाया जाना चाहिए, कैसे पढ़ाया जाना है? और कैसे मूल्यांकन होना है? जैसे प्रश्न तथा समाज की आवश्यकताएँ, कार्य और उन आवश्यकताओं को पूरा करने की शिक्षा से अपेक्षा की जाती है।

PDF Compressor Free Version

शास्त्रीय–मानवतावादी विचारधारा का उद्गम पूर्व–औद्योगिक समाज में हुआ था और अठारहवीं शताब्दी के अंत तक महत्वपूर्ण बनी रही। यह अभिजात्यों के एक समूह द्वारा शासित समाज के दृष्टिकोण पर आधारित था जिन्होंने सार्वभौमिक सत्यों पर आधारित पारंपरिक और शास्त्रीय मूल्यों के संरक्षक के रूप में काम किया था। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से समान मूल्यों को संचारित करने का प्रयास किया और निरंतरता और स्थिरता सुनिश्चित करने और अभिजात वर्ग को तैयार करने में शिक्षा की भूमिका को देखा जो समाज में संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित कर सकें। इस समाज में सांस्कृतिक पुनरोत्साहन के उद्देश्य के लिए पाठ्यचर्या, इतिहास, गणित, व्याकरण और साहित्य, जैसे उत्कृष्ट विषयों पर जोर देते थे और आधुनिक विषयों जैसे विज्ञान और प्रौद्योगिकी को अनदेखा करते थे। शिक्षकों और विद्यार्थियों से शिक्षा के इस दृष्टिकोण को बनाए रखने के लिए शैक्षणिक उत्कृष्टता के कठोर मानक आवश्यक है। शिक्षा या अनुदेश ज़्यादातर औपचारिक और व्यावहारिक हैं, पुस्तकें पर आधारित है और अधिगम का आकलन, प्राप्त ज्ञान का परीक्षण करने के लिए उन्मुख है। चूँकि इस विचारधारा के अंतर्गत, समाज का संरक्षण और स्थिरता, उद्देश्य है, अतः पाठ्यचर्या का उद्देश्य प्रचलित परंपरागत मूल्यों की समीक्षा करके उनमें परिवर्तन करना नहीं है।

अठारहवीं शताब्दी यूरोप में प्रबोधन ने समाज के दृष्टिकोण को एक आकार दिया जो, व्यक्तियों की स्वतंत्रता और समानता के साथ, उदार और प्रगतिशील है। इस विचारधारा में, शिक्षा का पुनरुत्पादक कार्य राजनीतिक है, एक ऐसा समाज बनाने के लिए, जिसमें व्यक्ति स्वतंत्र और समान हैं और समाज के लिए सामान्य अच्छा निर्धारित करने के लिए एक साथ आते हैं। यह दृष्टिकोण रूसो की सामाजिक संविदा में स्वीकार किए गए आदर्शों से और एमील में व्यक्त शैक्षिक विचारों से अपनी प्रेरणा लेता है।

उदारवादी प्रगतिशील विचारधारा, जिसकी जड़े प्रबोधन हैं, ने शिक्षा को एक प्रक्रिया के रूप में देखा जो एक मुट्ठी भर कुलीन वर्ग के आधिकारिक ज्ञान के विकास पर ध्यान देने की बजाय, सभी की तर्कशक्ति के विकास पर जोर देती है। चूँकि यह स्वतंत्रता और स्वायत्तता पर आधारित है, इसलिए पाठ्यचर्या संस्कृति के संरक्षण और प्रसारण के बजाय शिक्षार्थी के विकास की आवश्यकताओं को दर्शाता है। यहाँ पर ध्यान, शिक्षक की मदद से विद्यार्थी की जिज्ञासा को उत्तेजित करने पर है, जो एक मार्गदर्शक या एक सुविधादाता है।

प्रबोधन के बाद, उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के दौरान यूरोप में औद्योगिकीकरण का आगमन जिसमें शिक्षा के लिए एक अलग कार्य था। इसने एक जन–आधारित विद्यालय व्यवस्था के माध्यम से आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति को आवश्यक बताया। आधुनिकतावादी–व्यावसायिक विचारधारा के अनुसार, शिक्षा का पुनरुत्पाद कार्य सांस्कृतिक या राजनीतिक नहीं है, जैसे कि पहले बताई गई दोनों विचारधाराओं के मामले में, वरन् आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्र के अनुक्रम को पुनः उत्पन्न करने और पुनरुत्पादन करने के लिए, जिस पर आधुनिकी तकनीकी समाज स्थापित किया गया है। इस विचारधारा के अंतर्गत पाठ्यचर्या का मुख्य उद्देश्य, उत्पादक और उपभोक्ताओं के लिए बाजार अर्थव्यवस्था में कार्य करने के लिए अपेक्षित ज्ञान और कौशल प्रदान करना है। ज्ञान और व्यावहारिक कौशल पर जोर देकर, विद्यार्थियों को काम के संसार के लिए तैयार करने की दिशा में पाठ्यचर्या तैयार किया जाता है, जो काम कर रहे जीवन के लिए प्रासंगिक है।

PDF Compressor Free Version

	शास्त्रीय	विकासशील	व्यावसायिक
राजनीतिक परिदृश्य	परिवर्तनवादी	उदार/ सामुदायिक	तकनीक आधारित
समाज के विचार	संभ्रांतवादी	समानाधिकारवादी	प्रतिभा आधारित
शिक्षा का पुनरुत्पादन कार्य	सांस्कृतिक निरंतरता	सामाजिक सुधार	आर्थिक उत्थान
शैक्षणिक लक्षणों का मार्गदर्शन	शैक्षणिक उत्कृष्टता	'अनुभव से सीखना'	व्यावहारिक प्रासंगिकता
विद्यालयों के प्रकार	सार्वजनिक विद्यालय	निजी और सरकारी विद्यालय	व्यावसायिक/ पालीटेक्निक विद्यालय
कक्षा का संगठन	बौद्धिक क्षमता के आधार पर विद्यार्थियों के निश्चित समूह	आवश्यकताओं और रूचियों के आधार पर विद्यार्थियों का लचीला समूह	व्यावसायिक आवश्यकताओं के आधार पर विद्यार्थियों का समूहीकरण
पाठ्यक्रम सामग्री	विषय–केन्द्रित: कठोर विषय भेद	बाल–केन्द्रित: कमज़ोर विषय अन्तर/ भेदभाव	कार्य–केन्द्रित: व्यावहारिक कार्य सम्बन्धी गतिविधियों के आसपास विषयवस्तु का अन्तर
पाठ्यक्रम ज्ञान	वस्तुनिष्ठ ज्ञान	विषयपरक ज्ञान	तकनीकी ज्ञान
शिक्षक की भूमिका	विशेषज्ञ, सांस्कृतिक विरासत को प्रेषित करना	सुविधादाता, विद्यार्थियों को निजी अधिगम से सीखने में सक्षम बनाते हैं।	प्रबंधक, उद्देश्यों की प्रभावी उपलब्धि को बढ़ाना
शिक्षण विधियाँ	औपचारिक विधियाँ	आविष्कार/ अन्वेषण निर्देश	व्यावहारिक/ प्रायोगिक
मूल्यांकन प्रक्रियाएँ	ज्ञान के अधिग्रहण का परीक्षण करने के लिए पारंपरिक परीक्षाएँ	छात्र के गुणात्मक विकास का अनौपचारिक मूल्यांकन	प्रचलित ज्ञान में कौशल का आकलन करने के लिए व्यावहारिक परीक्षण

स्रोतः विलफ्रेड कैर, "दि कैरीकुलम इन एंड फॉर ए डेमोक्रेटिक सोसाइटी", *जर्नल ऑफ कैरीकुलम स्टडीज़,* वॉल्यूम 6, 1998, अंक 3 पृ. 323–340

PDF Compressor Free Version

बोध प्रश्न

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।
(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

3. पाठ्यचर्या से आप क्या समझते हैं? सामग्री और शिक्षण विधियों का चयन करने के लिए आप किन सिद्धान्तों का उपयोग करेंगे?

....

....

....

4. निम्नलिखित भूमिकाएँ निभाने के लिए विद्यालयों को किस प्रकार के पाठ्यचर्या की आवश्यकता है:

क) समाज का संरक्षण;

ख) प्रगति और परिवर्तन;

ग) दोनों भूमिकाएँ, वह है – (क) और (ख)

....

....

....

....

4.4.3 कक्षा अभ्यास और विचारधारा: सम्बन्धों की खोज

विचारधारा के साथ पाठ्यचर्या के सम्बन्ध के बारे में हमारी चर्चा के आधार पर, आइए देखें कि शैक्षिक विचार और अभ्यास, विचारधाराओं से कैसे जुड़े हुए हैं।

अधिकांश शैक्षणिक संस्थान यथास्थितिवादी हैं और मौजूदा क्रम को संरक्षित करने के लिए लक्षित हैं। ज्ञान गतिहीन, स्थिर और पूर्व निर्धारित के रूप में देखा जाता है। ज्ञान की यह विचारधारा एक निश्चित प्रकार की शैक्षणिक शिक्षा को प्रोत्साहित करती है जो पूर्णतया ज्ञान को संचारित करने का उद्देश्य प्रदान करती है जो आलोचनात्मक प्रतिबिम्ब, नवाचार या रचनात्मकता के बिना एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में मौजूद हैं। विद्यार्थियों को "कोर्स पार्टी" या "खाली बर्तन" के रूप में माना जाता है और शिक्षकों की काम इन खाली दिमागों को भरना है। इस प्रकार की शिक्षाशास्त्र के आधार पर अधिगम की विचारधारा यह है कि जो स्थिर, दिए गए तथ्यों और सूचना के बारे में याद रखने और आवृत्ति अधिगम को प्रोत्साहित करती है। सीखने की यह विचारधारा, किसी भी प्रश्न या मौजूदा तथ्यों या ज्ञान की चुनौतियों को प्रोत्साहित नहीं करती है।

"शिक्षक–नियंत्रित निष्क्रिय अधिगम" का यह प्रतिमान मौजूदा मूल्यांकन प्रणाली की विचारधारा के द्वारा समर्थित/समर्थन प्राप्त है, जिसमें विद्यार्थियों को केवल प्राप्त जानकारी की समझ या उपयोग के बिना जानकारी के, भाग को पुनः प्रकट करने की अपेक्षा की जाती है। इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली प्रमुख समूहों में विद्यमान शक्ति संरचना या विचारधारा का समर्थन करती है।

PDF Compressor Free Version

4.4.4 परिवर्तन का शिक्षाशास्त्र

शिक्षा, शिक्षाशास्त्र, अधिगम और मूल्यांकन के उद्देश्यों को चुनौती देने के माध्यम से महत्वपूर्ण विचार की सुविधा प्रदान करने वाले प्रतिमान का निर्माण करने के लिए शिक्षा के स्थानांतरण प्रतिमान (transmission model) को बदलना होगा। इस प्रकार के अधिगम में नियत्रंण का क्षेत्र विद्यार्थी है, अधिगम की सुविधा देने वाला शिक्षक है। विद्यार्थियों को आलोचनात्मक रूप से सोचने, मौजूदा भौतिक और सामाजिक घटनाओं के बारे में विचारों और अवधारणाओं को विकसित करने और लागू करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है; उन्हें विभिन्न मामलों पर अपनी राय व्यक्त करने के लिए कहा जाता है। शिक्षण विभिन्न विधियों के माध्यम से किया जाता है जैसे "सहकारी शिक्षा" न केवल विद्यार्थी की उपलब्धि को बढ़ाती है बल्कि सभी को समान अवसर भी प्रदान करती है। विद्यार्थियों का प्रदर्शन "पार्श्वचित्र (पोर्टफोलियो) आंकलन" जैसे दृष्टिकोणों का उपयोग करके आंका जाता है, जो समय की अवधि पर मूल्यांकन और आत्मसुधार पर केन्द्रित होता है।

क्रियाकलाप

विद्यालय के पाठ्यचर्या पर निम्नलिखित अनुच्छेद दो अलग–अलग ऐतिहासिक और राजनीतिक संदर्भों से हैं। अभी तक हमारी चर्चाओं के प्रकाश में उन्हें सावधानीपूर्वक पढ़ें और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. *"इस प्रकार विद्यालय के पाठ्यचर्या में साक्षरता और संख्यात्मकता का वर्चस्व रहा, जिसे अधिक से अधिक 14 वर्ष से काम करने के लिए विशिष्ट तैयारी के साथ सामान्य रोज़गार कौशल के रूप में तैयार किया गया। सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी के अतिरिक्त – न्यू लेबर (यू.के. में राजनीतिक पार्टी) के चित्रों वाले व्यक्ति आधुनिकीकरण – नीति निर्माताओं ने बाकी पाठ्यचर्या में बहुत रूचि दिखाई और अनिवार्य रूप से बाकी पाठ्यचर्या में बहुत कम दिलचस्पी दिखाई और अनिवार्य रूप से भाषाओं, इतिहास या भूगोल लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या में एक गंभीर गिरावट आई। यहाँ तक कि रचनात्मक विषयों जैसे संगीत को हानि हुई..... ।"*

2. *"सबसे महत्वपूर्ण पहलू, हालाँकि, शिक्षा की सामग्री थी, जो ब्रिटिश लेखकों द्वारा विचारों को सीखने तक सीमित थी और जिसे ब्रिटेन में प्रकाशित पुस्तकों के माध्यम से व्यक्त किया गया था। इन विचारों ने "ओरियंटल लर्निंग" को खारिज कर दिया, ब्रिटिश और पश्चिमी श्रेष्ठता की अवधारणा का विकास किया, समुदाय, भाषा और क्षेत्र पर आधारित पूर्वाग्रहों को प्रोत्साहित किया, और भारतीय समाज और संस्कृति से अलगाववाद को बढ़ावा दिया। ये सभी शासकों के लिए उपयुक्त हैं, और जिसे अधिकांश शिक्षित लोगों को ब्रिटिश सत्तारूढ़ वर्गों के विचारों को बिना प्रश्न किए स्वीकार करने के लिए बनाया है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अन्य क्षेत्रों में, रचनात्मकता के सामाजिक और आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण मूल्यांकन की पूछताछ और जाँच की भावना विभिन्न तरीकों से निराश और विवश हुई . ... । शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के लिए, पाठ्यपुस्तक पाठ्यचर्या था। इसे केवल एक ज्ञान के रूप में देखा गया था जो परीक्षा के आधार के रूप में अधिकारियों द्वारा अनुमोदित होने की भावना में मायने रखता था।" (कुमार, 1991, पृ. 67)।*

PDF Compressor Free Version

क) समाज के सामान्य वैचारिक परिप्रेक्ष्य और दृष्टिकोण पर चर्चा करें, जो ऊपर दिए गए दो अनुच्छेदों में दिए गए पाठ्यचर्या को आगे बढ़ाते हैं। अपने उत्तर को सही ठहराने के लिए कारण बताएँ।

....

....

....

....

ख) आपकी राय में, ऊपर दिए गए अनुच्छेदों में प्रश्न, "योग्य शिक्षण क्या है?", वैचारिक विचारों से कैसे प्रभावित होता है? विचारधारा और सामग्री के चयन के बीच के सम्बन्धों को उजागर करके अपने उत्तर को सही बनाएँ।

....

....

....

....

ग) चर्चा कीजिए कि कैसे पाठ्यचर्या सामग्री का संगठन और इसके लेन–देन और मूल्यांकन के तरीके प्रभुत्व विचारधाराओं से प्राप्त होते हैं? उपर्युक्त अनुच्छेदों से उदाहरण दें।

....

....

....

....

घ) पाठ्यचर्या सम्बन्धी विचारधाराओं में किस प्रकार अलग–अलग चर्चा हुई हैं? अन्तर को बताइए।

....

....

....

....

4.5 विचारधारा, पाठ्यचर्या और अदृश्य पाठ्यचर्या

अब आप समझ सकते हैं कि शिक्षा क्यों विचारों के संचरण और संचार की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह कहना गलत नहीं होगा कि आधुनिक समय में हम एक विद्यालयीकृत समाज में रह रहे हैं। क्योंकि यह विद्यालय है जहाँ बच्चा जीवन के कई महत्वपूर्ण पाठों को सीखता है, यह समाजीकरण का एक प्रमुख स्रोत है। कोई आश्चर्य नहीं, कि सीखने की सामग्री, विद्यालय के पाठ, शिक्षण और मूल्यांकन के तरीके – वास्तव

PDF Compressor Free Version

में, पूरे पाठ्यचर्या – जबरदस्त प्रासंगिकता प्राप्त करते हैं। किसी की विश्वव्यापी दृष्टिकोण निश्चित रूप से कुछ हद तक, जो विद्यालय में सीखता है, और कैसे सीखता है पर निर्भर करती है। यह माना जाता है कि विद्यालय पाठ्यचर्या वैचारिक संदेश का एक प्रमुख वाहक है।

विचारधारा और पाठ्यचर्या के बीच सम्बन्ध देखने के लिए आप कुछ विरोधी उदाहरण ले सकते हैं। शुरुआत करने के लिए, हम पाठ्यचर्या के सबसे महत्वपूर्ण या प्रत्यक्ष पहलू लेते हैं – ज्ञान की सामग्री, जैसे – गणित, भूगोल, भौतिक विज्ञान, इतिहास और साहित्य, जैसे कई विषयों के माध्यम से परिभाषित की गई है। उदाहरण के लिए, गणित, अक्सर एक अमूर्त/संख्याओं के मूल्य तटस्थ विज्ञान के रूप में देखा जा रहा है। लेकिन फिर, एक सावधानीपूर्वक विश्लेषण यह सुझाव देगा कि पितृसत्तागत/ पूँजीवादी समाज विद्यालय में, गणित वैचारिक पूर्वाग्रह से पूरी तरह मुक्त नहीं है। यह अक्सर लैंगिक रूढ़िवादियों को वैधता देती है: एक सक्रिय कर्त्ता (व्यापारियों, व्यवसायी, आदि) के रूप में पुरुष बनाम निष्क्रिय उपभोक्ताओं (सब्जी, दूध आदि खरीदना) के रूप में महिलाएँ। फिर प्रतिशत जैसी अवधारणाओं को प्रस्तुत करते हुए, यह अनिवार्य रूप से लाभ और हानि की एक व्यापारिक दुनिया को दर्शाता है। कभी–कभी गणित, अन्य अर्थपूर्ण सामाजिक प्रयोजनों के लिए प्रयोग किया जाता है (उदाहरण के लिए, साझाकरण का दर्शनशास्त्र पेश किया जा सकता है जब बच्चे 'विभाजन' और 'अंश' जैसी अवधारणाओं को सीखते हैं।) इसी तरह, जैसा कि आलोचकों का कहना है कि विद्यालय इतिहास, हाशिए पर स्थित समुदायों, आदिवासी और महिलाओं के इतिहास के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील नहीं है।

हमने पहले के खंड में चर्चा की है कि प्रचलित प्रमुख विचारधारा, पाठ्यचर्या को आकार देती है, बदले में, पाठ्यचर्या, समाज की संस्कृति, अभ्यास और सामाजिक सम्बन्धों में विद्यार्थियों की शुरुआत करने में एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक भूमिका निभाता है। इस खंड में, हम चर्चा करेंगे कि कैसे पाठ्यचर्या प्रमुख विचारधारा और समाज के आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन के मौजूदा अनुक्रम को मुख्य रूप से अदृश्य पाठ्यचर्या के माध्यम से मजबूत करता है। तो आप पाएंगे कि प्रत्यक्ष पाठ्यचर्या से ज़्यादा, यह अदृश्य पाठ्यचर्या है, जो वैचारिक संदेशों से भरा है।

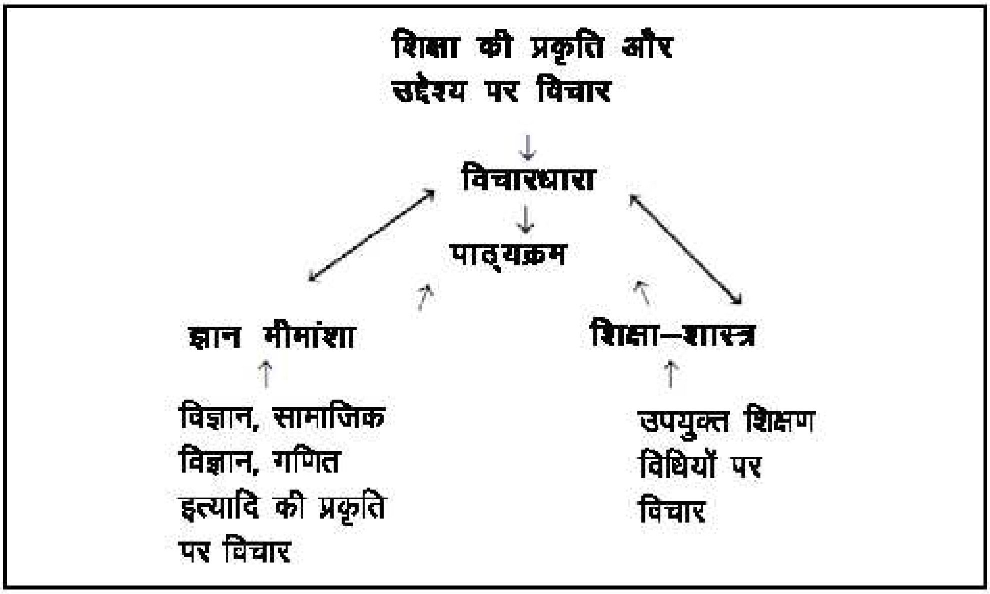

स्रोत: लिटलड्यूके, एम. (1996) "आइडियोलॉजी, इपिस्टमोलॉजी, पेडागॉगी एंड दि नेशनल कैरीकुलम फॉर साईन्स, दि इन्फ्लूक्स ऑन प्राइमरी साईन्स", *कैरीकुलम स्टडीज,* खंड 4: अंक 1।

PDF Compressor Free Version

4.5.1 अदृश्य पाठ्यचर्या क्या है?

अदृश्य पाठ्यचर्या औपचारिक पाठ्यचर्या से अलग है। अदृश्य पाठ्यचर्या अनौपचारिक पाठ्यचर्या है और विद्यार्थियों से क्या सीखने की उम्मीद की जाती है जो औपचारिक कथन/बयान से परिलक्षित नहीं होता है, बल्कि यह अलग–अलग तरीकों से विद्यार्थियों की शिक्षा को प्रभावित करता है। वास्तव में, औपचारिक पाठ्यचर्या एक छोटे माप में अधिगम को प्रभावित करता है, जो सारे अधिगम के 10 प्रतिशत के बराबर है। शेष के लिए अदृश्य पाठ्यचर्या जिम्मेदार हैं (मस्सिलास, 1989)। फिर भी शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों और पाठ्यचर्या नीति निर्माताओं द्वारा अदृश्य पाठ्यचर्या की भूमिका का ध्यान नहीं रखा जाता है। विद्यालयों में 'पाठ्य पुस्तक' या "निर्धारित विद्यालयी ज्ञान", अदृश्य पाठ्यचर्या एक बड़ा हिस्सा होता है, दूसरे भाग को शिक्षक के व्यवहार, सांस्कृतिक धारणाओं और सहकर्मी संपर्क में निहित विश्वासों, जैसे अन्य विद्यालयी अभ्यासों के माध्यम से अनौपचारिक रूप से सूचित किया जाता है।

आइए, उदाहरण के लिए, हम अदृश्य पाठ्यचर्या को जैसे के तैसे रूप में स्वीकारने *(taken-for-granted)* विद्यालय के रीति रिवाजों और प्रथाओं जैसे सुबह की सभा, अनुक्रमांक बुलाना (उपस्थिति लेना), कक्षा में बैठने की व्यवस्था और कक्षा अभ्यासों के माध्यम से जो प्रकट होता है, के रूप में देखें। आपको क्या याद आया?

....

....

....

....

आज भी शिक्षक–विद्यार्थी सम्बन्ध, जैसा कि पाउलो फ्रेरे ने तर्क दिया था, पदानुक्रमित रह गया (फ्रेरे , 1977)। बच्चे को ज्ञान के एक निष्क्रिय प्राप्तिकर्त्ता के रूप में देखा जाता है, वह शिक्षक के साथ बहस करने, पूछताछ करने, विरोधाभास करने और विकसित करने के लिए सक्रिय भागीदार नहीं है। इसी तरह, परीक्षाएँ बच्चों को वस्तुनिष्ठ बनाती हैं और उन्हें पदानुक्रमित करते हैं; अन्य "अनुशासनात्मक" गतिविधियों (विद्यालय की पोशाक, कक्षा में "सही रूप से बैठना", नियमित सभा, "समय सारिणी" के अनुसार समय का कठोर विभाजन) एक विनम्र शरीर और मन पैदा करते हैं।,

नतीजा यह है, जैसा कि आलोचकों का तर्क है, कि विद्यालयी शिक्षा के माध्यम से बच्चा स्वीकारवादी के रूप में, एक "वफादार" नागरिक जो यथास्थिति को स्वीकार करता है, के रूप में विकसित होता है और सहजता और असहमति की भाषा से वंचित है। दूसरे शब्दों में, इस अदृश्य कार्यकृत (एजेंडे) को जानना चाहिए। विद्यालय, तटस्थ रहने से दूर, स्थापना के हितों की सेवा/रक्षा करते हैं।

4.5.1.1 प्राधिकरण के लिए आज्ञाकारिता और सम्मान सीखना

विद्यालय में सीखने वाले सबसे महत्वपूर्ण कौशलों में से एक आज्ञाकारिता और प्राधिकरण के प्रति सम्मान है। नियमों के प्रति आज्ञाकारी, निष्क्रिय और नियमों के अनुरूप होने के कारण, उनके शिक्षक और वरिष्ठ विद्यार्थी शैक्षणिक और सामाजिक रूप से सफलता अनुभव करते हैं। विद्यार्थी सीखते हैं कि हालाँकि औपचारिक पाठ्यचर्या, अदृश्य

PDF Compressor Free Version

पाठ्यचर्या के मूल्यों के साथ, जैसे कि अधिकारियों को खुश करने और नियमों का बिना प्रश्न के पालन करने से, छात्रवृत्ति और शैक्षणिक उत्कृष्टता पर बल देता है, वे विद्यालय में प्रभावी ढंग से सामना करने में सक्षम हैं।

4.5.1.2 व्यक्तिवाद और प्रतिस्पर्धा

सहयोग और सामान्य अच्छाइयों के मूल्यों को औपचारिक पाठ्यचर्या से बढ़ाया जाता है, लेकिन अदृश्य पाठ्यचर्या व्यक्तिवाद और प्रतियोगिता को बढ़ावा देता है। शिक्षक व्यक्तिगत उपलब्धि पर बल देते हैं और कक्षा में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देते हैं, ताकि विद्यार्थी "उच्चतम अंकों" के लिए प्रयास करें। बोर्ड परीक्षा के दौरान हमारे देश में यह सामान्य रूप से देखा जाता है।

चर्चाओं से, हम पाते हैं कि औपचारिक पाठ्यचर्या और अदृश्य पाठ्यचर्या विपरीत मूल्यों को पढ़ाते हैं, पहले वाला "सामान्य अच्छाइयों" को दिखाते हैं, जबकि दूसरा, प्रतियोगिता सिखाता है, औपचारिक पाठ्यचर्या अवसर की समानता सिखाता है, अदृश्य पाठ्यचर्या सिखाता है कि कुछ बच्चे दूसरों से श्रेष्ठ हैं; औपचारिक पाठ्यचर्या लोकतंत्र के बारे में सिखाता है, जबकि अदृश्य पाठ्यचर्या बच्चों को विद्यालय एक आधिकारिक स्थान है, के बारे में सिखाता है।

4.5.1.3 विद्यालय सामाजिक असमानताओं को पुनः उत्पन्न और सुदृढ़ करते हैं।

विद्यालय बड़ी सामाजिक संरचना का एक हिस्सा है, जिसकी विशेषता सामाजिक वर्ग, जाति, भाषा, लिंग और जातीयता में असमानताएँ हैं। क्या विद्यालय समाज में मौजूद असमान सामाजिक सम्बन्धों को भी प्रतिबिम्बित करते हैं? यह विद्यालय में कैसे होता है?

शिक्षा का अधिकार अधिनियम (Right to Education Act - RTE) 6 से 14 वर्ष तक के बीच के आयु वर्ग के प्रत्येक बच्चे के लिए शिक्षा का मौलिक अधिकार और कर्त्तव्य प्रदान करता है। विद्यालय में भेदभाव न होना और समानता शिक्षा के अधिकार के लिए मौलिक हैं। एच.आर. डब्ल्यू. (2014) की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि भेदभावपूर्ण व्यवहार जैसे कि मौखिक और शारीरिक शोषण, विद्यालय भोजन से अलगाव और इन्कार, कई उपेक्षित बच्चों को विद्यालय छोड़ने के लिए मजबूर कर रहे हैं। यह सरकारी आँकड़ों में दिखाए गए प्राथमिक विद्यालयों में लगभग 100 प्रतिशत नामांकन के विपरीत है। रिपोर्ट में यह लिखा गया है, कि "खतरे वाले समुदायों के बच्चों को प्रोत्साहित करने के बजाय, जो शिक्षक अक्सर उनकी उपेक्षा और उनके साथ बुरा व्यवहार करते हैं। उनके परिवारों से कक्षा में सबसे पहले कदम रखने वाले होते हैं.।"

यद्यपि, सभी शिक्षकों को, सभी के लिए अवसर की समानता के सिद्धान्त पर कार्य करना चाहिए, कई अध्ययनों से पता चलता है कि वास्तविकता में, बड़े समाज में, विद्यालयों में सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार नहीं होता है। विद्यालय में गरीबों और उपेक्षित/सीमांत विद्यार्थियों के खिलाफ शिक्षकों और अन्य विद्यालय कर्मचारियों में गहरे भेदभाव है। इस संदर्भ में, नंबिसन (2009) के अध्ययन से पता चलता है कि कैसे शिक्षक विद्यालय में कार्यों के विभाजन में स्पष्ट जाति आधारित भेदभाव के तरीकों में संलग्न हैं। साफ–सफाई का काम अधिकतर दलितों को दिया जाता है या अधिक संभावनाएँ हैं, सामान्य जातियों के बच्चों को शिक्षक पानी और भोजन देने का कार्य देते हैं।

संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (United Nations Children's Fund) के मुताबिक, 8 करोड़ भारतीय बच्चे प्राथमिक शिक्षा पूरी करने से पहले विद्यालय छोड़ देते हैं। कई लोग छोटी जाति या दलित समुदायों, मुसलमान, और स्वदेशी जनजातियों के लोग हैं, जिन्होंने गहरी जड़ों वाले पक्षपात के कारण लंबे समय से दुर्व्यवहार का सामना किया है।

PDF Compressor Free Version

.... उसी कक्षा में, एक मुशहर लड़के ने शोधकर्त्ताओं को बताया कि शिक्षक उन्हें कमरे के एक कोने में बिठागएा और जब वह गुस्से में थी, तब उन पर चाबियाँ फेंकी/फेंकता है।

"हमें केवल तभी भोजन मिलता है, अगर अन्य बच्चों को देने के बाद कुछ भी बचता है। शिक्षक ने मेरे सहपाठी को इतनी जोर से मारा, कि उसने उसका हाथ तोड़ दिया। इस घटना के बाद, धीरे–धीरे सभी मुशहर बच्चों ने विद्यालय जाना बंद कर दिया।"

अन्य बच्चों को अलग से बैठने के लिए मजबूत होने और शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों द्वारा अपमान, लज्जाजनक, टिप्पणी के अधीन होने के बारे में बताया गया।

कुछ विद्यालयों में, इस तरह से बच्चों को उनकी जाति या समुदाय की वजह से, कक्षा मॉनीटर जैसी नेतृत्व की भूमिकाओं के लिए कभी नहीं चुना जाता था, रिपोर्ट में कहा गया। इसमें और कहा गया कि कई बच्चों से शौचालयों को साफ करने जैसे अप्रिय काम करने की अपेक्षा की जाती है।

यह बच्चों को निरूत्साहित करता है और कम आत्म सम्मान, संभवतः कामचोरी, और जल्दी रोज़गार और विवाह की तरफ ले जाती है।

***स्रोतः** https://in.reuters.com/article/india-school-children-dropout/bigoted-teachers-lead-marginalised-indian-school-kids-to-drop-outhrw-id*

समाज में मौजूद असमान सामाजिक सम्बन्ध, कई तरह से विद्यालय में पुनरुत्पादित और मजबूत होते हैं, जिसमें पाठ्यचर्या, शिक्षाशास्त्र, शिक्षक के दृष्टिकोण और व्यवहार, सहकर्मी संपर्क और दिन–प्रतिदिन की विद्यालयों की रस्में और प्रथाएँ सम्मिलित हैं, जो समय–समय पर संस्थागत होती हैं।

4.5.1.4 कक्षा में बैठने की व्यवस्था

विद्यार्थियों से कक्षा में स्वतंत्र रूप से बैठने की अपेक्षा की जाती है, लेकिन यह देखा गया है/ अथवा लगता है कि व्यवहार में, बच्चों को शिक्षक की वरीयताओं द्वारा निर्देशित किया जाता है।

"बुद्धिमान" बच्चे सामने बैठते हैं और जिन्हें 'कमजोर' माना जाता है कि वे पीछे बैठते हैं। कई मामलों में, लड़के और लड़कियों को शिक्षक का अच्छा व्यवहार और बुद्धिमान बच्चों वाली धारणा पर अलग–अलग जगह दी जाती है, जो लिंग विभेद के माध्यम से मौजूदा सांस्कृतिक मानदंडों को बढ़ाता/मजबूत करता है।

सामने वाले बेंच पर बैठे बच्चों से आशा की जाती है कि वे रट्टा लगाकर पाठ सीखें और शिक्षक द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें, और बाकी, तिरस्कार के डर से शिक्षक के अवलोकन से दूर रहना पसंद करते हैं।

बच्चे, जो पुस्तक की जानकारी को पुनः उत्पन्न करते हैं, शिक्षक के प्रिय बन जाते हैं क्योंकि वे अच्छे व्यवहार को प्रदर्शित करते हैं और नियमों और निर्देशों का पालन करने के लिए अधिक तैयार रहते हैं। संदेश जो शिक्षक द्वारा दिया जाता है, वह यह है कि जो बच्चे बुद्धिमान और पढ़ने में सक्षम हैं, वे अनुशासित होते हैं, जबकि अन्य में न केवल अध्ययन करने की क्षमता और रूचि का अभाव है और वे "अवज्ञाकारी" भी परिणाम स्वरूप, शिक्षक, ऐसे बच्चों को संपर्क और सीखने के सार्थक अवसरों से वंचित करते हैं, जिससे

PDF Compressor Free Version

उनमें आत्मविश्वास और आत्म सम्मान की कमी हो जाती है। शोध बताता है कि शिक्षक द्वारा जो बच्चे ज़्यादातर कमज़ोर माने जाते हैं, समाज में हाशिए/उपेक्षित समूहों (दलित, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक शहरी गरीब और लड़कियाँ) से सम्बन्धित होते हैं और खराब विद्यालयों या ग़ैर–साक्षर पृष्ठभूमि से आते हैं, शिक्षक का भेदभावपूर्ण व्यवहार उन्हें कक्षा के हाशिये पर धकेता है जहाँ उन्हें कोई शैक्षणिक प्रोत्साहन नहीं मिलता है।

4.5.1.5 पाठ्यपुस्तकें और उपेक्षितों का प्रतिनिधित्व

इससे पहले हमने चर्चा की है कि कैसे अदृश्य पाठ्यचर्या के घटक विद्यार्थियों के शिक्षण को स्पष्ट रूप से और परस्पर रूप से प्रभावित करते हैं। यहाँ यह जाँच करना महत्वपूर्ण है कि औपचारिक पाठ्यचर्या या "पाठ्यपुस्तक" पर्याप्त रूप से कहानियाँ, जीवन और संघर्ष, और हाशिये वाले समूहों के नायकों का प्रतिनिधित्व करते हैं? जयपुर, राजस्थान में किए गए एक खोजपूर्ण अध्ययन में, दलित बच्चों ने यह महसूस किया कि अनुसूचित जातियों या उनके नेताओं के जीवन के प्रति कक्षा का ध्यान आकर्षित करना, शिक्षक के लिए दुर्लभ था (नीमबीसन, 2009, पृ.10)।

"पाठ्यपुस्तकें, महिलाओं की उपस्थिति की कमी और पुरुषों पर आधारित पाठों की तरफ अधिकतर ध्यान केन्द्रित करती है। भारतीय संदर्भ में अध्ययन (करलेकर, 1986, 2003, पृ. 63, मोग, 2002, पृ.1640) बताते हैं कि भाषा पाठ्यपुस्तकों में कहानियाँ ज़्यादातर पुरुष केन्द्रित थी और लगभग 50 प्रतिशत कहानियों में पुरुष एकमात्र अभिनेता थे। यह भी पाया गया था कि महिलाओं की रूढ़िवादी भूमिका में चित्रित किया गया है क्योंकि पत्नियाँ और माताओं को घर में कामों तक सीमित रखा गया है। अधिकांश शोध से पता चलता है कि विद्यालयों में पाठ्यपुस्तकें और अदृश्य पाठ्यचर्या, लिंग के आधार पर लड़कियों और लड़कों की विषय पसंद को हतोत्साहित करने की बजाय मजबूत बनाते हैं (नीमबीसन 3, पृ.336, सेमीनार, 2004); आदमी तकनीकी कौशलों के साथ काम में लगे "कर्ता" के रूप में आते हैं, महिलाओं को निष्क्रिय भूमिकाओं में दिखाया गया है।

पश्चिमी विद्वानों के अनुसंधान, लड़कों के प्रति शिक्षक के पक्षपात का अदृश्य पाठ्यचर्या, लड़कियों के प्रति उनका नकारात्मक रवैया, दर्शाते हैं, विज्ञान प्रयोगशालाओं में "पुरुषवादी" वातावरण, लड़कियों का विज्ञान और गणित में विश्वास खोने के लिए आंशिक रूप से जिम्मेदार हैं (उपरोक्त, पृ. 537)।

पूर्वगामी चर्चा पाठ्यपुस्तकों, शिक्षक के दृष्टिकोण और पूर्वाग्रहों और समाज में मौजूद असमान सामाजिक और लिंग सम्बन्धों को पुनः प्रस्तुत करने और उन्हें मजबूत करने में शिक्षकों के रवैये के माध्यम से दिखाई देने वाले अदृश्य पाठ्यचर्या की भूमिका पर प्रकाश डालती हैं। सार्वजनिक संस्थागत स्थानों के रूप में विद्यालय समानता और भेदभाव न होने की पेशकश करते हैं, लेकिन व्यावहारिक रूप में, जैसा कि बड़े समाज में, विद्यालय सामाजिक स्तर, धर्म, भाषा, और लिंग के आधार पर विद्यार्थियों को भिन्न मानता है। विद्यार्थी असमानता की बड़ी व्यवस्था को सुदृढ़ करते हैं और यथा स्थिति जारी है।

पाठ्यपुस्तकों में लिंग भूमिकाओं की रूपरेखा: "सक्रिय" में पुरुष और "निष्क्रिय" भूमिका में महिला

PDF Compressor Free Version

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी: (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।
(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

5. अदृश्य पाठ्यचर्या क्या है और यह विद्यार्थी अधिगम को कैसे प्रभावित करता है?

....

....

....

6. शिक्षक पूर्वाग्रहों द्वारा संचरित अदृश्य पाठ्यचर्या से प्रभावित उपेक्षित वर्ग पर प्रभाव कैसे पड़ता है? व्याख्या कीजिए।

....

....

....

7. अदृश्य पाठ्यचर्या के संदर्भ में कक्षा में "सहकारी शिक्षा" रणनीतियों का उपयोग करने के क्या लाभ हैं?

....

....

....

4.6 पाठ्यचर्या और विचारधारा पर चर्चा की समीक्षा: शिक्षा की सार्थक स्वायत्तता?

पिछली चर्चाओं में, हमने विचारधारा और पाठ्यचर्या के बीच सम्बन्ध देखा है। प्रमुख समूह के आदर्श मूल्य और उनके समाज के प्रति नजरिया, सामग्री के चयन, उसके संपादन और मूल्यांकन के माध्यम से पाठ्यचर्या में प्रतिबिम्ब पाते हैं। इस तरह, हमने चर्चा की है; पाठ्यचर्या मूल्य तटस्थ नहीं है, यह प्रमुख समूहों के विचारों और हितों को वैध बनाता है। लेकिन क्या इसका अर्थ यह है कि शैक्षिक और पाठ्यचर्या दर्शनशास्त्रों की, क्या पढ़ाना है इसका निर्णय लेने में कोई भूमिका नहीं है?

4.6.1 एक "स्थानीय संस्था" के रूप में विद्यालय

विद्यालय एक जटिल संस्था है जिसके विद्यार्थियों, माता–पिता, समुदाय और नियोक्ता जैसे विभिन्न हितधारकों की आशाओं को पूरा करने के लिए "स्थानीय" चरित्र और कार्य है। हालाँकि, पाठ्यचर्या को प्रमुख विचारधारा के उत्पाद के रूप में देखा जा सकता है, लेकिन कभी–कभी कक्षा के अभ्यास/व्यवहार, स्थानीय कारकों की प्रतिक्रिया के रूप में विशेष शिक्षण और सीखने के अभ्यासों का समर्थन कर सकते हैं। बढ़ते ज्ञान के परिणामस्वरूप, ये सम्बन्ध समय–समय पर बदल रहे हैं – उदाहरण के लिए, शिक्षकों के आकलन अभ्यासों के महत्व की जागरूकता को बढ़ाना (ब्लैक एवं विलियम, 1998)।

4.6.2 राजनीतिक व्यक्तियों और नौकरशाही की भूमिका

पाठ्यचर्या तैयार करने में प्रतिभागियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। पाठ्यचर्या पर अधिकार, अधिकांश मामलों में, केन्द्रीय या राज्य सरकारों तक सीमित है। पाठ्यचर्या और

PDF Compressor Free Version

संशोधन के बारे में नीतियों को तैयार करने के बारे में निर्णय लेने में राजनीतिक और नौकरशाही कर्मियों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। एक शक्तिशाली नौकरशाह या राजनेता की राय या व्यक्तिगत वरीयताएँ, एक प्रस्तावित पाठ्यचर्या में क्या जोड़ना या निकालना है, को प्रभावित कर सकता है।

4.6.3 हितधारकों की भूमिका

विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्रशासक, राजनेता और विषय विशेषज्ञ पाठ्यचर्या के गठन और संशोधन प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इनकी अपनी प्राथमिकताएँ और राय हैं।

4.7 सारांश

इस इकाई में, हमने चर्चा की है कि विचारधारा एक परिप्रेक्ष्य या विश्व की दृष्टि से समाज की प्रकृति को दर्शाती है, एक विशिष्ट सामाजिक समूह, इसकी राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और सम्बन्धों का संजाल बनाने का प्रयास करता है। एक गतिशील समाज में कई विचारधाराएँ, भिन्नता और विरोधाभास हैं, जिसका परिणाम है, समाज में वैचारिक संघर्ष। सभी विचारधाराओं की वर्चस्व और नेतृत्व स्थापित करने के लिए समान शक्ति नहीं है, यह उन प्रमुख वर्गों की विचारधारा है, जो नागरिक समाज, शैक्षिक संस्थानों और जनसंचार माध्यमों आदि के द्वारा नेतृत्व करने में सफल रहे हैं। यह वैचारिक युद्ध शिक्षा के क्षेत्र में भी खेला जाता है, जहाँ "योग्य शिक्षा क्या है", किसका ज्ञान सबसे योग्य है", जैसे प्रश्न आधार बनते हैं जिसपर पाठ्यचर्या बनता है। इसलिए पाठ्यचर्या तटस्थ या मूल्य रहित नहीं है क्योंकि पाठ्यचर्या की विचारधारा यह दर्शाती है कि विद्यालय का पाठ्यचर्या क्या होना चाहिए – विद्यालयी शिक्षा के उद्देश्य और उद्देश्यों/प्रयोजनों को कैसे प्राप्त किया जा सकता है। विद्यालय पाठ्यचर्या, विशेष रूप से अदृश्य पाठ्यचर्या, वैचारिक संदेशों का एक प्रमुख वाहक है और हाशिये के मामले में विद्यार्थी के शिक्षण पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

और बड़े तौर पर, विद्यालय यथास्थिति को सुदृढ़ करते हैं और सामाजिक तथा लैंगिक असमानताओं को पुनः उत्पन्न करते हैं। केवल एक शिक्षाशास्त्र कि विद्यार्थियों को समीक्षा की शक्ति देता है और दिए गए और निश्चित ज्ञान पर प्रश्न उठाता है जिससे वह शिक्षा के हस्तांतरण प्रतिमान पर सवाल उठा सकें और शिक्षा के उद्देश्यों और प्रयोजनों को चुनौती दे सकें।

4.8 इकाई के अंत में अभ्यास

1. विचारधारात्मक वर्चस्व के विकास में विद्यालयों द्वारा निभाई गई भूमिका का विश्लेषण कीजिए।
2. किसी भी पाठ की पुस्तक की जाँच करें और बताएँ कि कैसे पाठ्यपुस्तकों को विद्यार्थियों को अदृश्य संदेश मिलते हैं।

4.9 बोध प्रश्न के उत्तर

1) विचारधारा को इतिहास में विशेष अवसर के एक विशिष्ट समूह के एक व्यक्ति के दृष्टिकोण के रूप में देखा जाता है।

2) विचारधारा की स्वतंत्रता प्रथा को दर्शाती है जो प्रमुख संस्कृति को बनाए रखती है। इसकी प्रमुख स्थिति यहां, प्रमुख संस्कृति के विचारों को संदर्भित किया जाता है।

PDF Compressor Free Version

3) पाठ्यचर्या में उन सभी को शामिल किया गया है जिन्हें स्कूलों में पढ़ा जाना माना जाता है यानी सामग्री, विधियों शिक्षण और मूल्यांकन।

4) (ग)

5) यह एक अनौपचारिक पाठ्यचर्या है और औपचारिक पाठ्यचर्या में इसका परिलक्षित नहीं होता है।

6) खंड 4.5.1.5 को देखें।

7) सहकारी शिक्षा रणनीतियाँ सहकारी मूल्यों को बढ़ावा देने में मदद करेंगी, और इस तरह व्यक्तिवाद और प्रतिस्पर्धा को अदृश्य पाठ्यचर्या प्रतिस्पर्धा को कम कर देता है।

4.10 संदर्भ पुस्तकें एवं सुझाई गई अध्ययन सामग्री

डिवी, जॉन (1916). *डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन,* न्यूयॉर्क : मैकमिलन।

दुर्खीम, एमिल (1956). *एजुकेशन एंड सोशयोलॉजी,* न्यूयॉर्क : दि फ्री प्रेस।

फ्रेमरे, पाउलो (1993). एजुकेशन फॉर क्रिटिकल कंसीक्यूसिस, न्यूयॉर्कः कंटीन्यून।

फ्रेमरे, पाउलो (1994). *पेडेगॉगी ऑफ द ओपर्रेसेड,* न्यूयॉर्कः ट्रांस मायरा बर्गमैन रावोस रेव. एडी.

कैर, विलफ्रेड (1998), "दि कैरीकुलम इन एंड फॉर ए डेमोक्रेटिक सोसाइटी", *जर्नल ऑफ कैरीकुलम स्टडीज,* वॉल्यूम 6, (3) पृ. 323–340

दीप्ति भोग, (2002) "जेन्डर एंड कैरीकुलम", *इकानॉमिक एंड पालिटिक्ल वीकली,* 37 (17), पृ. 1638–1642

फियाला, आर. (2007). "एजुकेशनल आइडोलॉजी एंड स्कूल कैरीकुलम" इन बेनावोट ए. ब्रास्लावस्की सी., इरुंग एन. (संपा.) *स्कूल नालेज इन कम्परेटिव एंड हिस्ट्रिकल पर्सपेक्टिव, सीईआरसी स्टडीज इन कम्परेटिव एजुकेशन,* खंड 18. स्प्रिंगर

नंबिसन जी.बी. (2004). "इंटीग्रेटिंग जेण्डर कर्न्सस", *सेमिनार* 536

जाट्स, एवं एम. यंग (2010). संपादकीयः *ग्लोबलाइजेशन नॉलेज एंड दि कैरीकुलम, यूरोपीय जर्नल ऑफ एजुकेशन,* 45 (1): 4–10

कर्लेकर, एम. (संपा.) (2000). *रीडिंग दि वर्ल्डः अंडरस्टेंडिंग लेटरसी कैम्पेस इन इंडिया,* सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

कुमार, के. (1991), *पालिटिक्ल एजेण्डा ऑफ एजुकेशन, ए स्टडी ऑफ कोलियलिस्ट एंड नेशनलिस्ट आइडियाज,* नई दिल्लीः सेज पब्लिकेशन्स,

माइकल एल. डी. (1996) आइडियोलॉजी, इपिस्टमॉलॉजी, पेडागॉगी एंड दि नेशनल कैरीकुलम फॉर साईन्स, दि इंफेलश ऑन प्राइमरी साईन्स, *कैरीकुलम स्टडीज,* 4:1, 119–139।

नांबिसन, जी. बी. एवं बत्रा पी. (1989), इक्विटी एंड एक्सीलेंसः इश्यूज इन एजुकेशन, *सोशल साइंटिस्ट* 17 (9/10) 56–73

रीड, इ. (1978). *सोशयोलॉजी पर्सपेक्टिक्स ऑन स्कूल एंड एजुकेशन,* लंदनः ओपन बुक्स।

वजीर, आर., संपा. (2000). दि जेन्डर गेप इन बेसिक एजुकेशन, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

व्हाइट, पी. (1983) *बिआउण्ड डोमिनेशन ऑन एस्से इन पॉलिटिक्ल फिलोसिफी ऑफ एजुकेशन,* लंदन, रूटलेज और केगन पॉल।